

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1992

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1992

Contents

28 February 1991 Vol. 4 No. 1

31 March 1991 Vol. 4 No. 2

31 May 1991 Vol. 4 No. 3

30 June 1991 Vol. 4 No. 4

31 August 1991 Vol. 4 No. 5

30 September 1991 Vol. 4 No. 6

30 November 1991 Vol. 4 No. 7

31 December 1991 Vol. 4 No. 8

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-IV अंक - I मूल्य 1.95 रुपए 28 फरवरी, 1991 9 फाल्गुन, शक 1912



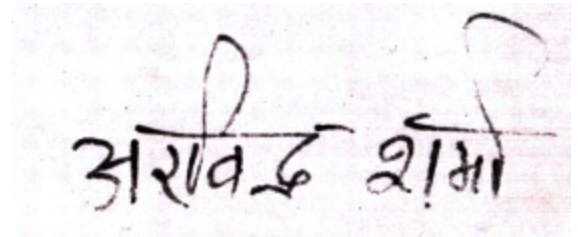
भणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियों का नेतृत्व करने वाले कमांडर (क्रमशः बाएं से दाएं) पी एस थापा, रविदीप साही एवं अपराजिता रामथ्यानी।

सम्पादकीय

हमें गर्व है कि हम एक ऐसे देश के नागरिक हैं जिस की आवाज विश्व के मंचों पर एक सम्प्रभु सत्ता सम्पन्न राष्ट्र के रूप में सुनी जाती है। मगर हमें यह बात कदापि नहीं भूलनी चाहिए कि इस सम्प्रभुता की कीमत सतत सजगता है। इस के लिए समझौते की कोई गुंजाइश नहीं है। हमारी एकता, अखंडता एवं सम्प्रभुता की अडिग चौखटों पर इधर पिछले कुछ वर्षों से आतंकवाद, देशद्रोह एवं साम्प्रदायिकता की दीमकें डंक मारने लगी हैं। हमें अपने राष्ट्र की चौखट पर देश प्रेम, कर्तव्यपरायणता, सजगता, ईमानदारी और सेवा भक्ति का ऐसा लेप चढ़ाना है कि इस चौखट से टकराते ही इन दीमकों के डंक टूट जाएं। हमें गर्व है कि देश को आंतरिक संकटों से बचाने का काफी कुछ जिम्मा हम पर है।

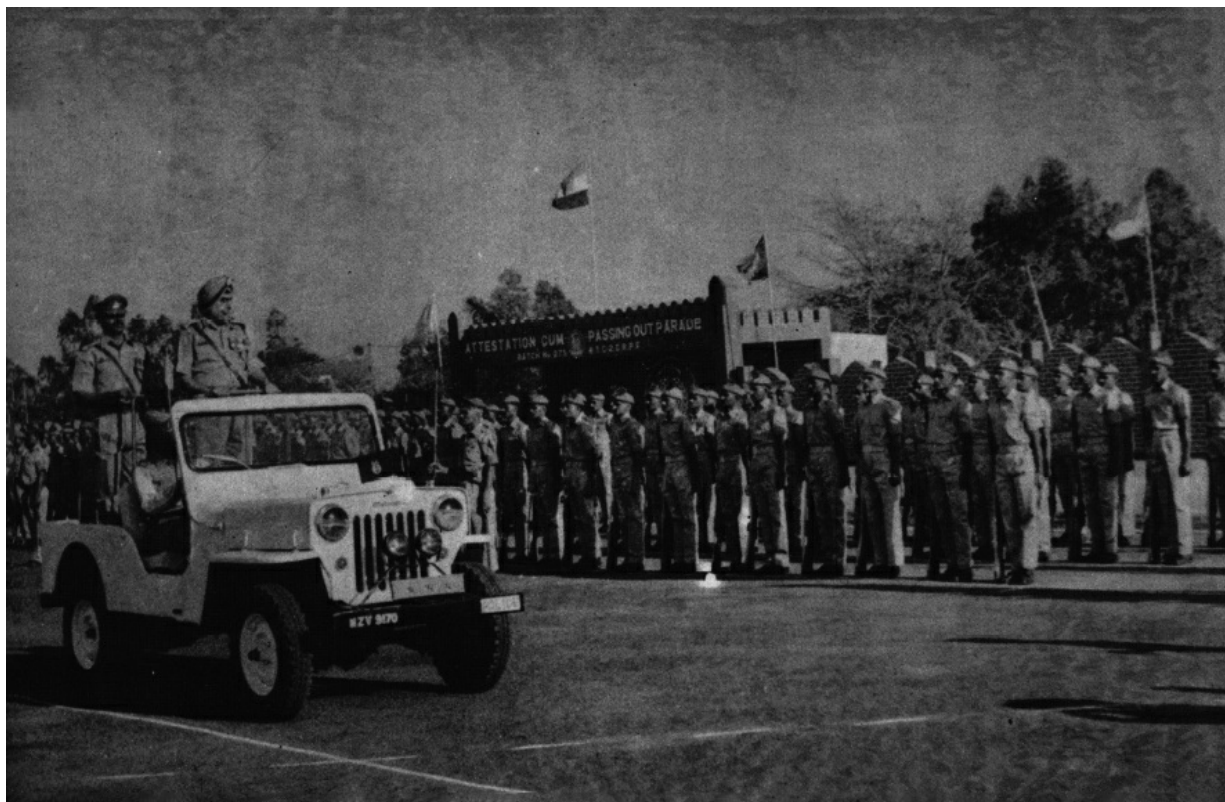
महाभारत का एक सूत्र है - पूरा जीवन धुंआ धुंआ जलने की अपेक्षा एक ही बार धधक कर जल जाना कहीं बेहतर है। यह सूत्र सम्राट संजय की कथा से संबंधित है। सम्राट संजय जब युद्ध भूमि से पराजित हो कर लौटा, तो उस की मां विदुला ने यह चुभता हुआ वाक्य उससे कहा। इन शब्दों से उद्वेलित हो कर संजय फिर युद्ध भूमि में लौट गया और अब की बार भारी विजय के साथ वापस लौटा। विजयी सम्राट का माता द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

यह संदेश देश की सुरक्षा में लगे जवानों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारी कामना है कि यह संदेश के० रि० पु० बल के जवानों के जीवन में संवेदनशील तथा वीरतापूर्ण भावनाओं का संचार करे। हम अपने कार्य को एक महान लक्ष्य की तरह ले कर उस पर आगे कदम बढ़ाएं। बल आगे ही आगे बढ़े, उस का कोई भी कदम कभी भी पीछे न लौटे। उस की गौरवशाली परंपराएं और फलें फूलें। देश एक ऐसे कल की तरफ बढ़े जहां केवल विकास और समृद्धि ही हो, कोई खून खराबा, कत्लेआम, दंगाफसाद न हो। ऐसे कल के निर्माण में देश बल से चाहे कोई कीमत मांगे, हम शांति दूत इस कीमत को चुकाने में एक पल को भी न चूकें।



(ए० एन० शर्मा)

312 जवान बल के परिवार में शामिल



परेड का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक श्री के पी एस गिल

15 फरवरी, 1991 को रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-II आवड़ी, मद्रास में रंगरूटों के 275 वें बैच के 312 रंगरूटों की पासिंग आउट परेड सम्पन्न हुई। बल के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल ने इस अवसर पर अपना प्रशिक्षण समाप्त कर दीक्षांत एवं सत्यापन परेड में शामिल हुए रंगरूटों से सलामी ली। इस मौके पर दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी. आर. कार्तिकेयन सहित बल तथा सेना के कई वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

महानिदेशक महोदय ने इस मौके पर आल राउंड बेस्ट ट्रेनी, बेस्ट इनडोर ट्रेनी तथा बेस्ट आउटडोर ट्रेनी को भी पदक प्रदान किए।

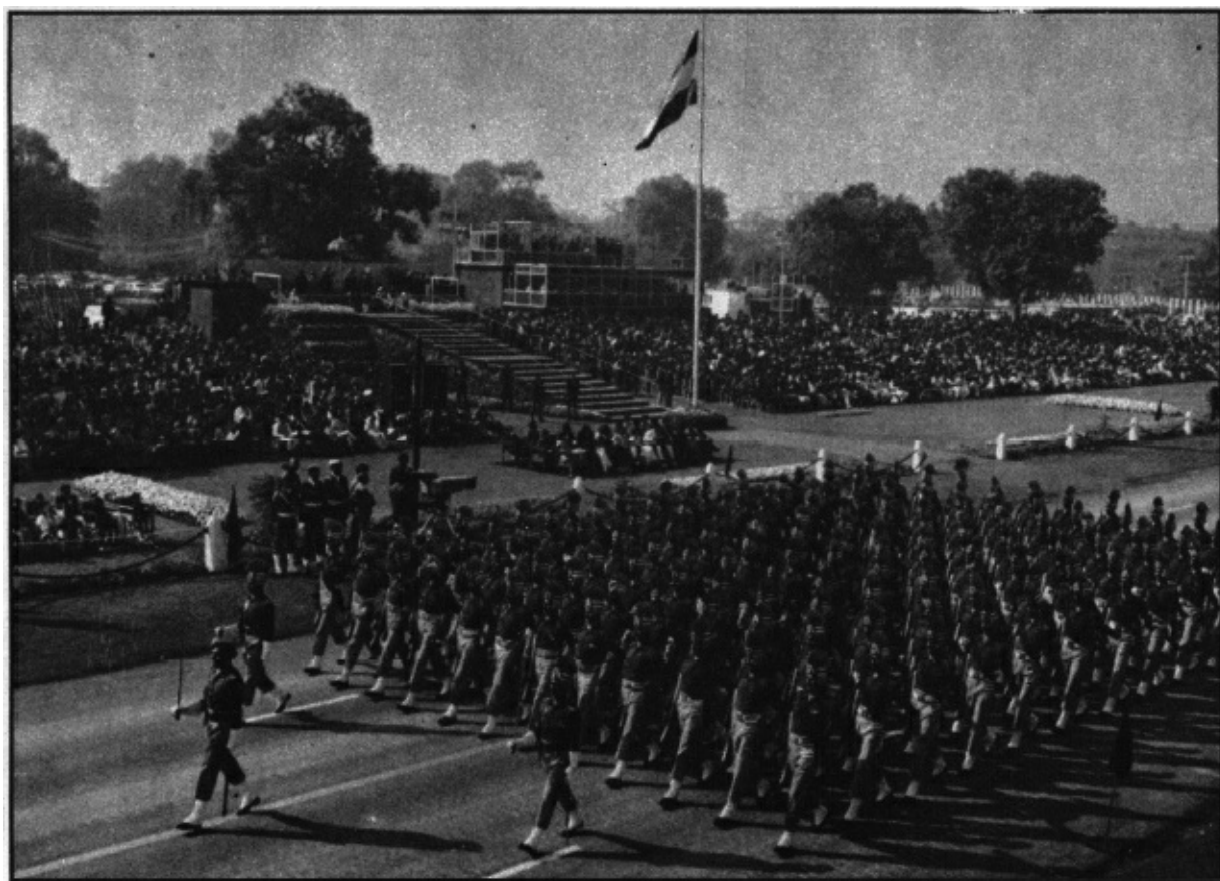
महानिदेशक महोदय ने इस अवसर पर 18 बटालियन के स्वर्गीय कांस्टेबल सोम सुंदरम तथा 5 वीं बटालियन के कांस्टेबल स्वर्गीय गोविंदा स्वामी की विधवाओं को अनुदान के चेक भी भेंट किए। कांस्टेबल सोमसुंदरम पंजाब में तथा गोविंदास्वामी जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों का सामना करते हुए मारे गए थे। कांस्टेबल सोम सुंदरम की विधवा को एक लाख तथा गोविंदास्वामी की विधवा को 1.25 लाख की राशि संबधित राज्यों द्वारा अनुदानस्वरूप दी गई है।

महानिदेशक महोदय ने आवड़ी में एक आई. टी. आई. का भी उद्घाटन किया।

इस मौके पर पत्रकारों को जानकारी देते हुए बल के दक्षिण क्षेत्र के महानिदेशक श्री डी. आर. कार्तिकेयन ने बताया कि बल ऊटी तथा कोयम्बटूर में सी. आर. पी. एफ. का एक बड़ा संस्थान स्थापित करने के लिए 500 एकड़ भूमि अधिग्रहित कर रहा है।

गणतंत्र दिवस परेड

राजपथ पर बल की शान



राजपथ पर बल की पुरुष टुकड़ी

भारी व्यस्तताओं के बावजूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तीन टुकड़ियों ने इस बार की गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया। इस में एक एक टुकड़ी महिला व पुरुष कर्मियों की तथा एक टुकड़ी बैंड की थी। परेड में सब से आगे महिला टुकड़ी थी, जिसका नेतृत्व 88 बटालियन की उपाधीक्षिका श्रीमती अपराजिता रामध्यानी कर रही थीं। इस टुकड़ी में कुल 144 महिला अधीनस्थ अधिकारी, अवर अधिकारी तथा कांस्टेबल शामिल थीं। इस टुकड़ी के पीछे 105 सदस्यों वाला बैंड था, जिस का नेतृत्व इंस्पेक्टर पी. एस. थापा कर रहे थे। श्री थापा गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाले

सब से पुराने बैड कमांडरों में से एक है।

बैड के पीछे बल की पुरुष टुकड़ी थी। इस टुकड़ी का आकार भी महिला टुकड़ी के ही समान था। इस का नेतृत्व उपाधीक्षक रवि दीप साही कर रहे थे। इस टुकड़ी के सभी जवानों का औसत कद 6 फुट था।

अंगोला कमीजों तथा खाकी पैंटों में सज्जित महिला तथा पुरुष टुकड़ी के सभी जवानों के हाथ में सेल्फ लोडिंग राइफलें थीं। जब कि इन टुकड़ियों के कमांडरों के हाथ में चमचमाती हुई तलवारें थीं। इन जवानों की गहरे नीले रंग की पगड़ियों पर आसमानी रंग का तुरा लहरा रहा था, जिस पर सुनहरी रंग की झालर चमक रही थी। महिला टुकड़ी की जवान आसमानी रंग की बेरेट टोपी पहनें थी, जिस पर नीले रंग की कलगी लगी थी। महिला और पुरुष दोनों ही टुकड़ियों के जवानों के गले में नीला स्कार्फ था, जिस पर के० रि० पु० बल का मोनोग्राम बना हुआ था।

परेड के दौरान के० रि० पु० बल का बैड सलामी मंच के आगे से “केन्द्रीय सुरक्षा आरक्षी बल” की धुन बजाता हुआ गुजरा। राजपथ के दोनों ओर खड़े हुए अपार जन समूह ने भारी हर्ष ध्वनि के साथ के० रि० पु० बल की टुकड़ियों का स्वागत किया।

इस से पूर्व 20 जनवरी को नई दिल्ली कालकाजी स्थित 25 बटा० स्थल पर बल की टुकड़ियों का परिचय पत्रकारों से कराया गया। पत्रकारों ने इन टुकड़ियों में शामिल जवानों के प्रदर्शन को गहरी रुचि के साथ देखा तथा उन से बात की। देश के लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने इन टुकड़ियों के परिचय से संबंधित लेख प्रकाशित किए।

दंगों पर नियंत्रण के लिए

बल को शीलड



रामपुर के जिलाधिकारी से शील्ड ग्रहण करते तीसरी सिगनल बटालियन के कमांडेंट श्री आहलूवालिया

उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले में हुए साम्प्रदायिक दंगों के दौरान जिले में कानून व व्यवस्था बनाए रखने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा किए गए कार्यों की सराहनास्वरूप उसे स्थानीय प्रशासन ने एक शील्ड प्रदान की है। 7 जनवरी, 1991 को रामपुर के जिलाधिकारी ने तीसरी सिगनल बटालियन के कमांडेन्ट एस. एस. आहलूवालिया को यह शील्ड प्रदान की। सी. आर. पी. एफ. प्रांगण में आयोजित सादे समारोह में जिलाधिकारी बलविंदर कुमार ने कहा कि सी. आर. पी. एफ. की भूमिका कानून व्यवस्था को बनाए रखने में बेहतर मददगार साबित हुई है।

उन्होंने कहा कि जब भी दंगा प्रभावित क्षेत्रों में सी. आर. पी. एफ. की तैनाती की गई भयभीत लोगों के दिलों में बैठी दहशत निकल गई।

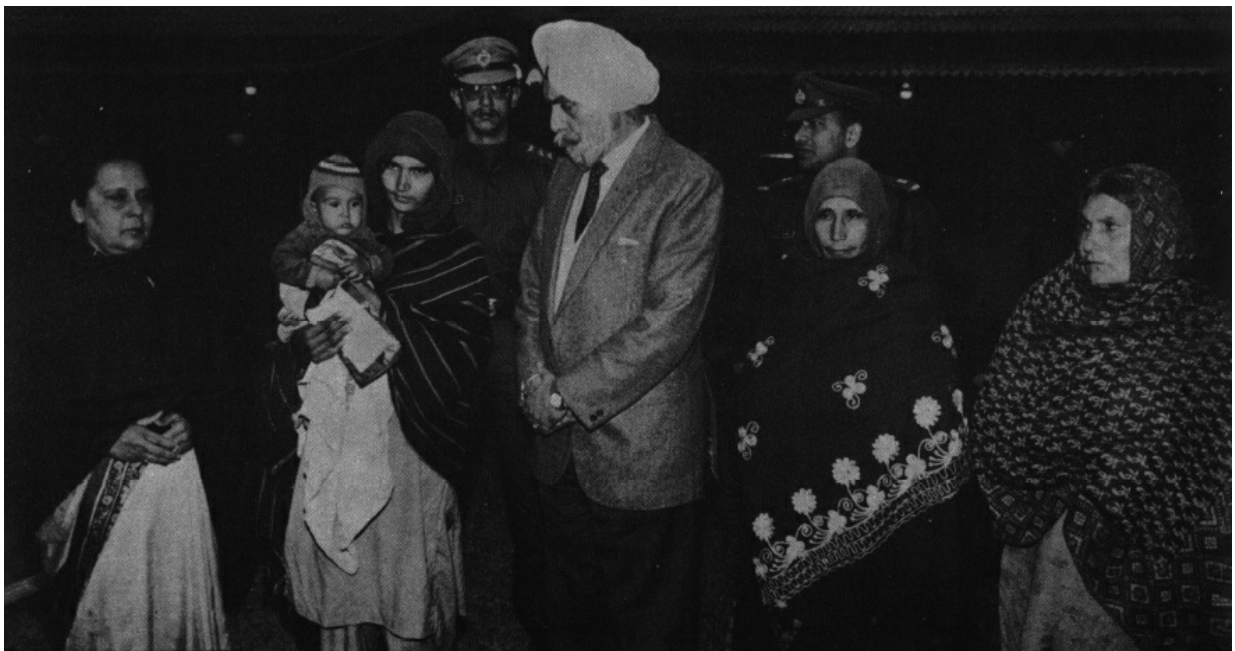
इस अवसर पर श्री आहलूवालिया ने प्रशासन द्वारा सम्मानस्वरूप शील्ड दिए जाने पर धन्यवाद देते हुए कहा कि इस से बल के कार्मिकों का मनोबल बढ़ा है। उन्होंने स्थानीय प्रशासन को विश्वास दिलाया कि सी. आर. पी. एफ. कानून व्यवस्था को कायम रखने में प्रशासन को हर संभव सहयोग देगा।

पुष्प प्रदर्शनी

भुवनेश्वर में स्थानीय प्लांट लवर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित वार्षिक पुष्प

प्रदर्शनों में ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर ने भी भाग लिया। 25 दिसंबर को आयोजित इस प्रदर्शनी में राजभवन, केन्द्रीय सचिवालय, उच्च न्यायालय, विद्युत बोर्ड, नेशनल अल्युमिनियम कम्पनी सहित अन्य कई निजी एवं सरकारी संस्थाओं की तरफ से अपनी-अपनी प्रविष्टियां भेजी गईं। इस मौके पर उड़ीसा के कृषि मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्रविष्टियों को इस प्रदर्शनी में 10 पुरस्कार प्रदान किये गए।

आश्रिताओं को अनुदान



जवानों की आश्रिताओं के साथ महानिदेशक श्री के पी एस गिल एवं श्रीमति गिल

नई दिल्ली, रविंद्र शाला स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 40 वीं बटालियन स्थल पर आयोजित एक सादे एवं भावभीने समारोह के बीच के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल ने 7 जनवरी, 1991 को पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में आत-कवादियों का सामना करते हुए मारे गए बल के दो कार्मिकों की विधवाओं को एक एक लाख रुपए तथा एक को सवा लाख रुपए के चेक भेंट किए।

ये चेक 71 बटालियन के उप निरीक्षक अमरीक सिंह की विधवा श्रीमति सावित्री देवी, 71 बटालियन के लांस नायक जिले सिंह की विधवा श्रीमति धनपति देवी एवं 24 बटालियन के कांस्टेबल रणजीत सिंह की विधवा ने ग्रहण किए।

ये राशि पंजाब तथा जम्मू कश्मीर की सरकारों द्वारा कर्तव्य पर मारे गए इन कार्मिकों के आश्रितों को अनुदान स्वरूप दी गई हैं।

इस मौके पर बोलते हुए श्री गिल ने इन शहीद कामेकों के प्राते श्रद्धांजाले व्यक्त करते हुए कहा कि इन जवानों के इस बलिदान को बल के कार्मिक सदा गौरव एवं सम्मान के साथ याद करेंगे। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि बल के जवान देश की एकता और अखंडता को उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि बल के जवान देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए कोई भी कदम उठाने से हिचकेंगे नहीं।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह जनवरी, 1991 में मृत्यु के 28 मामलों में कुल 9,80,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इस में केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के 10 मामलों में कुल 1,50,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

टीम का सम्मान



टीम के सदस्यों के बीच महानिदेशक

24 से 30 नवंबर 1990 तक पूना में हुई आखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट 1990 में शामिल केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी ने ओवर आल चैंपियनशिप जीत ली। के० रि० पु० बल की इस टुकड़ी को 23 जनवरी, 1991 को एक सादे लेकिन आकर्षक समारोह के बीच बल के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल ने सम्मानित किया। इस समारोह में बल के वरिष्ठ अधिकारियों सहित इस प्रतियोगिता में शामिल हुई बल की टीम के सदस्य भी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट को आयोजन प्रति वर्ष देश भर के राज्य एवं केंद्रीय पुलिस संगठनों के बीच व्यावसायिक प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। इस प्रतियोगिता में नौ प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस प्रतियोगिताओं में निशानेबाजी, अपराध की खोज के वैज्ञानिक तरीके, पुलिस फोटोग्राफी, तथा पुलिस डॉग स्क़ायड आदि प्रतियोगिताएं शामिल हैं।

के० रि० पु० बल की टीम ने केवल निशानेबाजी, प्राथमिक उपचार, मोटर परिवहन, वायरलेस एवं क्रिपटोग्राफी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस के बावजूद बल की टीम ने इस ड्यूटी मीट में 6 स्वर्ण, 6 रजत एवं 4 कांस्य पदक प्राप्त किये। इस के साथ ही बल की टीम ने पहली बार अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट की ओवरआल चैंपियनशिप भी प्राप्त की।

के० रि० पु० बल की 73 बटालियन के सब इंस्पेक्टर तारू राम ने निशानेबाजी में दो स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक प्राप्त किया। वह प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज घोषित किए गए। उन्हें गृह मंत्री के “बेस्ट शाट मेडल” से भी सम्मानित किया गया।

बल की टीम ने इस प्रतियोगिता में 15 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी श्री टी० एस० ढिल्लन के नेतृत्व में भाग लिया। श्री ढिल्लन स्वयं में दिल्ली में नवें एशियाई खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। 1986 में वह पश्चिम जर्मनी में आयोजित इंटरनेशनल इनविटेशन मीट में भी शामिल हुए, जहां उन्होंने सेंटर फायर पिस्टल एवं स्टैंडर्ड पिस्टल निशानेबाजी में क्रमशः स्वर्ण एवं कांस्य पदक प्राप्त किया। 1987 में वे अमरीका कोलोरेडो स्प्रिंग स्थित ओलंपिक ट्रेनिंग सेंटर में एक प्रशिक्षक के लिए एडवांस स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग में भी शामिल हुए। इस मौके पर बोलते हुए श्री गिल ने कहा कि बल की टीम द्वारा इस प्रतियोगिता में दिखाए गए प्रदर्शन पर उन्हें गर्व है। मगर उन्होंने टीम के सदस्यों का आह्वान भी किया कि वे अपनी इस सफलता को विश्राम न माने अपितु और अधिक अच्छे परिणामों के लिए अपनी व्यावसायिक प्रतिभा को और भी निखारें।

हिंदी में कार्य के लिए शील्ड



श्री महेन्द्र प्रसाद शील्ड प्राप्त करते हुए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पल्लिपुरमग्रुप केंद्र को अपने क्षेत्र के अन्य 88 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की अपेक्षा हिंदी में अधिक काम करने वाला कार्यालय पाया गया। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के क्षेत्र में इस उपलब्धि के लिए ग्रुप केन्द्र के अपर उप-महानिदेशक श्री महेन्द्र प्रसाद को यह शील्ड तथा योग्यता प्रमाण पत्र, केरल परिमंडल के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्री वी.राधाकृष्णन ने प्रदान किए।

स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी

ग्रुप केन्द्र दीमापुर में 14 नवंबर, 1990 को एक स्वस्थ शिशु प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। ग्रुप केन्द्र दीमापुर के चिकित्सालय द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी में बल के 31 कार्मिकों के बच्चों ने भाग लिया। बल के पूर्वोत्तर क्षेत्र के महानिदेशक श्री एम. पी. सिंह इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आए बच्चों को पुरस्कार भी प्रदान किए।

माह जनवरी, 91 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों के मृत्यु माह जनवरी, 1991 में हुई। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सिपाही प्रताप सिंह (54 बटा०), सिपाही पी. सी. दास (64 बटा०), सि. (चालक)

हारेचंद महादेव (36 बटा०), रंगरूट राम प्रकाश सिंह तमर (100 बटा०), धोबी लक्ष्मण (ग्रुप (के. दुर्गापुर), सफाई कर्मचारी जे. डी. सिंह (98 बटा०), रंगरूट राम करन (107 बटा०), हवलदार एन. विजयन (51 बटा०), हवलदार मशी बरवा (आर. टी. सी.-4), सिपाही गोविंद सिंह (26 बटा०), सिपाही देवीदास (42 बटा०), उपधीक्षक लक्ष्मण सिंह (55 बटा०), हवलदार गिरधारी लाल (2 बटा०), सिपाही थरेश मार्क (2 बटा०), नायक लाल बहादुर (2 बटा०), हवलदार आशाराम (2 बटा०), सिपाही अजीत कुमार घोष (22 बटा०), सिपाही महातिम सिंह (91 बटा०), सिपाही बी. वी. भीमराव (79 बटा०), लां. नायक किशनदेव शर्मा (50 बटा०), सिपाही वी. रमेश चन्द्र (13 बटा०), सिपाही दौलत राम (13 बटा०), सूबेदार एस. पाठक (11 बटा०), सिपाही पी. बरिक (19 बटा०), सिपाही उदय शर्मा (53 बटा०), सफाई कर्मचारी किशोरी बाई (ग्रु. के. नीमच), एवं सिपाही सुकवंत सिंह (13 बटा०)।

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त हुई। सूचना के अनुसार सितंबर, 1991 माह में 44 बटा० के नायक जनक राज की भी मृत्यु हुई। पहले प्राप्त हुई सूचना के अनुसार इन की मृत्यु की सूचना अगस्त माह में प्रकाशित की गई थी।

ज्ञान अमृत

पेट भरने के लिए जितना पदार्थ जरूरी है, उतने पर ही प्राणियों का अधिकार है। उस से अधिक पर जो आसक्ति रखता है वह चोर है और दंड का भागी है।

-महाभारत

आई. टी. आई. को मान्यता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के वजीराबाद, नई दिल्ली स्थित आई. टी.आई. में चलाए जा रहे मोटर मैकेनिक, रेडियो, टी.वी. तथा वेल्लिंग कोर्स नेशनल कौंसिल आफ वोकेशनल ट्रेनिंग से संबद्ध हो गए हैं। अब इस संगठन से अपना प्रशिक्षण पूरा करने वाले विद्यार्थियों को नेशनल ट्रेड सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा, जो कि उन को बेहतर रोजगार प्राप्त करने में मददगार साबित होगा।

इस संस्थान के वेल्लर टेड के पहले बैच के 14 उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों में से सात को देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में रोजगार मिल गया है।

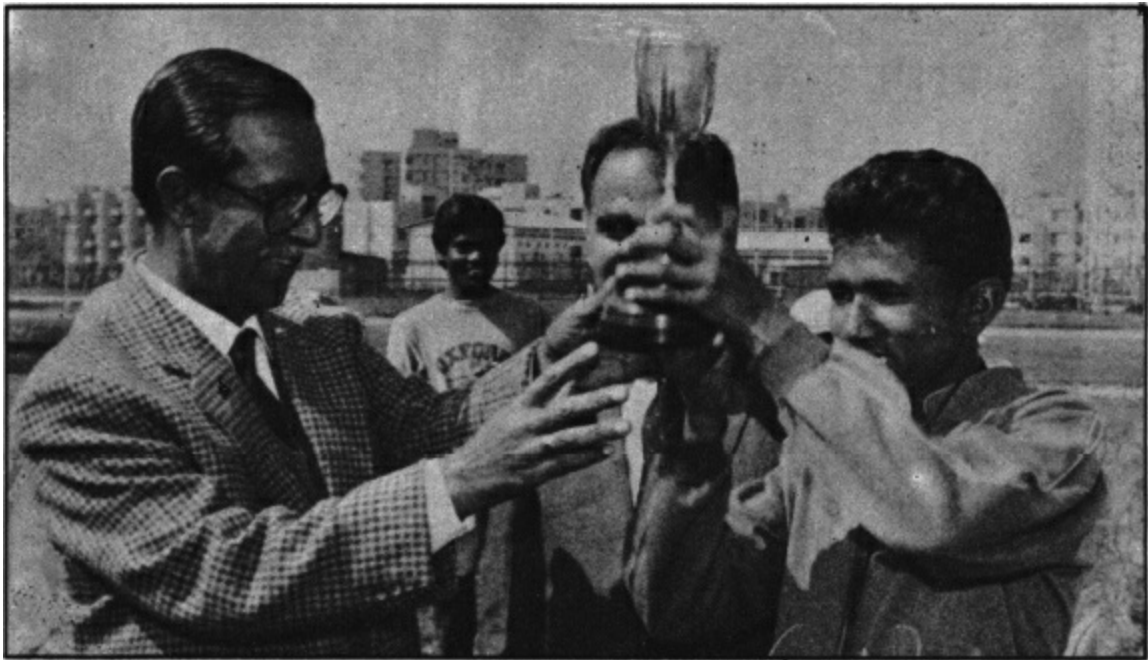
जवान पदोन्नत

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 63 वीं बटालियन के कांस्टेबल एच० जी० हलप्पा को एक पद की पदोन्नति देकर लांस नायक बना दिया गया है। उन्हें यह पदोन्नति 12 दिसंबर, 1990 को कर्णग्रस्त हैदराबाद में झूटी के दौरान दिखाई गई तत्परता, साहस व वीरता के लिए दी गई है। कांस्टेबल हलप्पा ने उस समय आंध्र प्रदेश पुलिस

के कांस्टेबल कांटेनर पर काबू कर लिया, जबकि वह सहायक पुलिस कॉमिशनर सतैया पर गोली चला रहा था।

के० रि० पु० बल के दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी० आर० कार्तिकेयन ने कांस्टेबल हलप्पा को 2000 रुपये का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया है। इस के साथ ही हैड कांस्टेबल खलिफा राम, कांस्टेबल पी० के० बोरा तथा कांस्टेबल के० एस० सुगना को भी एक एक हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

बल के स्कूल की खेलों में उपलब्धि



के० रि० पु० बल पब्लिक स्कूल के अनिल कुमार को ट्रॉफी भेंट करते अपर महानिदेशक श्री आर. के. वढेरा डी० डी० ए० स्पोर्ट्स कॉम्प्लैक्स रोहिणी दिल्ली में 16 फरवरी, 1991 को संपन्न हुई पहली त्रिकोणीय खेलकूद प्रतियोगिताओं की ट्रॉफी सी० आर० पी० एफ० एवं बाल-भारती स्कूल ने संयुक्त रूप से जीत ली।

इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री आर. के. वढेरा ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य की आशा हैं तथा खेल-कूद उन गतिविधियों में से एक है जो बच्चों के चरित्र का निर्माण करती हैं। इस प्रतियोगिता में सी० आर० पी० एफ० पब्लिक स्कूल रोहिणी, बाल भारती पब्लिक स्कूल पीतमपुरा तथा सेंट मार्गरेट स्कूल प्रशांत विहार के बच्चों ने भाग लिया।

जूनियर और सीनियर श्रेणियों में विभक्त कक्षा 6 से 9 तक के बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

लड़कों की सीनियर और जूनियर श्रेणी की ट्राफियाँ सी० आर० पी० एफ० पब्लिक

स्कूल ने जीतों जबांके लड़ाकेयों की श्रेणी में यह ट्राफियाँ बाल भारती स्कूल ने जीती।

सी० आर० पी० एफ० स्कूल के अनिल कुमार और संजय सिंह, जूनियर और सीनियर श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ धावक घोषित किए गए। बाल भारती स्कूल की आरुषी खन्ना एवं शोभा दीवान क्रमशः जूनियर एवं सीनियर लड़कियों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ घोषित की गई। सर्वश्रेष्ठ धावकों को 500-500 रुपए के नकद पुरस्कार भी दिए गए। इस अवसर पर बच्चों द्वारा आकर्षक मार्चपास्ट भी प्रस्तुत किया गया। मार्चपास्ट में बाल भारती स्कूल की टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। इससे पूर्व सी० आर० पी० एफ पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्हें प्रतियोगिता के विषय में जानकारी दी।

संक्षिप्त समाचार

दो आतंकवादी मारे गए

17 फरवरी, 1991 को 73 बटालियन की एक टुकड़ी बथाला सतियाला गांव में पेट्रोल ड्यूटी पर थी। सतियाला गांव के नजदीक जब पार्टी ने विपरीत दिशा से आती हुई एक मारुति वैन को रुकने का इशारा किया तो उस में सवार दो व्यक्ति बल के जवानों पर फायर करते हुए भाग निकले। पार्टी ने उन का पीछा किया। लगभग 15-20 मिनट की गोलीबारी के बाद दोनों आतंकवादी मारे गए। मारे गए आतंकवादियों के पास से एक ए. के. 47 रायफल काफी गोली बारूद के साथ बरामद की गई। मृतक आतंकवादियों की शिनाख्त अमरजीत सिंह तथा मलकैत सिंह के रूप में कर ली गई। अमरजीत सिंह सेना में कार्यरत था तथा छुट्टी पर घर आया हुआ था।

एक आतंकवादी मरा

3 फरवरी, 1991 को 73 बटालियन की एक टुकड़ी व्यास पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आने वाले बथाला व सतियाला आदि गावों में पेट्रोल ड्यूटी पर थी। बथाला कस्बे के नजदीक पार्टी ने एक साइकिल के साथ दो संदिग्ध व्यक्तियों को खड़े पाया। पुकारने पर दोनों व्यक्ति अपनी साइकिल पर चढ़ कर भाग निकले। बल की पार्टी ने उन का पीछा किया। थोड़ी दूर जाने पर वे अपनी साइकिल छोड़ कर विभिन्न दिशाओं में भागने लगे। इन में से एक व्यक्ति अपनी राइफल से बल के जवानों पर फायर करने लगा। बल की पार्टी ने उसे गेहूं के एक खेत में घेर लिया। सूचना मिलने पर 73 बटालियन के कमांडेन्ट भी अपनी टुकड़ी के साथ वहां पहुंच गए। आधे घंटे तक दोनों तरफ से गोली बारी होती रही। बाद में खेत की तलाशी लेने पर वह आतंकवादी मरा हुआ पाया गया। उस के पास से एक ए. के. 74 राइफल व उस के कारतूस व अन्य

असला बरामद किया गया।

तीन आतंकवादी मारे गए

दिनांक 23 फरवरी को 73 बटालियन की एक टुकड़ी पंजाब में जंडियाला पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आने वाले मुचल तथा रामपुर खुर्द गांवों में पैट्रोल ड्यूटी पर थी। रामपुर खुर्द गांव के नजदीक पार्टी ने एक मोटर साइकिल पर तीन युवकों की आते देखा। रुकने के लिए कहने पर वे युवक पुलिस दल पर गोलियां चलाने लगे और अपना मोटर साइकिल वहीं छोड़ खेतों की तरफ भाग गए। पुलिस दल ने आतंकवादियों का पीछा किया। थोड़ी देर की गोली बारी के बाद एक आतंकवादी मारा गया। सूचना मिलने पर 73 बटालियन के कमांडेन्ट बल की और टुकड़ियों के साथ वहां पहुंच गए। बाकि दो आतंकवादियों को खेत में घेर लिया गया। थोड़ी देर की मुठभेड़ के बाद वे दोनों आतंकवादी भी मारे गए। मृत आतंकवादियों के पास से एक ए.के. 47 राइफल तथा दो 315 बोर की राइफलें सजीव गोली बारूद के साथ बरामद की गईं।

हथियार बरामद

शांति एवं व्यवस्था कायम करने हेतु फैजाबाद में तैनात की गई 29 बटा० की “बी” कम्पनी ने 25 दिसम्बर 1990 को अपनी जांच ड्यूटी के दौरान फैजाबाद शहर पुरानी सब्जी मंडी क्षेत्र से हथियारों एवं कारतूसों का एक बड़ा जखीरा बरामद किया। बरामद हथियारों में 58 बम, 3 कट्टे एवं 18 कारतूस शामिल थे। बल के जवानों की इस उपलब्धि से स्थानीय असामाजिक तत्वों का भारी धक्का पहुंचा एवं उनकी गतिविधियों में भारी कमी आयी। बल के जवानों की उन के इस कारनामे पर फैजाबाद प्रशासन ने भारी प्रशंसा की तथा उन्हें 5000 रुपये का नगद इनाम भी प्रदान किया।

45 बटालियन का सम्मान

त्रिपुरा में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात 45 बटालियन के कार्यों की स्थानीय जनता एवं प्रशासन ने भरपूर प्रशंसा की है। गत वर्ष इस बटालियन द्वारा अपने कार्य क्षेत्रों में की गई उपलब्धियों के लिए त्रिपुरा के मुख्य मंत्री ने बटालियन के कमांडेन्ट श्री नरेन्द्र पाल को एक प्रशंसा पत्र प्रदान किया है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री नरेन्द्र पाल को यह प्रशंसा पत्र मुख्य मंत्री ने अपने कक्ष में अनेक वरिष्ठ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों के समक्ष प्रदान किया, साथ ही उन्हें 501 रुपये का नकद पुरस्कार भी दिया गया।

सराहनीय कार्य

13 दिसंबर, 1990 को दिल्ली स्थित 6 बटालियन को “एफ” कम्पनी को अहमदाबाद स्थित बापू नगर क्षेत्र में भड़क उठे साम्प्रदायिक दंगों पर काबू पाने के लिए तत्काल वायु मार्ग द्वारा पहुंचाया गया। बल की इस टुकड़ी के जवानों ने तत्काल बेहद सूझ-बूझ एवं कार्यकुशलता का परिचय देते हुए स्थिति पर काबू पा लिया। जवानों के इस कार्य की नागरिक प्रशासन तथा जनता ने भरपूर प्रशंसा की। स्थानीय पुलिस कमिशनर ने बल के जवानों को इस कार्य की सराहना स्वरूप 1000 रुपये का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया।

218 आतंकवादी पकड़े

माह जनवरी, 1991 में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने देश भर में आतंकवादियों के साथ हुई विभिन्न मुठभेड़ों में 218 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस अवधि में आतंकवादियों के साथ हुई कुल 147 मुठभेड़ों में 39 आतंकवादी मारे गए और तीन घायल हुए।

इन मुठभेड़ों में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं। इन मुठभेड़ों में के० रि० पु० बल के जवानों ने 91 घातक हथियार बरामद किये, इनमें 32 ए० के० 47 रायफलें भी शामिल हैं। 2342 सजीव कारतूस भी बरामद किए गए।

मारे गए आतंकवादियों में कश्मीरा सिंह, खालिस्तान कमांडो फोर्स के पंजवार ग्रुप का कश्मीर सिंह, बब्बर खालसा इंटरनेशनल का जनरल हरी सिंह उर्फ देबा और खालिस्तान कमांडो फोर्स जप्फरवाल गुट का अमरजीत सिंह जैसे कुख्यात आतंकवादी भी शामिल थे। गिरफ्तार आतंकवादियों में किंदर सिंह और प्रताप सिंह जैसे कुख्यात आतंकवादी शामिल हैं।

मगर इन सब उपलब्धियों के एवज में के० रि० पु० बल के 15 जवान वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि 33 जवान गंभीर रूप से घायल हुए।

वृक्षारोपण

गत वर्ष केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने दिल्ली तथा देश भर में फैले अपने कार्यालयों, ग्रुप केंद्रों, बटालियन मुख्यालयों व अन्य स्थलों पर एक लाख 17 हजार से अधिक वृक्ष लगाए। विभिन्न जातियों के यह वृक्ष वृहद वन महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण को और अधिक हरा भरा बनाने के लिए लगाए गए।

फुरसत के लिए
आओं दुनिया जानें

संसार में सबसे आधिक ऊंचाई पर भारत व चीन का युद्ध हुआ था। यह ऊंचाई 1100 फीट है।

विश्व में 360 बोलियां बोली जाती हैं। जिनमें से 122 बोलियां भारत में बोली जाती हैं।

संसार में सबसे बड़ा जंतु नील ह्वेल मछली है। यह लगभग 100 फीट लम्बी होती है तथा इसका वजन लगभग 10 हाथियों के बराबर होता है।

संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु रेडियम है। जिसके एक पौंड का मूल्य लगभग 8,20,00,000 रुपये है।

संसार का सबसे बड़ा नगर लन्दन है। जिसकी जनसंख्या लगभग 84,00,000 है।

संसार में सबसे बड़ा बांध हकर बांध है, जो अमेरिका में है। यह 720 फुट ऊंचा है।

संसार का क्षेत्रफल सत्रह सौ चौसठ पदम छः मील है।

संसार में सबसे ऊंचा गिरजाघर सेन्टपाल्ज कैथेड्रिल है, जो 365 फीट ऊंचा है।

क्रिकेट में 10,000 से अधिक रन बनाने वाले भारत के सुनील गावस्कर क्रिकेट की दुनिया के अकेले खिलाड़ी हैं।

एक ओवर में 6 छक्के लगाने वाले भारत के रवि शास्त्री तथा वेस्ट इंडीज के सर गेरी सोबर्स हैं।

स० उ० नि० कैलाश चन्द्र पंत
(हिन्दी अनुभाग) महानिदेशालय

दीप

दीप तू मेरे लिए क्यों जलता है
मैं काली काली रात हूँ
तू जल उनके मन में
जो हिंसा डूबे हैं
जो स्वार्थ में जीते हैं
द्वेष भाव को रखते हैं
जड़ हो के जो बैठे हैं।
तू उनके मन में रोशन होना
तू उनको ही ज्ञान देना।
मैं स्वयं ही चली जाऊंगी
अब बात थोड़ी देर की है
अन्धकार सब दूर हो जायेगा

में काली रात हूँ
तू जलना उनकी आखों में
अंगारे जहाँ धधकते हैं
शीतल किरने भरना उनमें
तू उनकी दृष्टि बदल देना
तू इतनी जोर से रोशन होना।

-उमा सेठ

47167187



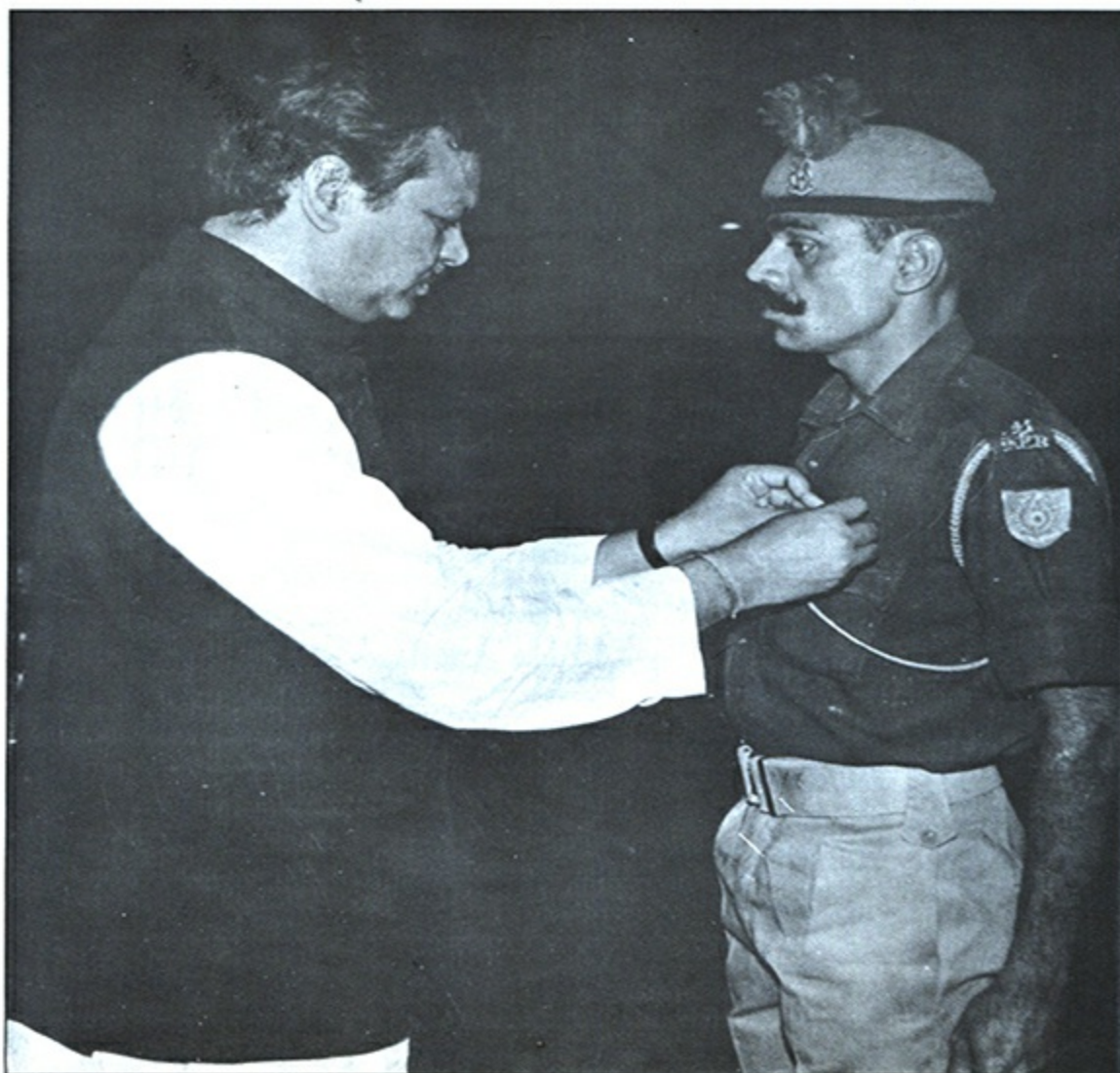
महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल कां० के० सोम सुंदरम की विधवा को मद्रास में एक लाख का चेक भेंट करते हुए।

मुख्य सम्पादक: ए. एन. शर्मा, सम्पादक: अनिल गुप्ता। मुद्रक: सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ीदा कलाँ, नई दिल्ली-110072।
मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के. रि. पु. बल, ब्लाक 1, सी. जी. ओ. कामलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए.एन. शर्मा।

फोटो टाइप सैटिंग: गीतांजलि एडवर्टाइजिंग एंड प्रिंटर्स, एच-26, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली-110048.

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-IV अंक - II मूल्य 1.95 रुपए 31 मार्च, 1991 10 चैत्र, शक 1913



कांस्टेबल आजाद सिंह को वीरता पदक प्रदान करते हुए गृह राज्य मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय

सम्पादकीय

नौवीं लोक सभा के अकाल अवसान के साथ ही दसवीं लोकसभा के गठन की तैयारियां राजनीतिक और प्रशासनिक स्तर पर जोर शोर से शुरू हो चुकी हैं। इस वर्ष की गर्मियां हमारे कार्मिकों की कर्तव्यनिष्ठा का एक और इम्तिहान लेंगी। भारत विश्व का सब से बड़ा लोकतंत्र है, और किसी भी लोकतंत्र का आधार वह जनता होती है, जो कि अपने विवेक और फैसले से देश के भविष्य का निर्धारण करती है, लोक प्रशासन के गठन के लिए संसद में अपने प्रतिनिधि भेजती है। सही मायनों में लोकतंत्र में शासन जनता करती है, अपने नुमांइदों के माध्यम से।

जनता अपने विवेक का उपयोग निष्पक्ष और बिना किसी दबाव के तभी कर सकती है जब वह पर्याप्त रूप से सुरक्षित हो। इसका जिम्मा घूम फिर कर सुरक्षा तंत्र पर आ जाता है, और देश के आंतरिक सुरक्षा तंत्र के एक बड़े हिस्से का अर्थ है केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

सरकार इस तथ्य को जानती है कि जनता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रति विश्वास व स्नेह की जड़ें गहरी हैं, यही कारण है कि उस से सरकार तथा जनता की अपेक्षाएं भी अधिक हैं।

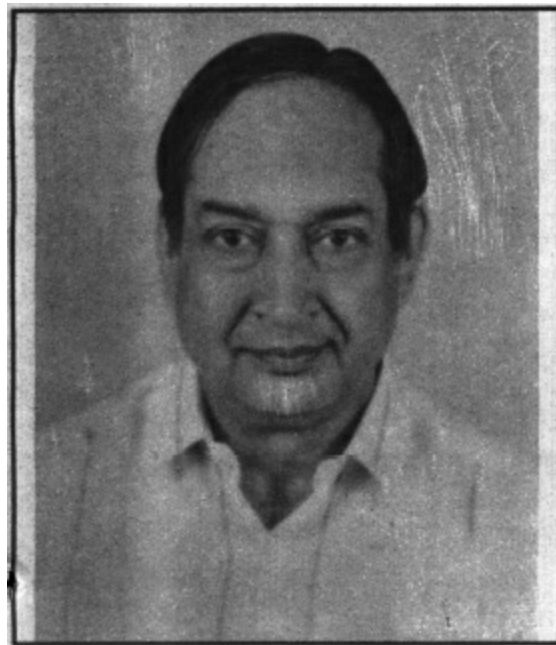
के० रि० पु० बल पर बढ़ते काम के बोझ व आगामी चुनावों को मद्देनजर रखते हुए सरकार ने के० रि० पु० बल को 20 नई बटालियनें खड़ी करने की इजाजत दी है। ये बटालियनें चुनाव से पूर्व ही खड़ी की जाएंगी, तथा चुनाव के दौरान कानून व व्यवस्था बनाए रखने में मदद देंगी। इन नयी बटालियनों के लिए देश भर में 26 मार्च से 10 अप्रैल तक लगभग 16,000 जवानों की भर्ती की गई।

अब तक के० रि० पु० बल सरकार तथा जनता के हर विश्वास पर खरा उतरा है। दसवीं लोक सभा के चुनाव कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रथमतः ये नौवीं लोकसभा के अकाल अवसान के बाद भीषण राजनीतिक उथल पुथल के बीच हो रहे हैं, दूसरे इन चुनावों में राम जन्म भूमि, बाबरी मस्जिद तथा मंडल कमीशन जैसे मुद्दों के चुनावी मुद्दे बनने की भरपूर गुंजाइश है, इन मुद्दों पर देश में पहले ही साम्प्रदायिक और सामाजिक विवाद उभर चुका है तथा अभी तक समाज के कई तबकों में इन के प्रति रोष बाकी है। अतः कानून व्यवस्था बनी रहे और चुनावी महायुद्ध बिना किसी तनाव के शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो, इस के लिए के० रि० पु० बल को हर क्षण, हर पल तत्पर रहना है। इस बार की गर्मियों की लू और चुनावी गतिविधियों की घोर तपन के बीच हमें ठंडे दिल और दिमाग से काम करना है। एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी हम पर है, हम उसे पूरी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और सेवाभक्ति के भाव के साथ निभाने के लिए तैयार हैं। कर्तव्य पर तैनात बल के सभी कार्मिकों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

अरविन्द शर्मा

(अरविंद नारायण शर्मा)

नए सलाहकार (वित्त)



श्री गोपाल चतुर्वेदी

श्री गोपाल चतुर्वेदी ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में वित्त सलाहकार का पदभार संभाल लिया है।

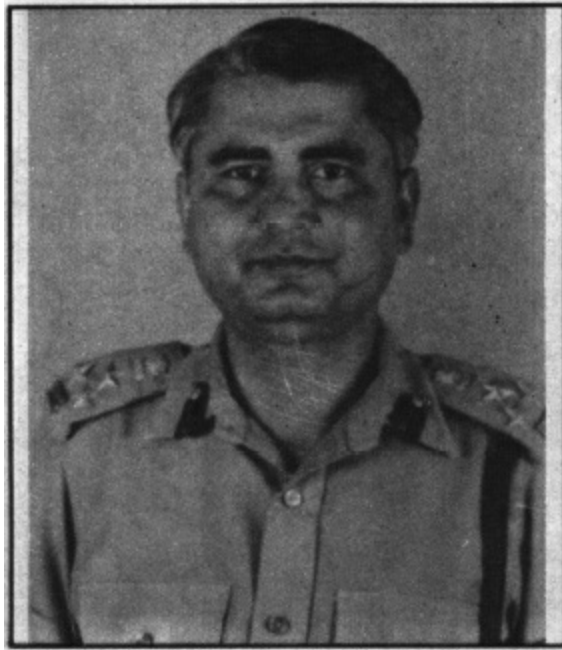
श्री गोपाल चतुर्वेदी भारतीय रेल सेवा में 1966 में नियुक्त हुए। फरवरी 1988 से श्री चतुर्वेदी राष्ट्रीय सुरक्षा गारद में लेखा एवं वित्त निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। श्री चतुर्वेदी ने कै० रि० पु० बल में वित्त सलाहकार का पदभार फरवरी, 1991 में ग्रहण किया। इस के साथ ही वह संयुक्त रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा गारद का पदभार भी संभाले हुए हैं।

नए उप निदेशक

भारतीय पुलिस सेवा के 1974 बैच के पंजाब काडर के श्री मोहम्मद इजहार

आलम ने 21 मार्च, 1991 से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में उपनिदेशक का पद भार संभाल लिया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में आने से पूर्व श्री आलम देश के विभिन्न भागों में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। विगत में उन के कुछ महत्वपूर्ण पदभारों में एस एस पी रोपड़, जालंधर, अमृतसर (पंजाब), उप महानिरीक्षक सीमा क्षेत्र, अमृतसर तथा उप महानिरीक्षक कश्मीर रेंज (श्रीनगर) शामिल हैं।

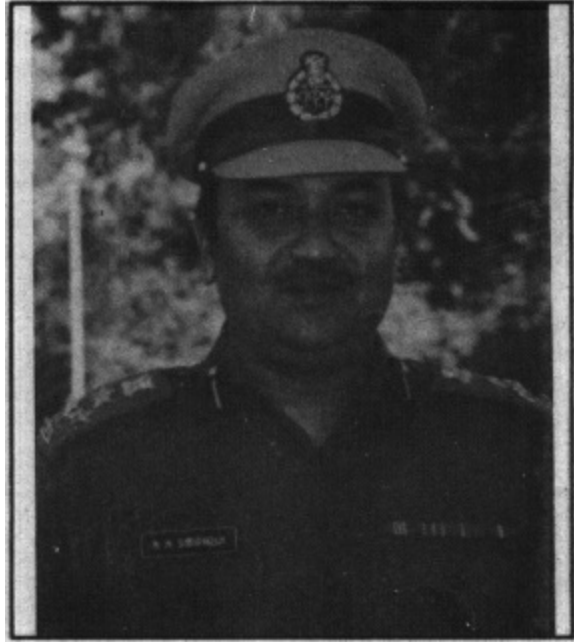


श्री मोहम्मद इजहार आलम

नए उप निदेशक

1968 बैच के पंजाब कैडर के श्री ए० ए० सिद्दीकी ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में उपनिदेशक का पद भार संभाल लिया है।

के० रि० पु० बल में आने से पूर्व श्री सिद्दीकी कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। वह 1983-84 में फिरोजपुर के एस० एस० पी० तथा 1984-88 में उप महानिरीक्षक सीमा क्षेत्र व उप महानिरीक्षक जालंधर क्षेत्र रहे। वह 1988-1989 में उप महानिरीक्षक सतर्कता पंजाब भी रहे। बल में आने से पूर्व वह भारतीय पर्यटन विकास निगम में अधिशासी निदेशक (विजिलेंस) थे।



श्री ए ए सिद्दीकी



I S E '91

**INTERNATIONAL SECURITY
EXHIBITION
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI
SEPTEMBER 3-7, 1991**

**India's exposition on a large scale on
latest security technology.**

DISPLAY PROFILE

- Electronic Security Devices
- Fibre optic devices
- Detectors and Sensors
- Counter Espionage Equipment
- Night Vision Devices
- Special Protective Clothing
- Banking Security Equipment

SPONSORED BY

**MINISTRY OF HOME AFFAIRS
(GOVERNMENT OF INDIA)**

BENEFICIARIES

- Public and Private Sector Industries
- Defence Services
- Para Military Forces
- Police Forces
- Civil Aviation
- Banks

ORGANISED BY

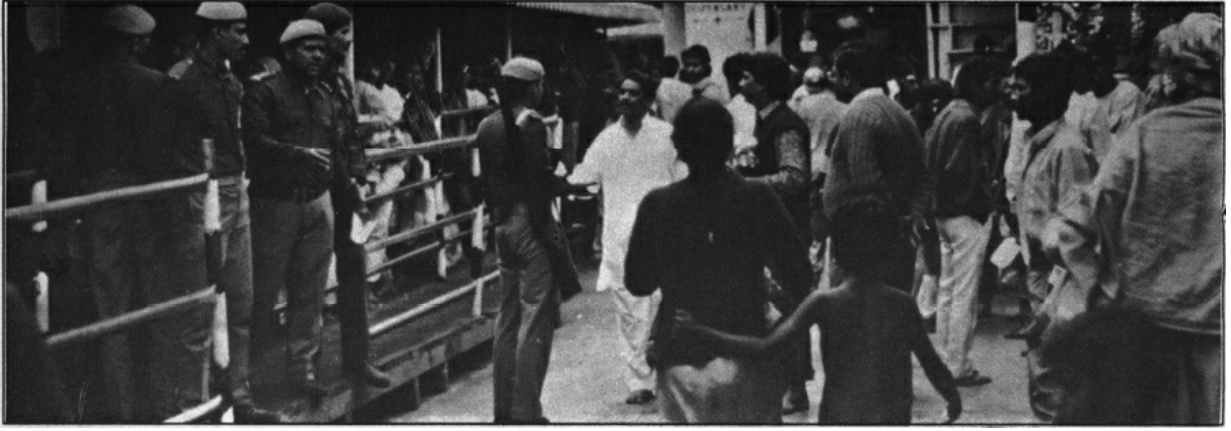
**THE TRADE FAIR AUTHORITY OF
INDIA**

**COLLABORATION
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE**

वैष्णो देवी यात्रा

यात्री आश्वस्त है, बल की निगरानी में

लेख- ए. एन. शर्मा, छाया- सतीश खन्ना



वैष्णो देवी मार्ग पर बल के जवानों की निगरानी

देश के शीर्ष पर स्थित जम्मू कश्मीर प्रांत आज आतंकवादी गतिविधियों से ग्रस्त है। इस क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा स्थानीय नागरियों को सुरक्षा प्रदान करने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जम्मू स्थित वैष्णों देवी तीर्थ स्थल देश भर के श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केन्द्र है, यों तो साल भर यहां पर तीर्थयात्रियों का तांता लगा रहता है। मगर नवरात्रों के दिनों में यहां पर तीर्थयात्रियों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाती है। लाखों की तादात में देश भर से आने वाले इन तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा का मुख्य जिम्मा के० रि० पु० बल के पास है।

राजधानी दिल्ली के कुछ वरिष्ठ पत्रकार यह जानना चाहते थे कि इस क्षेत्र में बल के जवान तथा अधिकारी किस प्रकार इन तीर्थयात्रियों को सुरक्षा प्रदान करते हैं। जम्मू शहर तथा वैष्णों देवी स्थल और उस के पूरे मार्ग पर के० रि० पु० बल जवानों की गतिविधियों की जानकारी पत्रकारों को देने के लिए मैं अपने साथ कुछ पत्रकारों को लेकर पांच दिन के दौरे पर जम्मू तथा वैष्णों देवी गया।

कश्मीर में आतंकवादी तथा विघटनकारी गतिविधियों को देखते हुए वैष्णो देवी में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। यहां पर बल की नौवीं बटालियन की एक कम्पनी तैनात है। बल ने समुचित सुरक्षा व्यवस्था के लिए वैष्णो देवी मंदिर तथा उसके परिसर में 14 स्थायी निगरानी केन्द्र बनाए हैं। यहां बल के कार्मिक हर समय चौकस रहते हैं तथा आने जाने वालों पर कड़ी नजर रखते हैं। दरबार से कुछ मीटर पहले ही वहां तैनात बल की टुकड़ी के कम्पनी कमांडर का कार्यालय बनाया गया है ताकि आवश्यकता पड़ने पर तत्काल सम्पर्क स्थापित किया जा सके। वैष्णों देवी की तीर्थयात्रा पर जाने वाले यात्रियों तथा उनके सामान की सब से पहले कटरा से बाण गंगा पहुंचने पर तलाशी ली जाती है, इस के बाद करीब नौ किलोमीटर दूर सांझी छत नामक स्थान पर भी यात्रियों के सामान की तलाशी ले जाती है। हालांकि अभी तक इस क्षेत्र में कोई अप्रिय घटना नहीं हुई है, लेकिन इस स्थान की महत्ता को देखते हुए किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं उठाया जा सकता। मंदिर परिसर में तथा देवस्थल में जाने के लिए किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो इसके लिए बल के जवान यात्रियों को व्यवस्थित करते हैं।

राजधानी से गए पत्रकारों ने बनतलाब स्थित बल के ग्रुप केन्द्र तथा जम्मू शहर में तैनात बल के जवानों की गतिविधियों का भी जायजा लिया।

राजधानी दिल्ली के ये पत्रकार जम्मू तथा वैष्णो देवी स्थल पर स्थित बल के कार्मिकों की गतिविधियों से पूरी तरह संतुष्ट एवं प्रभावित थे। इस संबंध में देश के कई प्रमुख समाचार पत्रों ने समाचार एवं लेख भी प्रकाशित किए।

आश्रिताओं का सम्मान



कांस्टेबल श्रीनिवास के पिता को 1.25 लाख का चैक भेंट करते श्री कार्तिकेयन

येलेहंका, बैंगलोर स्थित के० रि० पु० बल काम्पलैक्स में 26 फरवरी 1991 को आयोजित एक सादे एवं भावभीने समारोह में कर्तव्य पर मारे गए बल के नौ जवानों की विधवाओं को सम्मानित किया गया। ये सभी जवान कर्नाटक प्रांत के आने वाले थे। इस मौके पर दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी० आर० कार्तिकेयन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर बल के भूतपूर्व महानिदेशक श्री पी० जी० हल कर भी अपनी पत्नी सहित उपस्थित थे।

इस मौके पर स्वर्गीय कांस्टेबल जी० श्रीनिवासा के पिता श्री गिरीयपा को 1,25,000 का चैक भी भेंट किया गया। 77 बटालियन का कांस्टेबल श्रीनिवासा जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों का सामना करते हुए 11 अक्टूबर, 90 को शहीद हो गया।

था। इस के अतिरिक्त बल के शहोद अन्य कामैकों की आश्रिता ओं का भी सम्मान किया गया।

आवड़ी में कल्याण गतिविधियां

आवड़ी ग्रुप केन्द्र में बल के कार्मिकों के कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत एक गैस एजेंसी तथा शीतल पेय की बोतलों को भरने के लिए एक प्लांट की स्थापना की गई है। भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन आफ इंडिया द्वारा स्थापित रसोई गैस की इस एजेंसी से ग्रुप केन्द्र में स्थित बल की सभी युनिटों एवं कार्मिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकेगी। वर्तमान में ग्रुप केन्द्र में 700 स्वीकृत गैस कनेक्शन है, जब कि अभी काफी बड़ी तादात में लोग प्रतीक्षा सूची में हैं। ऐसी आशा है कि शीघ्र ही यहां गैस उपभोक्ताओं की सूची 1000 के अंक को पार कर जाएगी।

ग्रुप केन्द्र आवड़ी देश में के० रि० पु० बल का सब से बड़ा संस्थान है। इस ग्रुप केन्द्र के अंदर ही केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज तथा रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र भी स्थित है। केन्द्र में लगभग 1000 पारिवारिक आवास खंड है। इस के अतिरिक्त आठ बैरकें हैं, जिन में अकेले रहने वाले कार्मिक रहते हैं। 7000 से अधिक की जनसंख्या वाला यह केन्द्र कैटीन, सहकारिता स्टोर एवं शैक्षिक संस्थानों की दृष्टि से पूर्णतः आत्म निर्भर है।

मद्रास एक गर्म शहर है, जहां उमस अत्यधिक होती है, इस कारण यहां शीतल पेयों का उपयोग भी अन्य शहरों की तुलना में अधिक होता है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए ग्रुप केन्द्र स्थित - बल के कार्मिकों को सस्ते दर पर शीतल पेय उपलब्ध कराने के लिए शीतल पेय बोटलिंग प्लांट की स्थापना ग्रुप केन्द्र में की गई है। इस प्लांट की क्षमता 2900 बोतल प्रतिदिन भरने की है। इस प्लांट में बनाई गई शीतल पेय की बोतल बल के कार्मिकों को एक रुपये प्रति बोतल की दर से मिलेगी। इस प्लांट की स्थापना भी बल के कल्याण कार्यक्रमों के अंतर्गत ही की गई है।

बल के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल, रंगरूटों की दीक्षांत कम सत्यापन परेड की सलामी लेने के लिए गत 15 फरवरी को ग्रुप केन्द्र आवड़ी आए। इस मौके पर उन्होंने गैस एजेंसी तथा साफ्ट ड्रिंक्स बोटलिंग प्लांट का भी उद्घाटन किया।

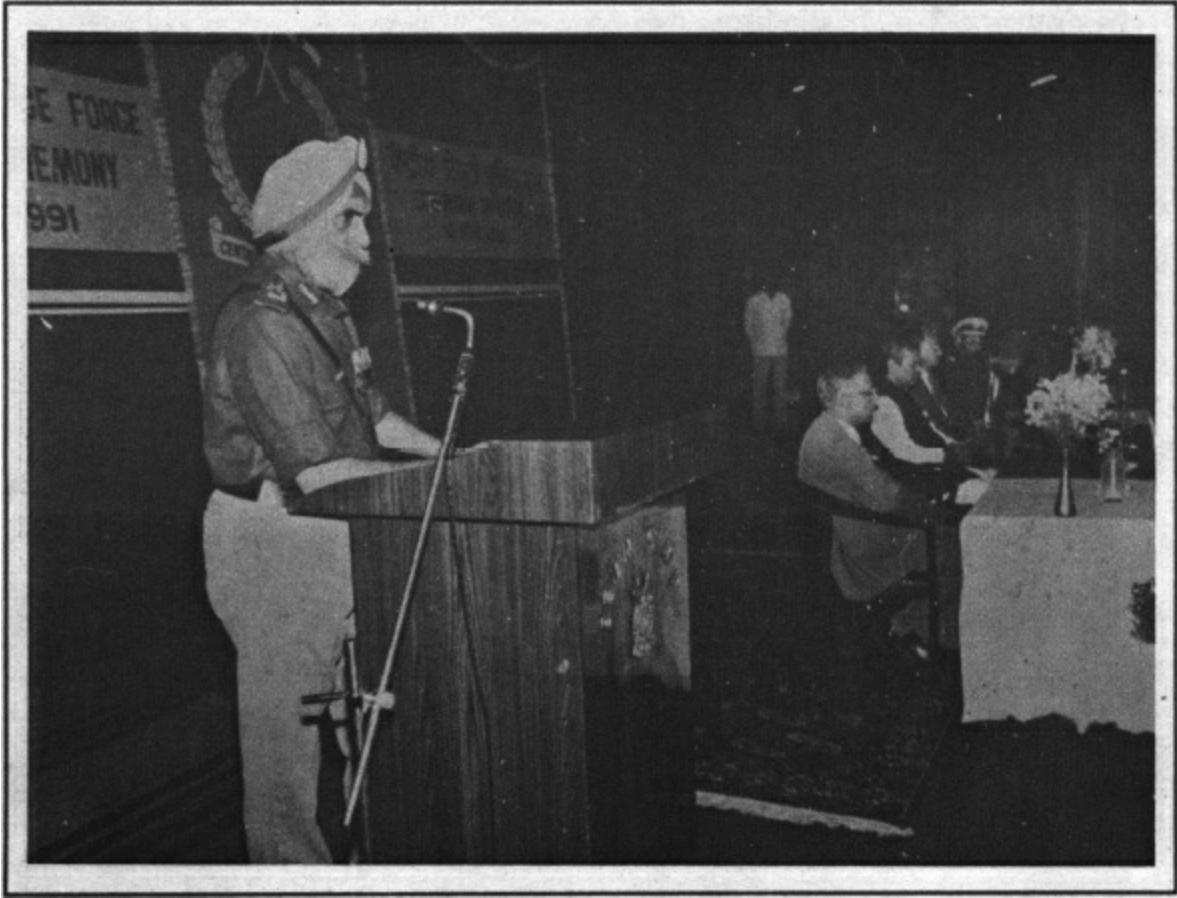
नीति वचन

दूसरों के प्रेम से अपना कार्य कर लेना चतुरता है।

44 कामैकों को पदक



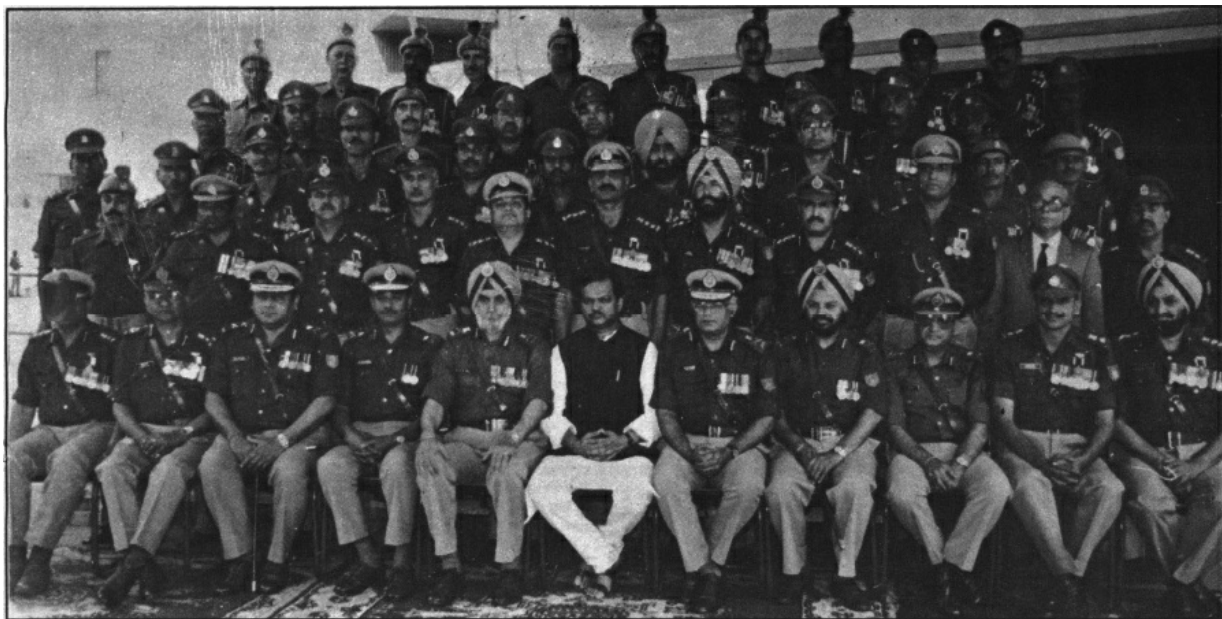
बच्चों से पुष्प ग्रहण करते मुख्य अतिथि



मुख्य अतिथि एवं उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते महानिदेशक श्री के. पी. एस गिल देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए गृह राज्य मंत्री श्री सुबोध कांत सहाय ने कहा है कि ये के० रि० पु० बल के जवान ही हैं, जो कि पंजाब, जम्मू कश्मीर तथा उत्तर पूर्वी राज्यों के दुर्गम क्षेत्रों में लगन और दृढ़ता से काम करते हैं।

श्री सुबोध कांत सहाय नई दिल्ली के फिक्की सभागार में 12 मार्च, 91 को आयोजित के० रि० पु० बल के एक भव्य पदक वितरण समारोह के अवसर पर बोल रहे थे। इस मौके पर गृह राज्य मंत्री ने के० रि० पु० बल के 44 कार्मिकों को पदक प्रदान किए। इन में 41 बटालियन के कांस्टेबल आजाद सिंह चौहान को शौर्यवीरता का पुलिस पदक, दीमापुर ग्रुप केंद्र के अपर महानिरीक्षक, जयेंद्र नेगी तथा 2 सिगनल बटालियन के बांडिट आर० एन० राव को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा निम्न कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किए गए हैं:- कमांडेंट के० डी० मैनी (33 बटालियन), कमांडेंट स्वर्ण सिंह (62 बटालियन), कमांडेंट एम० एस० गिल (आई० जी० कार्यालय), कमांडेंट जी० एस० रतूडी (26 बटालियन), कमांडेंट के० डी० एस० दुल्लत (4 बटालियन), कमांडेंट एम० एम० शर्मा (महानिदेशालय), कमांडेंट के० सी० शर्मा (39 बटालियन), कमांडेंट वी० एस० कल्लूर (राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड में प्रतिनियुक्त), कमांडेंट (चिकित्सक) के० महापात्रा (बेस

अस्पताल-II), कमांडेंट (चौकेत्सक) बी० एन० आचाय (बेस अस्पताल-11), द्वितीय कमान अधिकारी गुरुचरन सिंह (1 बटालियन), द्वितीय कमान अधिकारी जेड० एफ० खान (49 बटालियन), सहायक कमांडेंट नगेंद्र सिंह (ग्रुप केंद्र मुकामाघाट), सहायक कमांडेंट के० आर० भागरू (40 बटालियन), सहायक कमांडेंट धन्ना राम (40 बटालियन), उपाधीक्षक एस० के० घई (महानिदेशालय), प्रशासन अधिकारी वी० के० चतुर्वेदी (ग्रुप केंद्र नई दिल्ली), सूबेदार मेजर अनुसुया प्रसाद (88 बटालियन), सूबेदार मेजर पी० के० एस० नायर (महानिदेशालय), सूबेदार मेजर प्रताप सिंह (23 बटालियन), इंस्पेक्टर पी० सिवानन्दन । (90 बटालियन), इंस्पेक्टर एम० डी० शुक्ला (महानिदेशालय), इंस्पेक्टर रतन चंद्र (केंद्रीय प्रशिक्षण केंद्र-1), इंस्पेक्टर बुद्ध राम (88 बटालियन), इंस्पेक्टर (एम०) जी० टी० अब्राहम (ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम), उप निरीक्षक विक्रम सिंह (3 सिगनल बटालियन), उपनिरीक्षक धर्मसिंह (92 बटालियन), उपनिरीक्षक ओ० वी० शेखरण (41 बटालियन), उप निरीक्षक जी० एस० राठौर (ग्रुप केंद्र अजमेर), उपनिरीक्षक एस० आर० पिल्ले (61 बटालियन), हैड कांस्टेबल पी० वी० कुरीयाकोस (ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम), हैड कांस्टेबल रूप लाल (ग्रुप केंद्र बनतालाब), हैड कांस्टेबल एस० विश्वनाथन (29 बटालियन), हैड कांस्टेबल धनी राम (58 बटालियन), हैड कांस्टेबल स्वंत सिंह (48 बटालियन), हैड कांस्टेबल राम मूर्ती (71 बटालियन), हैड कांस्टेबल आर० के० शर्मा (7 बटालियन), हैड कांस्टेबल । ए० आर० खान (उप महानिरीक्षक । श्रीनगर कार्यालय), कांस्टेबल नेकलडू (ग्रुप केंद्र हैदराबाद), कांस्टेबल अब्दुल । सगीव (38 बटालियन) और कांस्टेबल । गौर सिंह (4 बटालियन)।



पदक विजेताओं के साथ गृह राज्य मंत्री, महानिदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी



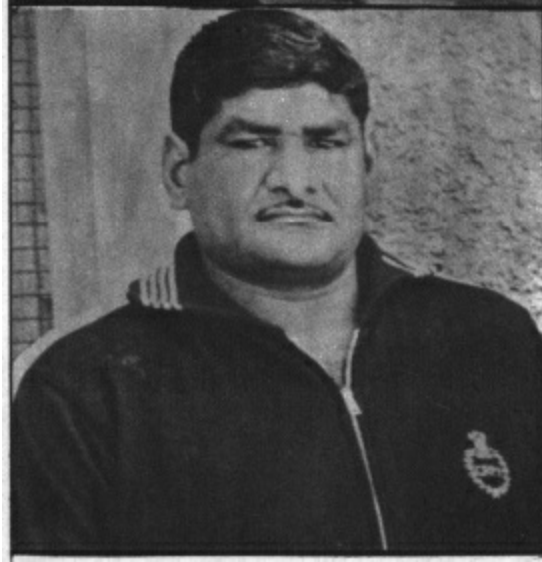
मुख्य अतिथि का स्वागत करते महानिरीक्षक (मुख्या) श्री अजय राज शर्मा

इस मौके पर बोलते हुए गृह राज्य मंत्री ने कहा कि वह जानते हैं कि इस बल के जवानों को लगातार “शटलिंग काक” की तरह काम करना पड़ता है। सरकार इस बल के जवानों की आवास समस्याओं पर प्राथमिकता से ध्यान दे रही है। उन्होंने कहा कि इस बल का एक गौरवशाली इतिहास है, इसने देश की एकता और अखंडता पर अंदर तथा बाहर से होने वाले आक्रमणों का दृढ़ता से सामना किया है। इसका प्रमाण है पदक । प्राप्त करने वाले कार्मिकों की लम्बी तालिका। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बल के जवानों में जिम्मेदारी की यह भावना बनी रहेगी।

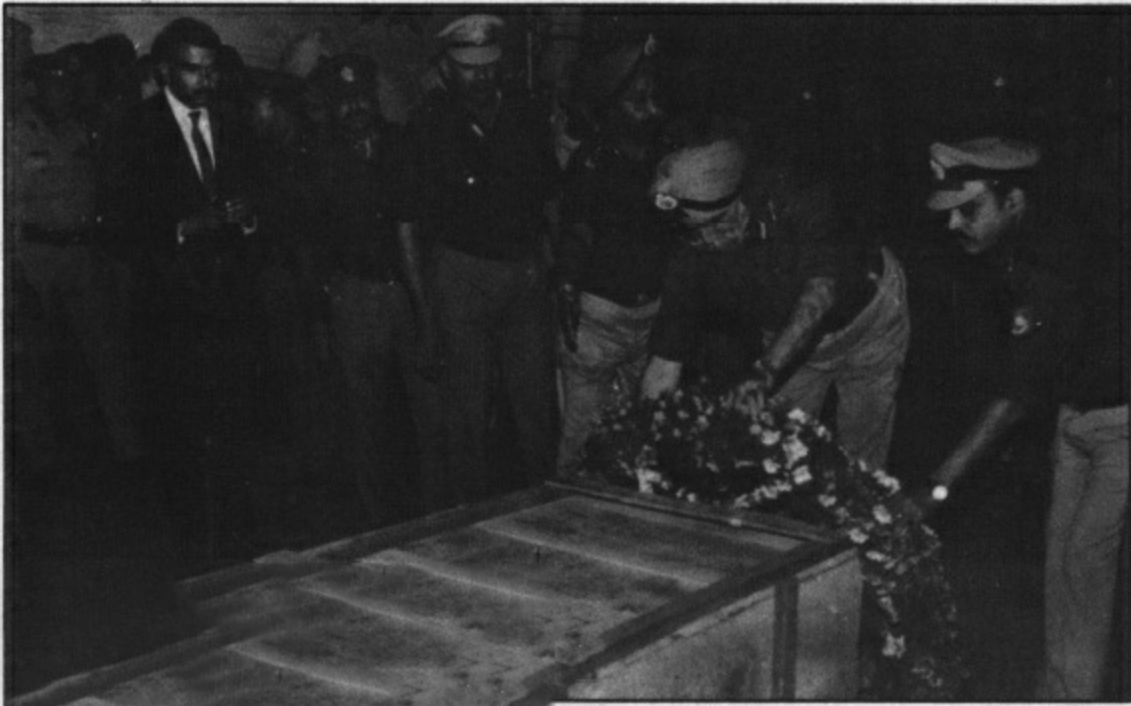
इस से पूर्व बल के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल ने मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत किया। जबकि मुख्य अतिथि को धन्यवाद देते हुए बल के । उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर । सिंह ने कहा कि बल देश की सभी आशाओं पर खरा उतरेगा, तथा सरकार । बल के जवानों को कभी भी किसी जिम्मेदारी को निभाने में पीछे नहीं पाएगी।

इस अवसर पर के रि० पु० बल सहित अन्य केंद्रीय पुलिस संगठनों एवं गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

बल का पहलवान शहीद



दीवान सिंह



दीवान सिंह के शव पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए महानिदेशक

श्रीनगर के एक बाहरी इलाके नागबल के नजदीक पेट्रोल ड्यूटी से लौट रही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 98 बटालियन की एक टुकड़ी पर आतंकवादियों द्वारा लगाई एक घात में बल की 98 बटालियन के सहायक कमांडेंट राष्ट्रीय स्तर के पहलवान 48 वर्षीय श्री दिवान सिंह की मृत्यु हो गई। यह मुठभेड़ 11 मार्च दोपहर को हुई। इस मुठभेड़ में बल का एक कांस्टेबल हरेंद्रसिंह तोमर भी घायल हो गया, मगर बल के जवानों द्वारा वापसी कार्यवाही के परिणामस्वरूप तीन आतंकवादी

घटनास्थल पर ही मारे गए व एक गंभीर रूप से घायल हो गया।

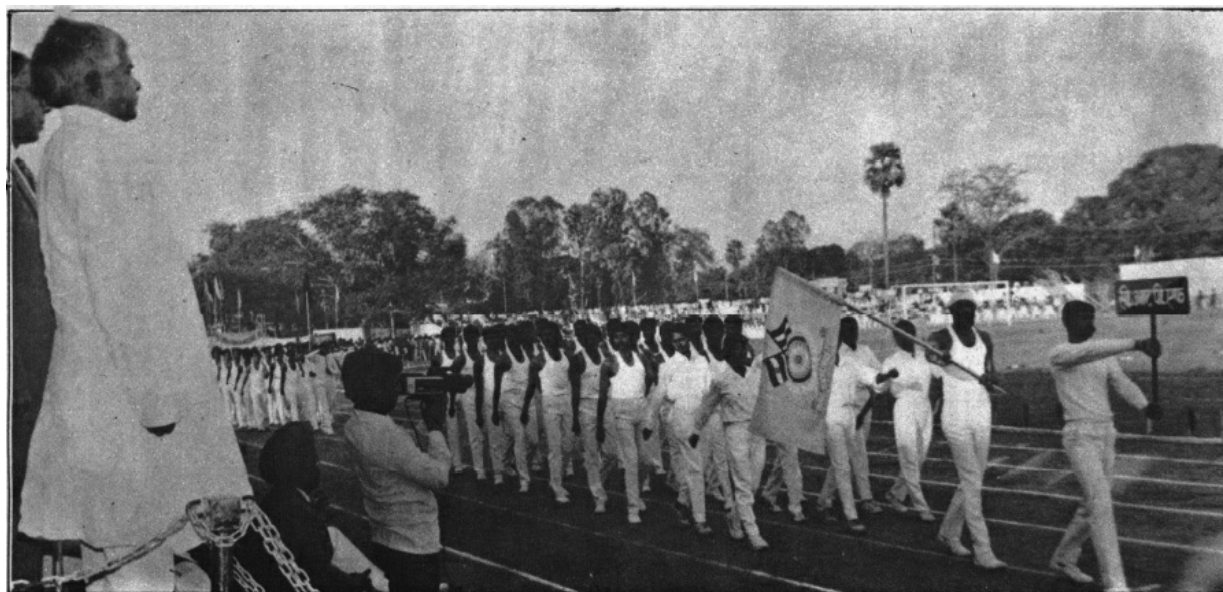
12 मार्च को श्री दिवान सिंह का शव विमान द्वारा दिल्ली लाया गया, जहां के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल सहित बल के वरिष्ठ अधिकारियों ने उनके शव पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए व उनके परिजनों को सांत्वना दी। बाद में उनके शव को पूरे पुलिस सम्मान के साथ उन के गृह नगर आगरा भेजा गया।

श्री दिवान 1969 में के० रि-पू० बल में एक सब इंस्पेक्टर के रूप में शामिल हुए। श्री दिवान सबसे पहले - 1970-71 में एशियाई खेलों के कैप लिए चुने गए। 1971 और 75 में वह कुश्ती के राष्ट्रीय चैंपियन रहे जबकि 1976 में उन्हें रजत पदक मिला। अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भी उन्होंने 1971, 72 और 75 में स्वर्ण पदक जीता, जबकि 1973 में उन्हें रजत पदक मिला 1970 व 1975 के रुस्तम-ए-हिंद खिताब के लिए वह दूसरे स्थान पर रहे। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिंद केसरी, भारत केसरी, भारत भीम तथा उत्तर प्रदेश केसरी जैसी प्रतिष्ठित कुश्ती प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया।

40 वें अखिल भारतीय पुलिस खेल

जूडो और जिम्नास्टिक में बल का अद्वितीय प्रदर्शन

लेख- ए. एन. शर्मा, छाया- सतीश खन्ना



बल की टुकड़ी सलामी मंच के आगे से गुजरते हुए

इस वर्ष के अखिल भारतीय पुलिस खेलों का आयोजन बिहार पुलिस के तत्वाधान में 10 से 17 फरवरी तक किया गया। पटना में आयोजित इन 40 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम का प्रदर्शन आशा के विपरीत निराशाजनक रहा, फिर भी बल की टीम बेस्ट एथलेटिक्स तथा जिमनास्टिक खिताब जीतने में सफल रही। सब इंस्पेक्टर शियोधनन् ने डेक्थलोन तथा विजय कुमार ने जिमनास्टिक में यह खिताब जीता। इस के अतिरिक्त बल की बास्केट बाल, जूडो एवं जिमनास्टिक टीमों ने भी अपनी-अपनी चैंपियनशिप जीत ली। कबड्डी तथा कुश्ती प्रतियोगिताओं में बल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। ओवर आल चैंपियनशिप में के० रि० पू० बल दूसरे स्थान पर रहा। जबकि एथलेटिक्स में उसे पांचवां स्थान प्राप्त हुआ।

इन प्रतियोगिताओं में देश भर के पुलिस संगठनों के महिला और पुरुष खिलाड़ियों ने भाग लिया। इन खिलाड़ियों ने फुटबाल, बालीबाल, कबड्डी जिमनास्टिक, कुश्ती, बास्केटबाल, जूडो, हाकी तथा दौड़ कूद प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा के जौहर दिखाए। इन प्रतियोगिताओं में कुल 1,800 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

14 फरवरी को इन प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ बिहार के मुख्य मंत्री श्री लालु प्रसाद यादव ने किया। इन प्रतियोगिताओं के समापन के अवसर पर भी 17 फरवरी को श्री लालु प्रसाद यादव ही मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इन दोनों ही मौकों पर बिहार पुलिस द्वारा आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

इन प्रतियोगिताओं की दौड़-कूद चैंपियनशिप टाफी सीमा सुरक्षा बल ने जीती, जबकि केरल पुलिस दूसरे स्थान पर रही। महिलाओं की श्रेणी में चैंपियनशिप टाफी बिहार पुलिस के पास ही रही, जबकि के० औ० सु० बल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। सीमा सुरक्षा बल और पंजाब पुलिस को खेलों का संयुक्त विजेता घोषित किया गया।

बास्केट बाल प्रतियोगिता में विजय का सेहरा के० रि० पु० बल के सिर रहा।



श्री शियोधनन को पदक प्रदान करते हुए श्री लालू प्रसाद यादव



बल की विजेता टीम

74 तथा 100 किलोग्राम श्रेणी की कुश्ती प्रतियोगिताओं में भी के० रि० पु० बल ने स्वर्ण पदक जीते। बल को यह सम्मान क्रमशः जय भगवान तथा सुभाष ने दिलाया। जबकि 48 किलोग्राम श्रेणी में के० रि० पु० बल को रजत एवं 52 एवं 68 किलोग्राम श्रेणी में कांस्य पदक प्राप्त हुए।

जिमनास्टिक में के० रि० पु० बल को 2 स्वर्ण, चार रजत एवं एक कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

जूडो में के० रि० पु० बल ने दो स्वर्ण, तीन रजत तथा तीन कांस्य पदक जीते।

एथलेटिक्स में के० रि० पु० बल ने तीन स्वर्ण, एक रजत एवं चार कांस्य पदक जीते। एथलेटिक्स में के० शियोधनन ने पहला स्वर्ण 110 मीटर की बाधा दौड़ में जीता। दूसरा स्वर्ण हैमर थ्रो में ओम प्रकाश ने प्राप्त कि एवं तीसरा स्वर्ण पदक भी के० शियोधनन ने ही डेक्लोन प्रतियोगिता में प्राप्त किया।

रंगरूटों की दीक्षांत परेड

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 पल्लिपुरम में 17 फरवरी, 1991 को रंगरूटों के 24 वें बैच के जवानों की सत्यापन एवं दीक्षांत परेड सम्पन्न हुई। इस मौके पर बल के दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी० आर० कार्तिकेयन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने परेड का निरीक्षण किया तथा उस की सलामी ली। . इस मौके पर जवानों को सम्बोधित करते - हुए श्री कार्तिकेयन ने उन्हें के० रि० पु० - बल की गौरवशाली

परंपरा तथा देश की - एकता और अखंडता को बनाए रखने में - उन के योगदान से अवगत कराया। इस मौके पर केन्द्र के प्रधानाचार्य श्री विनोद सेठ ने नए जवानों को अपने पद तथा कर्तव्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।

इस सत्यापन एवं दीक्षांत परेड में 513 जवानों ने अपने 9 महिने के कठिन प्रशिक्षण को समाप्त करने के बाद भाग लिया। इस प्रशिक्षण में उन्हें आतंकवाद विरोधी, पुलिस विषयों से संबंधित आम प्रशिक्षण, मार्शल आर्ट्स आदि की भी ट्रेनिंग दी गई। 36 सप्ताह के इस प्रशिक्षण में 3 सप्ताह की जंगल ट्रेनिंग भी शामिल थी।

17 फरवरी को ही आयोजित एक अन्य सादे एवं भावभीने समारोह में श्री कार्तिकेयन ने स्वर्गीय कांस्टेबल शिवरमण सी० बी० की मां को एक लाख 25 हजार का एक बैंक ड्राफ्ट भेंट किया। मृतक की आश्रिता को यह अनुदान राशि जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा प्रदान की गई - है। कांस्टेबल शिवरमण सितंबर 1990 में जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों का सामना करते हुए मारे गए थे। इस मौके - पर के० रि० पु० बल के जवान व अधिकारी भारी संख्या में उपस्थित थे।

जोखिम निधि लाभ

फरवरी, 91 माह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 23 मामलों में 8,05,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रत्येक मामले में केन्द्रीय कल्याण निधि और सी० बी० एफ० की 10,000 रुपये की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के 4 मामलों में 60,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

फरवरी, 91 में मृत बल के कार्मिक

माह फरवरी, 91 में के० रि० पु० बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी० आर० पी० एफ० समाचार शोकसंतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां० जे० एंथानी (73 बटा०), कांस्टेबल विनोद कुमार (32 बटा०), कां० श्री किशन (77 बटा०), नायक/फिटर इंदल (93 बटा०), है। कां० मदुरा प्रसाद (45 बटा०), स० उ० नि० रि० आपरेटर रामाधर सिंह (2 सिग० बटा०), इंस्पेक्टर दलीप सिंह (65 बटा०), रंगरुट कां० रमावणा पुजार (100 बटा०), है ० कां० चैन सिंह (18 बटा०), कां० राजबीर सिंह (37 बटा०), कां० युधिष्ठिर (29 बटा०), उपाधीक्षक विशम्भर सिंह (33 बटा०), कां० फतेह सिंह (33 बटा०), नायक राजबीर सिंह (29 बटा०), उपाधीक्षक एस० एन० उपाध्याय (2 बटा०), कां० ज्ञान चंद चौहान (61 बटा०), कां० ओम प्रकाश शर्मा (11 बटा०) एवं कां० ए० डी० माधवी (60 बटा०)। इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार जनवरी माह में 34 बटालियन के नायक रामजन्म प्रसाद की भी मृत्यु हुई।

353 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह फरवरी 1991 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुई 136 मुठभेड़ों में 353 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इन मुठभेड़ों में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं। इस प्रक्रिया में 64 आतंकवादी मारे गए और 6 गंभीर रूप से घायल हुए।

पकड़े गए आतंकवादियों में असम में उल्फा गतिविधियों में संलग्न एक कुख्यात कार्यकर्ता सुनीत प्रसाद और परमिंदर सिंह उर्फ वेत्ता उर्फ लेडी आफ बब्बर खालसा भी शामिल हैं। मारे गये आतंकवादियों में घोला गुट का स्वयंभू जनरल जीता, भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान का स्वंभू ले० जनरल गुरबक्श सिंह, बब्बर खालसा का गुरमीत सिंह, खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर ग्रुप) का तरसेम सिंह उर्फ सीमा, कुख्यात उल्फा कार्यकर्ता मुदुल वोरा तथा खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर ग्रुप) का स्वयंभू जनरल राम सिंह भी शामिल है।

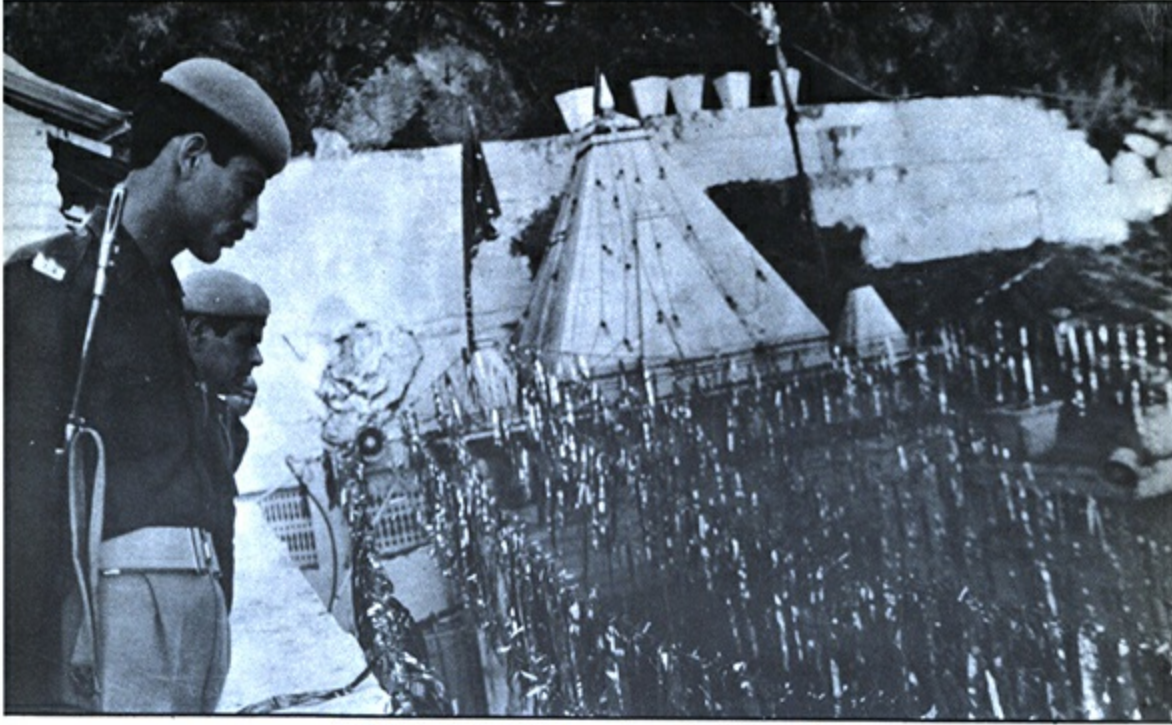
बल के जवानों ने 114 बड़े हथियार भी बरामद किए, जिनमें 38 ए० के० 47 राइफलें, 43 पिस्तौलें, एक ए० के० 74 राइफल, एक ए० के० 94 राइफल, 8 राइफलें, 3 सेल्फ लोडिंग राइफलें भी शामिल हैं। साथ ही भारी संख्या में गोली बारुद भी बरामद किया गया। मगर इन सब के एवज में बल के तीन जवान वीर गति को प्राप्त हुए, जबकि 20 जवान घायल हुए।

15 कार्मिकों के शौर्यता पदक

पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाई गई बहादुरी और साहस के लिए भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेक्टरामन ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 15 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए हैं। उनमें से दो कार्मिकों को राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 13 कार्मिकों को शौर्यवीरता का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। तीन कार्मिकों को यह पदक मरणोपरांत दिया गया है।

राष्ट्रपति का पुलिस पदक 41 बटालियन के कांस्टेबल नौनिहाल सिंह और 19 बटालियन के इंस्पेक्टर राम अवतार को दिया गया है। दोनों को ही यह सम्मान मरणोपरांत दिया गया है।

पुलिस पदक प्राप्त करने वाले का र्मिक है- सब इंस्पेक्टर टी० एस० भाउ (38 बटालियन), कमांडेंट श्री एन. एन मिश्रा (33 बटालियन), कांस्टेबल ऊषा रंजन देव वर्मा (4 बटालियन मरणोपरांत), सहायक कमांडेंट आर० रामन (48 बटालियन) सहायक कमांडेंट एस. एस. संधू (38 बटालियन), उपाधीक्षक पत राम (48 बटालियन), इंस्पेक्टर सी० के० जोनी (48 बटालियन), सब इंस्पेक्टर शादी राम (48 बटालियन), सब इंस्पेक्टर एल. पी लामा (48 बटालियन), कांस्टेबल जालोरा लुसाई (38 बटालियन), हैड कांस्टेबल राजदेव सिंह (19 बटालियन), नायक महावीर सिंह (19 बटालियन) एवं कांस्टेबल सी० येल्ला नागाराजू (19 बटालियन)।



वैष्णो देवी तीर्थ स्थल के रि. गु. बल के जवानों की निगरानी में

पत्रिका सी० आर० पी० एफ० समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आठ न्यूजपेपर्स सैट्रल ब्लॉक के फॉर्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	-	नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	-	वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	-	ए० एन० गर्मा
4. नागरिकता	-	भारतीय
5. पता	-	ब्लॉक-I, सी० जी० ओ० काम्पलेक्स सोधी रोड, नई दिल्ली-3
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	-	उमरुस्त
7. संपादक का नाम, नागरिकता और पता	-	उमरुस्त
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	-	महानिदेशक, के. रि. गु. बल, ब्लॉक-I, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, सोधी रोड, नई दिल्ली-110003

मे ए० एन० गर्मा एतद द्वारा घोषणा करता हूँ कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य है:

31 मार्च, 1991,

ह०

ए० एन० गर्मा

प्रकाशक के हस्ताक्षर

मुख्य सम्पादक: ए० एन० गर्मा। सम्पादक: अनिल गुप्ता। मुद्रक० सी० आर० पी० एफ० प्रेंस, झड़ौदा कला, नई दिल्ली-110072।

मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० गु० बल, ब्लॉक-I सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, सोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० गर्मा।

कम्पोजिंग एवं प्रोसेसिंग - गीतांजलि एडवरटाइजर्स एवं प्रिंटर, एच-26 कैलाश कालोनी, नई दिल्ली-110048

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - iv अंक - iii

मूल्य 1.95 रुपए

31 मई 1991

10 ज्येष्ठ

शक 1913



दिल्ली में चुनाव ड्यूटी पर तैनात बल के कार्मिक

छाया-एस्त. के. खन्ना

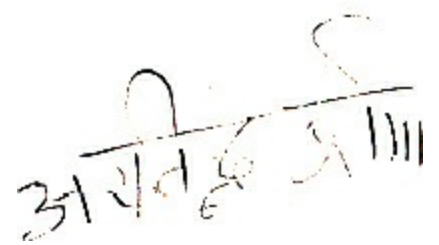
सम्पादकीय

हम समाचार का यह अंक उन दुखद घड़ियों में प्रेस में भेज रहे हैं, जब कि पूरा राष्ट्र पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी की दुखद हत्या के कारण शोक विगलित है।

शासन के लिए यह एक कठिन समय इसलिए भी है, क्योंकि श्री गाँधी की हत्या उस समय की गई, जबकि दसवीं लोकसभा के गठन के लिए होने वाले चुनावों के दो दौर बाकी थे। श्री गाँधी की हत्या के तत्काल बाद मुख्य चुनाव आयुक्त ने 23 और 26 मई को होने वाले चुनावों को स्थगित कर दिया। नए चुनाव कार्यक्रम के अनुसार दूसरे और तीसरे दौर के चुनाव 12 और 15 जून को होंगे।

इस समय हमारी फोर्स का अधिकांश भाग चुनाव ड्यूटी पर तैनात था। बेहद नाजुक स्थितियों और स्थानों को सम्भालने की जिम्मेदारी हम पर थी। हम सतर्क थे। लिहाजा कानून व्यवस्था की स्थिति काफी बड़े स्तर पर काबू में रही। मगर चुनावों के लगभग दो सप्ताह तक के लिए टल जाने से हमारे जवानों की जिम्मेदारी और बढ़ गई। हमारे जवानों ने उस समय बेहद हिम्मत और बहादुरी का परिचय देते हुए कानून और व्यवस्था को बिगड़ने नहीं दिया, जबकि पूरा राष्ट्र एक राष्ट्र नेता की वीभत्स हत्या से स्तब्ध था, आक्रोश से भरा था।

पूरे राष्ट्र के साथ हम भी श्री राजीव गाँधी के आकस्मिक निधन से स्तब्ध और शोक संतप्त हैं, मगर साथ ही हम सजग भी हैं। हम कड़े शब्दों में सार्वजनिक जीवन में पनप रही हिंसा का भी विरोध करते हैं। हमारा अस्तित्व ही इस हिंसा को मिटाने के लिए है। मगर फिर भी कभी-कभी हत्यारों का निशाना सभी दीवारों को भेदता हुआ अपने लक्ष्य तक पहुंच ही जाता है। हमें इससे हतोत्साहित नहीं होना है। आइए इस दुखद घड़ी में प्रण करें कि हम देश को एक ऐसा सुरक्षा कवच देने में अपनी जान तक की परवाह नहीं करेंगे, जिससे टकरा कर हत्यारों की तेज से तेज तलवार भी कुंद पड़ जाए।



(ए. एन. शर्मा)

महत्वपूर्ण पदोन्नतियां

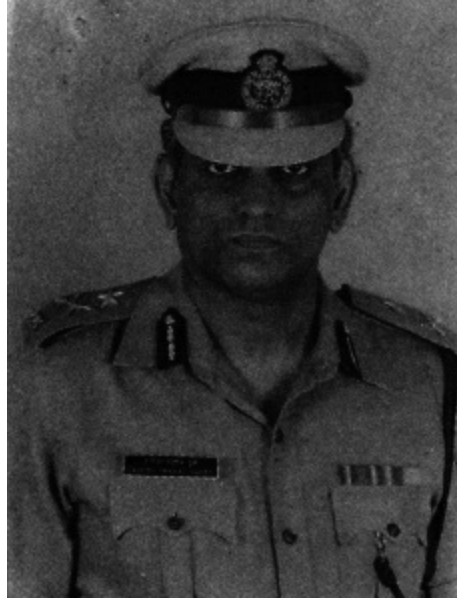
श्री एम. के. सिंह



1967 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के पश्चिम बंगाल कैडर के अधिकारी श्री एम. के. सिंह महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत हो गए हैं, तथा उन्होंने के.रि.पु.बल के महानिरीक्षक (परिचालन) जम्मू-कश्मीर का पद भार संभाल लिया है। अपनी इस नियुक्ति के पूर्व वह बल की कलकत्ता रेंज के उप-महानिरीक्षक थे।

इससे पूर्व भी वह कई महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। उनके कुछ महत्वपूर्ण पदभारों में एस. एस. पी. पुरुलिया, पश्चिम दिनाजपुर तथा बरदवान (प.बंगाल), केन्द्रीय डिवीजन कलकत्ता महानिरीक्षक पुलिस के दक्षिणी तथा दक्षिण उपनगरीय क्षेत्र के डिप्टी कमिश्नर। श्री एम.के. सिंह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 1986 में कलकत्ता रेंज के उपनिरीक्षक के रूप में शामिल हुए।

श्री. एस. सी. चौबे



भारतीय पुलिस सेवा के उत्तर प्रदेश कैडर से 1966 बैच के श्री एस. सी. चौबे को पुलिस महानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत कर दिया गया है, वह बल के केन्द्रीय सेक्टर के महानिरीक्षक होंगे। इससे पूर्व वह के. रि. पु. बल महानिदेशालय में उपनिदेशक (प्रशिक्षण) थे।

श्री चौबे मई 1987 में के.रि.पु. बल परिवार में शामिल हुए। इससे पूर्व उन के कुछ महत्वपूर्ण पदभारों में एस.पी.इटवा, मथुरा, एस.पी. सी.बी.आई. तथा उपमहानिरीक्षक पी. ए. सी. (उ. प्र.) लखनऊ जैसे पदभार शामिल हैं।

श्री जी. पी. द्वे



भारतीय पुलिस सेवा के 1967 बैच के मध्य प्रदेश कैडर के अधिकारी श्री जी. पी. दूबे महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत हो गए हैं तथा उन्होंने के. रि. पु. बल महानिरीक्षक (आपरेशन) अमृतसर पंजाब का पदभार संभाल लिया है। इस पदोन्नति से पूर्व वह के. रि. पु. बल महानिदेशालय में उपनिदेशक (प्रशासन) पद पर नियुक्त थे, वह सागर, ग्वालियर, सियोनी, सिहोर तथा छिंदवाड़ा में पुलिस अधीक्षक पद पर रह चुके हैं।

उनके कुछ अन्य महत्वपूर्ण पद भारों में भोपाल में सी. आई. डी. की स्पेशल ब्रांच, आर्थिक अपराध शाखा में ए. आई. जी. उपमहानिरीक्षक रायपुर, उपमहानिरीक्षक रेलवे (म. प्र.) तथा उपमहानिरीक्षक इंटेलिजेंस। इसके अतिरिक्त वह मध्य प्रदेश शासन में विशेष सचिव गृह विभाग (पुलिस) भी रहे। वह के. रि. पु. बल में 1989 में उपमहानिरीक्षक अजमेर के रूप में शामिल हुए।

श्री एस. एन. माथुर



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 1961 बैच के श्री एस. एन. माथुर महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत हो गए हैं। उन्होंने लुधियाना पंजाब में महानिरीक्षक (परिचालन) का पदभार संभाल लिया है। इससे पूर्व वह के. रि. पु. बल महानिदेशालय में उपनिदेशक (परिचालन) थे। इसके अतिरिक्त उन के कुछ अन्य महत्वपूर्ण पद भारों में सहायक निदेशक (परिचालन) (स्थापना), पूर्वी क्षेत्र के महानिरीक्षक के स्टाफ अधिकारी, मिजोरम, पटना तथा सिक्किम में कमांडेंट और उपनिरीक्षक अगरतला व रायपुर जैसे पदभार शामिल हैं।

ज्ञातव्य है कि श्री माथुर बल में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 1961 बैच के तीसरे अधिकारी हैं, जो कि महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत किए गए हैं। अन्य दो अधिकारी हैं – श्री एम. पी. सिंह एवं श्री के. आर. के. प्रसाद।

श्री भोला नाथ



भारतीय पुलिस सेवा के तमिलनाडु कैडर से 1976 बैच के श्री भोला नाथ उप-महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत हो गए हैं, तथा उन्होंने महानिदेशालय में उप-निदेशक (प्रशासन) का पदभार संभाल लिया है। इससे पूर्व वह महानिदेशालय में ही सहायक निदेशक (स्थापना) थे। विगत में उनके कुछ महत्वपूर्ण पदधारों में तमिलनाडु के राज्यपाल के ए. डी. सी., एस. पी. (सी. आई. डी.) मद्रास, डी. सी. पी. (अपराध) मद्रास तथा दिल्ली स्थित तमिलनाडु स्पेशल पुलिस की 6 बटालियन के कमांडेंट का पदभार शामिल हैं।

विद्यार्थियों की साईकिल यात्रा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल रोहिणी, नई दिल्ली के 15 विद्यार्थियों ने हरिद्वार तथा वापस हरिद्वार से दिल्ली तक की 400 कि. मी. की यात्रा साईकिलों पर तय की।

विद्यार्थियों ने इस साईकिल यात्रा का आयोजन सद्भावना, शांति एवं भाईचारे की भावना से किया। उन्होंने पूरे रास्ते में लोगों को शिक्षा तथा पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षारोपण आदि बातों के विषय में भी जानकारी दी। इन छात्रों को विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सूरज प्रकाश ने 12 मई को विद्यालय परिसर में झंडा दिखा कर विदा किया। ये विद्यार्थी 8 मई 1991 को राजघाट नई दिल्ली वापस पहुंचे, जहाँ उन्होंने राष्ट्रपिता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश के अनुसार इस तरह की यात्रा का उद्देश्य विद्यार्थियों में रोमांच तथा नेतृत्व के गुणों को विकसित करना है। भविष्य में इस

तरह को और यात्राएं भी आयोजित की जाएंगी।

हिंदी कार्यशाला

बल के गुवाहाटी स्थित कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारियों को हिन्दी लिखने में होने वाली झिझक दूर करने तथा नोटिंग ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराने के लिए ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी के परिसर में 19 जनवरी से 7 फरवरी, 91 तक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में ग्रुप केन्द्र के अलावा रेंज कार्यालय गुवाहाटी तथा परिसर में स्थित 87 बटा. बेस अस्पताल-3, क्षेत्रीय डिपो, स्थाई कर्मशाला के 32 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री त्रिलोचन सिंह बाहद, पुलिस उप महानिरीक्षक कोहिमा-गुवाहाटी रेंज ने किया। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में श्री हरि ओम श्रीवास्तव, उप-निदेशक (कार्यान्वयन), पूर्वोत्तर क्षेत्र राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, गुवाहाटी तथा श्री.जी. डी. केशवानी, सहायक निदेशक (टंकन/आशुलिपि), हिन्दी शिक्षण योजना भी अतिथि के रूप में मौजूद थे।

5 फरवरी, 91 को एक परीक्षा भी आयोजित की गई जिसमें कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। 7 फरवरी को समापन समारोह के दिन अहिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। निर्णायक मण्डल द्वारा इस प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित करने की सिफारिश की गई।

सेन्टीनल, हिन्दी दैनिक, गुवाहाटी के कार्यकारी सम्पादक श्री चन्द्रशेखर समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री चन्द्रशेखर ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले क्रमशः एम. सत्यम, कुमारी तिलोत्तमा मुशहारी और श्री सी. के. सुकुमारन को नकद पुरस्कार प्रदान किये।

इसके अतिरिक्त 7 से 19 जनवरी, 91 तक ग्रुप केन्द्र, दीमापुर में भी 10 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला चलाई गई। जिसमें 30 कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पण/आलेखन का अभ्यास कराया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री जयेन्द्र नेगी, अपर पुलिस उप-महानिदेशक ने किया और समापन श्री महाबीर सिंह, सहायक कमांडेंट द्वारा किया गया।



I S E '91

**INTERNATIONAL SECURITY
EXHIBITION
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI
SEPTEMBER 3-7, 1991**

India's exposition on a large scale on
latest security technology.

DISPLAY PROFILE

- Electronic Security Devices
- Fibre optic devices
- Detectors and Sensors
- Counter Espionage Equipment
- Night Vision Devices
- Special Protective Clothing
- Banking Security Equipment

SPONSORED BY

**MINISTRY OF HOME AFFAIRS
(GOVERNMENT OF INDIA)**

BENEFICIARIES

- Public and Private Sector Industries
- Defence Services
- Para Military Forces
- Police Forces
- Civil Aviation
- Banks

ORGANISED BY

**THE TRADE FAIR AUTHORITY OF
INDIA**

**COLLABORATION
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE**

आश्रिताओं को अनुदान



एक विधवा को अनुदान राशि का चेक भेंट करते हुए महानिदेशक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल ने 24 अप्रैल, 91 को कें. रि. पु. बल महानिदेशालय में आयोजित एक सादे एवं भावभीने समारोह में कें.रि.पु.बल के दो कार्मिकों की विधवाओं को अनुदान के चेक भेंट किए। 33 बटालियन के लांस नायक ओंकार सिंह अमृतसर में तथा 54 बटालियन के कांस्टेबल प्रताप सिंह श्रीनगर में आतंकवादियों का सामना करते हुए मारे गए थे। श्री ओंकार सिंह की विधवा श्रीमती ओमवती देवी को पंजाब सरकार ने एक लाख रुपए तथा प्रताप सिंह की विधवा श्रीमती शांता देवी को जम्मू कश्मीर सरकार ने सवा लाख रुपए की यह राशि अनुदान स्वरूप भेंट की है। यह राशि कें.रि.पु.बल की विभिन्न निधियों से मिलने वाली सहायता राशि के अतिरिक्त है।

33 बटालियन के लांस नायक ओंकार सिंह 20 अगस्त, 1990 को अमृतसर जिले के तरनतारन क्षेत्र में तैनात थे, जब उन्हें गांव धोतिया से बड़े स्तर पर आतंकवादी गतिविधियों की सूचना मिली। वह तत्काल अपनी टुकड़ी के साथ वहाँ पहुँचे। पुलिस बल को आते देख आतंकवादी भाग खड़े हुए। ओंकार सिंह ने अपने साथियों के साथ उनका पीछा किया और उन्हें गाँव डोबरी के नजदीक घेर लिया। मुठभेड़ में ओंकार

सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

कांस्टेबल प्रताप सिंह 3 जनवरी, 1991 को श्रीनगर के नौशेरा क्षेत्र स्थित यू. एन. डी. पी. कॉम्प्लेक्स पर अपनी टुकड़ी के साथ तैनात थे, जबकि आतंकवादियों ने पोस्ट पर स्वचालित हथियारों तथा राकेटों से आक्रमण कर दिया। आतंकवादियों का डट कर मुकाबला करते रहे, दुर्भाग्यवश राकेट का एक टुकड़ा उनकी जाँघ के आर पार हो गया। मगर घायल होने के बावजूद उन्होंने आतंकवादियों का पीछा किया। बाद में उन्हें अस्पताल में जाया गया, मगर रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई।

संक्षिप्त समाचार

मोकामघाट में क्लब और बैरक



श्री के. आर. के प्रसाद बैरक का उद्घाटन करते हुए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पूर्वी सैक्टर, कलकत्ता के महानिरीक्षक श्री के. आर. के. प्रसाद ने 19 अप्रैल, 91 को मोकामाघाट में नवनिर्मित मैन्स क्लब तथा एक बैरक का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उप-महानिरीक्षक योगेन्द्र प्रसाद बक्शी, अपर उपमहानिरीक्षक आर. पी. तिवारी तथा अन्य कई गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मेन्स क्लब के निमोण में 15 लाख रुपए तथा बैरक निमोण में 40 लाख रुपये का लागत आयी है।

चंडीगढ़ रेंज प्रथम

1 और 2 अप्रैल, 1991 को ग्रुप केन्द्र पिंजौर, चंडीगढ़ में आयोजित 25वीं अन्तर रेंज फर्स्ट एंड 1991 प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान पर चंडीगढ़ रेंज, दूसरे स्थान पर पटना रेंज तथा दिल्ली रेंज तीसरे स्थान पर रही। इस प्रतियोगिता में बल के 13 रेंजों के प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन ग्रुप केन्द्र पिंजौर के अपर उप-महानिरीक्षक श्री एम. एल. गुलेरिया ने किया।

व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धाओं में पटना रेंज के नायक आर. सी. तिवारी प्रथम रहे, जबकि चंडीगढ़ रेंज के हैड कांस्टेबल प्रेम शंकर द्वितीय तथा मद्रास रेंज के लांस नायक के. के. यादव तीसरे स्थान पर रहे।

माह अप्रैल 91 में मृत बल के कार्मिक

माह अप्रैल 91 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल जसवंत सिंह (71 बटा.) कांस्टेबल/रंगरुट बच्चा लाला (105 बटा.), कुक सलीक राम तिवारी (38 बटा.), नायक जे. सुखयोगी (111 बटा.), उपनिरीक्षक सी. एस. मलाशी (ग्रुप केन्द्र रामपुर) नायक रुपई सोरेन (11 बटा.) कांस्टेबल प्रवेश शर्मा (67 बटा.), निरीक्षक रामस्वरूप (71 बटा.), कांस्टेबल हरबंस सिंह (79 बटा.), कुक कंवर सिंह (8 बटा.) हैड कांस्टेबल कुन्ही कनन (ग्रुप केन्द्र आवडी), हैड कांस्टेबल उम्मेद सिंह (100 बटा.) एवं उपनिरीक्षक एम. बी. राणा (6 बटा.)।

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार अक्टूबर, 1990 में ग्रुप केन्द्र दिल्ली के सफाई कर्मचारी चरण की भी मृत्यु हुई।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह अप्रैल, 91 में मृत्यु के 13 मामलों में कुल 4,55,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार अक्षमता के सात मामलों में कुल 91,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

उपरोक्त राशियों में केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

कें. रि. पु. बल ने 225 आतंकवादी पकड़े

अप्रैल, 1991 माह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने देशभर में 225 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई कुल 103 मुठभेड़ों में 54 आतंकवादी मारे गए। इन मुठभेड़ों में पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त जवानों ने 114 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में 53 ए. के. 47 राइफलें, 27 पिस्तौलें, सात राइफलें, एक ए. के. 50 राइफल, तीन एस. एल.आर., तीन 303 राइफलें, एक रिवाल्वर तथा एक-एक स्प्रिंग लोडिंग गन तथा 9 एम. एम. कारबाइन भी शामिल हैं। साथ ही भारी संख्या में गोली बारुद भी बरामद किया। इन मुठभेड़ों में बल के दो जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 13 जवान गंभीर रूप से घायल हुए।

पांच कार्मिकों को शौर्यता पदक

भारत के राष्ट्रपति श्री आर.वेंकटरमण ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पाँच कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। उन्हें ये सम्मान पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाई गई बहादुरी के लिए दिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

इन पांच कार्मिकों में से चार को राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा एक को शौर्यवीरता का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। राष्ट्रपति के पुलिस पदक का यह सम्मान तीन कार्मिकों को मरणोपरांत दिया गया है।

राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं—हैड कांस्टेबल एम. एस. भंडारी (63 बटालियन), कांस्टेबल पी.आर. अर्जुन (63 बटालियन मरणोपरांत) तथा नायक राम प्रकाश (19 बटालियन मरणोपरांत), जबकि शौर्यवीरता का पुलिस पदक 19 बटालियन के कांस्टेबल पी. गोपालाकृष्णन को दिया गया है।

इन कार्मिकों को यह सम्मान पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाई गई बहादुरी, साहस एवं कर्तव्यपरायणता के लिए दिया गया है। इन कार्मिकों ने अपने कर्तव्य पालन के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं की।

अधिकारी का सम्मान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल रामपुर के उप-महानिरीक्षक श्री सी. एम. पांडेय को कें. रि. पु. बल के महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया है। श्री पांडेय को यह सम्मान बल के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल ने आपरेशनल डयटी के दौरान निभाई गई उत्कृष्ट भूमिका के लिए दिया है।

ज्ञातव्य है कि श्री पांडेय को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक और विशिष्ट

सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त नागालैंड में अपनी सेवाओं के दौरान वह विशिष्ट सेवाओं के लिए राज्यपाल का स्वर्ण पदक भी प्राप्त कर चुके हैं।

आठ कार्मिकों को प्रशंसा डिस्क

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के आठ कार्मिकों को वर्ष 1991 में पंजाब में आतंकवादी गतिविधियों के विरुद्ध उन की सराहनीय भूमिका के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया है।

ये सम्मान पाने वाले कार्मिक हैं:-कमांडेंट महासिंह यादव (73 बटालियन), कमांडेंट एस. एस. तूर (84 बटालियन), सहायक कमांडेंट हरदेव सिंह (66 बटालियन), डी. के. त्रिपाठी (62 बटालियन) निरीक्षक ब्रिजेंदर सिंह (62 बटालियन) तथा हैड कांस्टेबल शिवपूजन सिंह (62 बटालियन)।

साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए शील्ड



उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले में साम्प्रदायिक दंगों के समय कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए के. रि. पु. बल के जवानों की स्थानीय प्रशासन ने एक शील्ड प्रदान की। नगर के पुलिस अधीक्षक से शील्ड प्राप्त करते ३ सिगनल बटालियन के कमांडेंट श्री एस. एम. आहलूवालिया।

कांस्टेबल का सम्मान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल ने बल की 88

बटालियन के कांस्टेबल वेद प्रकाश यादव को महानेदेशक के प्रशंसापत्र से सम्मानित किया है। श्री वेद प्रकाश वर्तमान में विदेश मंत्रालय में प्रतिनियुक्ति पर तैनात हैं तथा मोगाडिस्कियो में वह भारतीय हाई कमीशन में गार्ड ड्यूटी पर तैनात थे। उन्हें यह सम्मान मोगाडिस्कियो में भारतीय दूतावास के बाहर भारी तनाव तथा विपरीत परिस्थितियों में पूरे समर्पण एवं साहस के साथ निभाई गई गार्ड ड्यूटी के लिए दिया गया है।

निबंध प्रतियोगिता जीती

सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद द्वारा आयोजित प्रधानमंत्री की रजत कप निबंध प्रतियोगिता-1990 के प्रथम दो पुरस्कार केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो अधिकारियों क्रमशः सहायक कमांडेंट रामअनुज और सहायक कमांडेंट प्रतापसिंह को प्रदान किए गए हैं।

अंग्रेजी में 'कम्युनिटी पार्टीसिपेशन फार बेटर पुलिसिंग' विषय पर आयोजित इस निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल करने पर श्री रामअनुज को एक हजार रुपए नकद एवं एक ट्राफी प्रदान की जाएगी, जब कि दूसरे स्थान पर रहने वाले श्री प्रताप सिंह को 750 रुपए नकद एवं एक प्रमाण-पत्र दिया जाएगा।

संसार बदलता है / कल के सत्य और उस के पहले के सत्य आज उपयुक्त नहीं हो सकते /

निबंध प्रतियोगिता

डा. भीम राव अम्बेडकर

जीवन और योगदान

के० रि० पु० बल आंतरिक सुरक्षा अकादमी माऊंट आबू ने डा० भीमराव अम्बेडकर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में डा. भीमराव अम्बेडकर 'जीवन और योगदान' विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया था। प्रतियोगिता के हिंदी वर्ग में प्रथम पुरस्कार 10 बटालियन के उपाधीक्षक श्री भानुप्रताप सिंह के निबंध को दिया गया। हम अपने पाठकों के लिए इस निबंध को समाचार के आगामी अंकों में धारावाहिक रूप में छाप रहे हैं। प्रस्तुत है इस अंक में इस निबंध की पहली कड़ी।

इस शताब्दी में सन्त परम्परा को छोड़कर जिन व्यक्तियों ने दलितों के लिए अपने जीवन की बाजी लगा कर उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जागरण के लिए कार्य किया। उन सब में अम्बेडकर जाज्वल्यमान नक्षत्र के समान हमारे समक्ष हैं। कितनी बेबसी, गरीबी और धार्मिक रुढ़ियों से टक्कर लेकर इस व्यक्ति ने जीवन भर उत्पीड़ित लोगों को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाने का प्रयास किया।

अम्बेडकर जीवन भर जिस उद्देश्य के लिए जूझते रहे और जिन लोगों को सामाजिक समता तथा आर्थिक व राजनैतिक अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने अपने जीवन को लगा दिया वे आज भी बहुत अच्छी स्थिति में नहीं हैं। अम्बेडकर और उनका जीवन आज भी समाज के लिए प्रकाश पुन्ज के समान है।

निर्धन बाप का घर और कठोर धार्मिक मान्यतों के बीच से निकल कर जिस प्रकार अम्बेडकर दलितों के त्राता बने यह कोई सरल कार्य नहीं था। चांदी की चम्मच मुँह में लेकर पैदा होने वाले सेठों के बेटे यदि विद्वान बन जायें या विद्वान माँ बाप के घर जन्म लेकर कोई कारखाने खड़े कर ले तो इसमें कहने और सुनने को क्या होता है। इसलिए राहुल सांस्कृतायन कहते हैं “गणिका के पेट से उत्पन्न महर्षि वशिष्ठ और धीमर कन्या सत्यवती नन्दन वेदव्यास ही मुझे भाते हैं। जैमनी और पातण्जिली के पास मेरे लिए क्या रखा है।” जिन ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों में भीमराव ने आँखे खोली थीं, उनमें भीमराव से डा. भीमराव तथा डा. भीमराव से बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर बनना कोई गुड़ियों का खेल नहीं था। हमारे सामने कोई ऐसा अन्य उदाहरण नहीं है जिसने अम्बेडकर के समान कठोर धार्मिक एवं सामाजिक रुढ़ियों से लोहा लिया हो, और विद्वता के शिखरों को छूकर जो जीवन भर दलितों के अधिकारों के लिए जूझता रहा हो।

गोद अभिशाप की स्वप्न त्राता के

14 अप्रैल, 1891

पिता-रामजीराव

माता-भीमाबाई

बालक-भीमराव

मैं 19वीं शताब्दी की वृद्धावस्था की बात कह रहा हूँ। तत्कालीन मध्यभारत के नगर इन्दौर की “महु छावनी” में बालक भीम ने जन्म लिया। माँ के नाम के समान ही बालक का नाम भीमराव निश्चित हुआ।

मैंने कहा है कि बात 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की है। राज्य अंग्रेजों का, सेठों का, महाराजाओं का, जमींदारों का और समाज में पोंगा पन्थी छुआछूत एवं बिगड़े हुए ब्राह्मणवाद का था। वर्ण व्यवस्था का विधान पूर्ण रूप से अपनी चर्म पराकाष्ठा पर था। हिन्दू समाज का एक बहुत बड़ा अंश मन्दिरों के शिखरों के दर्शन करके ही मुक्त हो सकता था। मन्दिरों के द्वार उनके लिए बन्द थे। यह पीड़ित और त्रस्त लोग अन्य व्यक्तियों के साथ अपने हृदय से प्यारे बच्चों को शिक्षा नहीं दे सकते थे। इतिहास

कहता है कि भगवान के मन्दिर, शिक्षा के द्वार, सावधानेक घाट, कुएं और विशेष राजमार्ग तक इनके लिए बन्द थे। ये भी उसी भगवान के पुत्र थे जिनके वे, जिन्होंने यह व्यवस्था बनाई थी परन्तु भगवान स्वयं ही कानों में शीशा डालकर सम्भवतः क्षीर सागर में सोये हुए थे। तो फिर कौन किसकी पूछे? नाई इनके बाल नहीं काटते थे, धोबी इनके कपड़े नहीं धोते थे, किसी भी व्यक्ति के पास से यदि गुजरते थे तो आवाज देनी पड़ती थी, जिसे सावधान करते थे वह ऐसा करता था जैसे बिजली के तार ने छू दिया हो। नहाना पड़ेगा, अपवित्र हो जायेगा, इनकी छाया से भी धर्म के तार टूट जाते थे। ऐसे युग में और ऐसे समाज में जन्म हुआ था भीमराव का। ऐसी परिस्थिति में किसी बालक के भविष्य की क्या कल्पना की जा सकती है।

भीम के जन्म के दो वर्ष बाद ही पिता रामजीराव सेना से रिटायर हो गए और जीवन निर्वाह का साधन केवल पचास रुपए पेंशन रह गयी। परिवार का भरण-पोषण होते न देखकर रामजीराव बहुत चिन्तित रहते थे। चिन्ता उन्हें भीमराव को पढ़ाने-लिखाने की भी थी, परन्तु समाज ने शिक्षा के द्वार तो उनके लिये बन्द कर रखे थे। अन्य बच्चों को स्कूल जाते देखकर भीम बहुत कुढ़ते थे, और कभी-कभी दुखी होकर अपने पिता से पूछते थे कि मुझे स्कूल क्यों नहीं भेजा जाता?

रामजीराव सतारा आ गये। सतारा आकर रामजीराव को बहुत आशा थी कि वह भीम को मनचाही शिक्षा दिला सकेंगे, परन्तु क्रूर मनुष्यों द्वारा बनायी गयी सामाजिक व्यवस्था सतारा में और भी उग्ररूप से सामने आयी। जहाँ भी रामजीराव भीम को लेकर जाते “महार बालक” होने के कारण भीम को प्रवेश न मिलता, इस सबको अबोध भीम विस्फारित नेत्रों से देखता और चुप होकर पिता के साथ घर लौट आता।

लाचार होकर रामजीराव ने एक अंग्रेज अफसर से शिकायत की और अपनी कठिनाई बतायी। अंग्रेज अफसर यह सुनकर द्रवित हो गया कि महार होने के कारण ही स्कूल में प्रवेश नहीं मिलता? उसने स्वयं भीम को एक विद्यालय में प्रवेश दिलाया। भीम गरीबी और बेबसी के कारण लंगोटी लगा कर स्कूल जाते थे। वह अन्य बालकों के साथ डेस्क और बेंच पर नहीं बैठ सकते थे। उन्हें घर से ही टाट बगल में दबाकर स्कूल जाना होता था और जब तक अध्यापक कक्षा में नहीं आते थे, भीम कक्षा के द्वार पर ही बगल में बस्ता, तख्ती और टाट संभाले खड़े रहते थे। अध्यापक के आने पर ही कक्षा में जा सकते थे और उनके लिए पीछे एक ऐसा स्थान बैठने के लिए नियत था कि जहां से बोर्ड नहीं दिखता था। बालक भीम को पैरों पर बैठ कर तथा उचक-उचक कर ही बोर्ड दिखाई पड़ता था। छुट्टी पर सांय घर लौटते समय भीम को टाट स्वयं घर लाना पड़ता था। उन्हें ऐसा भी करने की सुविधा नहीं थी कि वह टाट स्कूल में ही रख सकें। बालक भीम को स्वयं नल पर पानी पीने नहीं दिया जाता था। जब अन्य विद्यार्थियों के साथ आधी छुट्टी में घर से कपड़े में बांध कर लाई गई रोटी भीम खाते तो पानी वह सबके बाद ही पी पाते थे। कोई लड़का टोंटी खोलता तो भीम पानी पीते नहीं तो प्यासे ही रह जाते। कभी-कभी ऐसा होता कि शरारती बच्चे अन्त में टोंटी बन्द करके कक्षा में आ जाते थे। उस दिन भीम दिन भर प्यासे रह जाते थे। घर

स्कूल से दूर था। शाम को ही पानी मिल पाता था।

अब बालक भीम सब कुछ समझने लगे थे। समाज के क्रूर व्यवहार और पिता की गरीबी से वह बहुत खिन्न रहते थे। सतारा स्टेशन पर भीम कुलीगिरी करते थे और पढ़ते थे। इस बीच रामजीराव की नौकरी छूट गयी और वह सतारा से बम्बई आकर बस गये। भीम का वही क्रम यहां भी जारी रहा।

एलफिन्सटन हाई स्कूल

ईसा के सिद्धान्तों पर संस्थापित अंग्रेजों की संस्था। जहां न जाति भेद, न महार और ब्राह्मणों में दुराव, जहां न घृणा न उपेक्षा, जहां-स्नेह, जहां-मानवता, जहां सब इन्सान एक ईश्वर के पुत्र।

जहां पहली बार भीम को हिन्दू समाज की पोंगा पन्थी और कूड़ा करकट वाली संस्कृति के ऊपर ईसा के उदार एवं स्नेहिल सिद्धान्तों की विजय सी होती जान पड़ी। जहां भीम को न टाट ले जाना पड़ता था और न ही पीछे ऐसे स्थान पर बैठना पड़ता था जहां से बोर्ड दिखाई न पड़े। यहां भीम स्वयं टोंटी चलाकर पानी पी सकते थे। न कोई अपमान कर सकता था और न कोई दुराव करता था। चारों ओर स्नेह ही स्नेह, प्रोत्साहन ही प्रोत्साहन, जीवन ही जीवन। भीम के मन के कोने में पड़ी बड़ा व्यक्ति बनने की इच्छाओं को करवट बदलने के अवसर ही अवसर। भीम बहुत अध्ययनशील और पुस्तकों के प्रेमी थे। वह पुस्तक खरीद कर पढ़ते थे, यदि उन्हें यह चुनाव करना होता था कि रोटी खानी है या पुस्तक खरीदनी है तो उनका निर्णय पुस्तक खरीदने का होता था। वह निर्धारित कोर्स की पुस्तकें कम ही पढ़ते थे परन्तु कक्षा में अपना स्थान बनाये रखते थे। वह मेधावी छात्र थे। अध्यापक उन्हें बहुत प्यार करते थे। छात्र मित्र उन्हें स्नेह एवं आदर करते थे।

डबक चाल में भीम के परिवार के पास एक ही कमरा था। अध्ययन के लिए उसने वरनी रोड गार्डन में एक स्थान नियत कर लिया था। जहाँ कि नियमित तल्लीन होकर भीम अध्ययन किया करते थे। स्कूल के बाद भीम का डेरा वहीं होता था। उसी स्थान पर सिटी हाई स्कूल के हेड मास्टर श्री कृष्णजी अर्जुन केल्युष्कर भी अध्ययन करने आते थे। वह भीम की अध्ययनशीलता व लगन को देखकर बहुत प्रभावित थे। श्री केल्युष्कर ने भीम को अपनी पुस्तक “बुद्ध चरित्” दी जिसे भीम ने बड़े मनोयोग से पढ़ा। और भीम बुद्ध के भक्त हो गये।

सन 1907 में भीम ने मैट्रिक पास किया। श्रीकृष्ण जी अर्जुन केल्युष्कर ने रामजीराव से मिल कर भीम को कॉलेज में प्रवेश दिला दिया। भीम ने एफ.ए.पास किया। बी. ए. में प्रवेश के लिए केल्युष्कर जी की कृपा से ही महाराज सयाजी राव गायकवाड़ ने भीम को पच्चीस रुपए मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की।

एफ.ए. पास करने के बाद रामजीराव ने दपोली के स्वर्गीय भील वालाकार की मातृ-पितृ विहीन कन्या रमा बाई से भीम का विवाह कर दिया।

पच्चीस रु.मासिक छात्रवृत्ति से भीम का अध्ययन सुचारु रूप से चलने लगा। भीम

को छात्रवृत्ति मिली, यह महत्वपूर्ण नहीं था, महत्वपूर्ण था कि सयाजीराव गायकवाड़ बड़ोदा के महाराज की कृपादृष्टि इनके ऊपर हो गई थी।

बी. ए. के लिए पाठ्यक्रम में विषय का चुनाव करते समय भीम की इच्छा थी, कि वह संस्कृत विषय ले, परन्तु पोंगा पन्थी जो बचपन से ही भीम का पीछा कर रही थी, इस समय भी भीम के समक्ष आ खड़ी हुई। भीम संस्कृत नहीं ले सके। कॉलेज में संस्कृत के आचार्य, अछूत विद्यार्थी द्वारा संस्कृत पढ़ने की बात गले ही न उतार सके।

बेबस भीम को संस्कृत के स्थान पर फारसी का चुनाव करना पड़ा।

यह अवसर भी भीम के जीवन में ऐसा आया कि जब उनके मन में हिन्दू समाज और कथित हिन्दू-संस्कृति के विरुद्ध विद्रोह की भावना ने भीम को बहुत उद्वेलित किया। ये घटनाएँ भीम के मानस पर हिन्दू समाज के प्रति घृणा और विद्रोह की छाप छोड़ती चली गई।

प्रोफेसर म्यूलर, ईसा के अनुयायी, मानवता एवं भायप के समर्थक भीम को अपने कपड़े देते थे।

प्रोफेसर के. बी. ईरायी, अग्निपूजक पारसी, इन्होंने अध्ययन के लिए भीम को अपना कमरा दे रखा था। शेख मोहम्मद इस्पाहनी, मोहम्मद के भक्त मुसलमान, बड़े प्रेम एवं अपनेपन से भीम को फारसी का ज्ञान देते थे।

बी. ए. पास करके भीम बड़ोदा राज्य की सेवा में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त किये गये। नौकरी तो मिली परन्तु आवास की समस्या उठ खड़ी हुई। होटल वालों ने भी जवाब दे दिया। सयाजी राव गायकवाड़-बड़ोदा रियासत के तत्कालीन राजा।

विद्या-अनुरागी।

उन्हें धुन थी कि अछूत होनहार छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजा जाये। भीमराव पहले ही रियासत की सेवा में थे। आवास की समस्या लेकर वह बम्बई में ठहरे, सयाजीराव को मिले। महाराज ने जैसे ही भीमराव को देखा तो उनका प्रश्न था—“क्या तुम उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमेरिका जा सकते हो?” भीमराव को मानो विश्वसनियता ने पूछा हो—कि मांगों क्या चाहते हो? भीमराव ने एक क्षण सोचने में लगाया। दोबारा सयाजी राव पूछने ही वाले थे कि भीमराव बोले—“मैं सहर्ष तैयार हूँ यदि महाराज भेजने की कृपा करें”।

महाराज ने तुरन्त परामर्श दिया कि तुम शिक्षा मंत्री को छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र भेजो, मैं तुम्हारे लिए अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में लिखा-पढ़ी करता हूँ।

भीमराव इच्छित फल प्राप्त करके कृतज्ञ मन से महाराज को प्रणाम करके लौट आये। शिक्षा मंत्री को प्रार्थना पत्र भेजा। भीमराव को तीन वर्ष के लिए साढ़े ग्यारह पौंड मासिक की छात्रवृत्ति 15 जून सन् 1913 से 14 जून सन् 1916 तक प्राप्त हुई। केवल एक छोटी सी शर्त थी कि भीमराव अध्ययन करके दस सालों तक रियासत की सेवा में रहेंगे। भीमराव को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी, और रोजगार की सुरक्षा हुई।

कोलम्बिया विश्वविद्यालय,

21 जुलाई 1913,

भीमराव ने अर्थशास्त्र मुख्य विषय लेकर एम.ए. में प्रवेश लिया। कौन कल्पना कर सकता था कि भारत में सबसे अधिक शोषित, त्रस्त और उपेक्षित जाति का कोई निर्धन विद्यार्थी एक दिन संसार के सबसे बड़े विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करेगा।

अस्पृश्यता के अभिशाप से त्रस्त एवं आहत अभिमान लेकर भीमराव अमेरिका गये थे। मानवता के सुरभित, विज्ञान से समुन्नत अमेरिका के स्वतंत्र वातावरण में भीमराव का हृदय-कमल खिल उठा और प्रतिभा चमक उठी।

अमेरिका में वे सभी आकर्षण थे जिससे युवा हृदय भीम अध्ययन से हटकर इधर-उधर भटक सकते थे, परन्तु अध्ययनशील भीम ने अमेरिका पहुंचकर अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए अध्ययन एवं मनन में ही समय बिताया। पुस्तकों का अध्ययन और सुन्दर विषयों पर पुस्तकों का संग्रह ही भीम का व्यसन था। वह विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के अतिरिक्त कोलम्बिया के अन्य पुस्तकालयों में जाते, पुस्तकें पढ़ते और सार ग्रहण करने के लिए नोट्स तैयार करते। बाजार में पुरानी पुस्तकों की दुकानों से वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार पुस्तकें खरीदते भी थे, परन्तु पैसे की कठिनाई उन्हें सदैव ही बनी रहती थी।

जब सारा संसार सोता था, केवल आकाश के तारे जागते थे उस समय भीम अपने भविष्य के रेखाचित्र बनाया करता था। वह रात्रि में सोचते थे और प्रातःही उस योजना पर कार्य आरम्भ कर देते थे।

भीम बहुत मननशील और गंभीर थे। बुद्ध संबंधित पुस्तकें खोज कर बड़े मनोयोग से पढ़ते थे। इसी बीच उन्हें बौद्ध धर्म के प्रति एक आकर्षण सा रहने लगा था। - जारी

ज्ञान रत्न

संस्कृति का मतलब है – मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता

जीवन सदैव समझौते के लिए विवश करता है

दूसरों की गलतियों की आलोचनाएं की जाएं, लेकिन हमें अपनी तरफ भी जरूर देखना चाहिए

इंसान की असली दौलत उस की मेहनत है

आपका स्वास्थ्य

बवासीर और उसका इलाज

डा. जी. एस. सोनी (डी. एल. एम. एस.)

बवासीर के इलाज के बारे में जानने से पहले यह जानना बहुत जरूरी है कि बवासीर की बीमारी क्या है? यह कितने प्रकार की होती है व इस बीमारी के होने के कारण व लक्षण क्या हैं? यही नहीं यह मालूम करना भी अत्यन्त आवश्यक है कि इलाज के अलावा इसको ठीक करने के लिये क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिये।

यह रोग परम्परागत भी हो सकता है ऐसे व्यक्तियों को भी हो सकता है जो आराम तथा ऐश्वर्य का जीवन बिताते हैं। यह बीमारी दो प्रकार की होती है—

रक्त युक्त बवासीर, तथा बिना रक्त के बवासीर।

इस बीमारी का गर्भ श्लेष्मा पैदा करने वाले, चिकने और मीठे भोजन व मीठे पदार्थों का उपयोग करने वालों पर आक्रमण होता है। बवासीर में पहले मलाशय में मस्से पैदा होते हैं जो फूल कर बड़े हो जाते हैं। रक्त युक्त बवासीर में इन मस्सों में रक्त या खून गिरने लगता है। मलाशय का मध्य या बीच का भाग एक-एक शंख जैसा होता है उसमें चक्र क्रमशः ऊपर, मध्य और नीचे हुआ करते हैं। इन तीन चक्रों के अन्दर ही बवासीर स्थित होता है। ऊपर का चक्र वायु को स्थलित करता है नीचे का चक्र मल वायु का त्याग कर पहले के समान मलाशय को ढक देता है।

ऊपर लिखे तीनों चक्रों में से बाहर के चक्र में पैदा होने वाली बवासीर प्रायः जल्दी ठीक हो जाती है मगर ठीक होने में कुछ समय लगता है। किन्तु सबसे अन्दर के चक्र में पैदा होने वाला रक्त युक्त बवासीर का ठीक होना असम्भव तो नहीं मगर कठिन अवश्य होता है।

यह रोग दूसरे कई रोगों के कारण भी पैदा होता है। जैसे—उन फोड़ों के कारण जो पाकाशय में पैदा हो जाया करते हैं। यकृत या लीवर संबंधी रोगों में जो जोड़ने वाली नाड़ी में बाधा पैदा करते हैं। फेफड़ों संबंधी रोगों में, जिनके कारण धमनियों में बाधा पड़ जाती है या वह नष्ट हो जाती हैं। हृदय संबंधी रोगों में, जिनके कारण रक्त वाहिनी नालियों में रक्त अधिक हो जाता है। पेट की नालियों और धमनियों के फूल जाने से, जिसका कारण रोगी का अत्यधिक शराब, काफी और चाय का प्रयोग या उसका काम अत्याधिक एक ही जगह बैठने से होता है। शौच के समय मलाशय पर बहुत अधिक जोर डालना, पैरों को दबा-दबा का मल निकालना, पेट का दर्द आदि भी इसके कारण हो सकते हैं।

इस बीमारी के मुख्य लक्षण—रोग के आक्रमण के बाद रोगी को कब्ज रहने लगना तथा भोजन को ठीक से नहीं पचा पाना हैं।

शरीर में दर्द होने लगता है।

पाकाशय का कार्य शिथिल पड़ जाता है।

पेट में गोला और अफारा होकर दर्द रहने लगता है।

सिर प्लीहा, कमर, जांघ तथा पेट में दर्द रहने लगता है।

मस्से कठोर लाल-लाल पेशियों और मलाशय के मुँह पर पैदा हो जाते हैं। अपच आरम्भ हो जाता है। छाती में दर्द होने लगता है।

रक्तायुक्त बवासीर में:-

बवासीर के मस्सों में रक्त निकलता रहता है और कभी-कभी तो एक तेज धारा के रूप में खून का फबारा सा भी फूटने लगता है। ज्यादा रक्त अधिक गिरन से कमजोरी आ सकती है। मलाशय से दूषित वायु का पूरी तरह से निकलना कठिन हो जाता है। इस बीमारी का इलाज कई प्रणालियों द्वारा किया जा सकता है जैसे एलोपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी तथा होम्योपैथी। यहाँ पर हम होम्योपैथी द्वारा उपचार की विधि बतायेंगे।

होम्योपैथी के इलाज की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें दवा रोगी को उसकी अवस्था व लक्षण के मुताबिक दी जाती है। इसमें उपचार सस्ता तथा बिना आप्रेशन के होता है। कहते हैं कि इस उपचार से बीमारी जड़ से नष्ट हो जाती है। इस बीमारी में मुख्यतः काम आने वाली दवायें हैं:-

ऐक्के ऐकोनाइट, एण्टिम क्रूड, ऐपिस, आर्सेनिक, बेलोडोना, कल्केरिया कार्वद, केमोमिला, वाईना, ग्रेफाईट, हेमामेलिस, होपर सॅलफ, लाईको पोडियम, तथा नक्शे वोनिका।

आरम्भिक स्टेज में एकोनाइट काफी लाभप्रद हो सकती है। साथ ही बेलोडोना तथा नक्शे वोनिका भी इस रोग में काफी लाभप्रद है। बवासीर के मस्सों को नरम तथा दर्द को कम करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि रोगी को हमेशा चिकित्सक की सलाह लेकर ही दवा लेनी चाहिये। उपरोक्त दवाईयाँ सिर्फ उदाहरण के तौर पर लिखी गई हैं। दवाई व उसकी मात्रा सिर्फ चिकित्सक ही तय कर सकता है न कि रोगी। चिकित्सक आवश्यक होने पर खाने की दवा के साथ-साथ मलाशय में लगाने की भी दवा दे सकता है। चिकित्सा के अलावा यह भी बहुत आवश्यक है कि रोगी जहाँ तक हो सके कब्ज मुक्त रहे।

चूँकि बवासीर एक घातक बीमारी है अतः रोगी को बिना समय बर्बाद किये इसके उपरोक्त लक्षण के मालूम होने पर शीघ्र ही चिकित्सा करवानी चाहिये व खाने-पीने व रहन-सहन में पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिये ताकि इस रोग को आगे बढ़ने से रोका जा सके।

ये किसका खून है?

ये किस का, किस का खून है?
ये कैसा कत्ले आम है?
ये कैसा इन्तकाम है?
हिंदु का या, मुसलमान का है,
सिख का या ईसाई का है?
खेल होनी खेल रही है,
हर और ही विनाश है,
ये कैसा अंधकार है?
जलते मकां की लौ लाल है,
बदले की आग भी लाल है,
ये लाल जो कटे पड़े है,
ये हिंदुस्तान के लाल है।
धरती शर्म से लाल है।
ये किसका खून है?

— रमा सेठ

मनोरंजन

सी. आर. पी. की आन

सी. आर. पी. दिवस का अवसर
दिन आज खुशी का आया है
इस बल के हर सदस्य ने
खुशियों का दीप जलाया है।
कोने-कोने से पेड़ लगे
ये तो एक क्यारी है,
भांति-भांति के फूल खिले

वह प्यारीं सीं फुलवारीं है।
देश के कोने-कोने में
यह कानून व्यवस्था करती है
देश के हर व्यक्ति की,
सुरक्षा का दम भरती है।
क्या कश्मीर क्या असम समस्या
चाहे मसला खालिस्तान है,
देश को खण्डित ना होने दे
यही सी. आर. पी. की आन है।
देश के सभी धर्मों का
करते हम सभी, सम्मान हैं
वो चाहे बाईबल हो या ग्रन्थ साहब,
चाहे गीता या कुरान है,
बस एक शब्द ही अहम् है,
हर एक सदस्य की जुबान पर,
सब कुछ न्यौछावर कर देंगे,
हम सी. आर. पी. की शान पर।

रमेश चन्द्र यादव

स. उ. नि. (लि)

महानिदेशालय, के. रि. पु. बल,

लेखा अनुभाग



के. रि. पु. बल जवानों की निगरानी के मत केंद्र

मुख्य सम्पादक: ए० एन० शर्मा। सम्पादक: अनिल गुप्ता।

वरिष्ठ छायाकार: सतीश कुमार खन्ना

मुद्रक:- सी० आर० पी० एफ० प्रेस, झड़ीदा कला, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-I सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।

कम्पोजिंग एवं प्रोसेसिंग - गीतांजलि एडवरटाइजर्स एवं प्रिंटर्स, एच -26, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - iv अंक - iv

मूल्य 1.95 रुपए

30 जून 1991

9 आषाढ़

शक 1913



महानिदेशालय में कलर फोटो लैब का उदघाटन करते महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री अजय गज शर्मा।

छाया-एस. के. खन्ना

सम्पादकीय

दसवीं लोकसभा के चुनाव के बाद केंद्र में नयी सरकार का गठन हो गया यह चुनाव कई कारणों से याद रखे जाएंगे। चुनाव के दौरान श्री राजीव गांधी की हत्या तथा उसके कारण लगभग 20 दिन बाद तक के लिए चुनाव स्थगित कर देने से हमें अधिक समय तक मुस्तैदी से कार्य निर्वह करना पड़ा।

भयंकर साम्प्रदायिक तनाव और श्री गांधी की हत्या के बाद देश में गुस्से की लहर के कारण इन चुनावों में कानून और व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौतियाँ पैदा हो गई थीं। देश के सुरक्षा बलों-जिस का कि के.रि.पु.बल एक बड़ा हिस्सा है-ने इन चुनौतियों का डट कर मुकाबला किया और मई जून की चिलचिलाती धूप में अपने कर्तव्य को बाखूबी निभाया।

पिछले कुछ महीनों से देश की कानून और व्यवस्था में काफी सुधार हुआ है। देशव्यापी तनाव काफी ढीला पड़ा है। मगर हमारे जवानों के लिए विश्राम का समय अभी दूर है।

पंजाब में हमने कई बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की, मगर इन उपलब्धियों की कीमत हमारे जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दे कर चुकाई है। इसी तरह कश्मीर की वादियों में सफेद बर्फ पर झलकते हमारे जवानों के लहू के लाल छींटे जहाँ हमारी कुर्बानियों की मिसाल हैं, वहीं आतंकवादियों और देशद्रोही तत्वों के लिए ललकार और चुनौती भी। हमें अपने जवानों पर गर्व है, जहाँ हम उनकी उपलब्धियों पर आज सीना ताने खड़े हैं। वहीं उनकी शहादतों पर सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ हम भी श्रद्धानत हैं।

अंत में एक बात और, हमारा भरपूर प्रयास रहता है कि हम आप को समाचार के अंक निश्चित समय पर दे पाएं, मगर कुछ तकनीकी कारणों से इन के प्रकाशन में कुछ समय का विलम्ब होता रहा है। अब इन समस्याओं को सुलझा लिया गया है और आशा है कि भविष्य में आप को समाचार के अंक निश्चित समय पर मिल पाएँगे।

समाचार के अगले अंक से (अगस्त 1991) हम अपने पाठकों के लिए एक नया स्तम्भ शुरू करने जा रहे हैं। इस स्तम्भ में पाठकों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी सवाल जवाब के रूप में होम्योपैथी विधि द्वारा दी जाएगी।

पाठक अपनी समस्याएं सीधे सम्पादक सी.आर.पी.एफ. समाचार को भेज सकते हैं।

राजीव गांधी

(ए. एन. शर्मा)

डा० दीपा मेहता



डा० दीपा मेहता

डा० (श्रीमति) दीपा मेहता ने 31 मई, 1991 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में उप-निदेशक (स्थापना-1) का पद भार संभाल लिया है।

डा० दीपा मेहता भारतीय पुलिस सेवा के 1977 बैच व हरियाणा काडर की हैं। के.रि.पु.बल में आने से पूर्व वह एस.एस.पी.गुड़गाँव, रिवाड़ी तथा महेन्द्रगढ़ रह चुकी हैं।

इसके अतिरिक्त वह पुलिस ट्रेनिंग कालिज मधुबन में ए.आई.जी. (प्रशासन तथा तकनीक), प्रिंसिपल तथा एस.पी.विजिलेंस भी रह चुकी हैं।

राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित डा० दीपा मेहता को उनके शोध प्रबंध 'पुलिस एडमिनिस्ट्रेशन-ए केस स्टडी ऑफ हरियाणा' के लिए पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की गई है।

डा० दीपा मेहता ने 1987-88 में ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ वेल्स में "सोशल पॉलिसी एंड प्लानिंग" विषय पर एक वर्ष का प्रशिक्षण कोर्स भी किया है।

श्री बी.एल. टकियार



श्री बी.एल. टकियार

श्री बी.एल. टकियार ने के.रि.पु.बल महानिदेशालय में उपनिदेशक (प्रशासन) का पद भार संभाल लिया है। श्री टकियार के.रि.पु.बल में 1970 में उपाधीक्षक के रूप में शामिल हुए। भूतपूर्व सैन्य अधिकारी श्री टकियार सी.टी.सी. -1 नीमच में सहायक प्रधानाचार्य (टेक्निकल विंग-एम.टी.) रहे हैं। 1986 में कमांडेंट के पद पर पदोन्नत होने के बाद उन्होंने 67 बटालियन की कमान संभाली और पंजाब, मिजोरम तथा श्रीनगर में कार्य किया।

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित श्री टकियार ने होम्यो एवं इलैक्ट्रोपैथी में शोध किया है। सेना में कमांडो प्रशिक्षण प्राप्त श्री टकियार ने राजनीति शास्त्र और समाज विज्ञान में एम.ए. तथा विधि स्नातक की डिग्री भी ली है। श्री टकियार को अध्ययन और लेखन में विशेष रुचि है।

जोखिम निधि लाभ

माह मई, 1991 में मृत्यु के 24 मामलों में के.रि.पु.बल जोखिम निधि से 84,00,00 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इस में प्रति मामला 10,000 रुपए केंद्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है। इसी प्रकार अक्षमता के पांच मामलों में कुल 75,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।



I S E '91

**INTERNATIONAL SECURITY
EXHIBITION
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI
SEPTEMBER 3-7, 1991**

India's exposition on a large scale on
latest security technology.

DISPLAY PROFILE

- Electronic Security Devices
- Fibre optic devices
- Detectors and Sensors
- Counter Espionage Equipment
- Night Vision Devices
- Special Protective Clothing
- Banking Security Equipment

SPONSORED BY

**MINISTRY OF HOME AFFAIRS
(GOVERNMENT OF INDIA)**

BENEFICIARIES

- Public and Private Sector Industries
- Defence Services
- Para Military Forces
- Police Forces
- Civil Aviation
- **Banks**

ORGANISED BY

**THE TRADE FAIR AUTHORITY OF
INDIA**

**COLLABORATION
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE**

महानिदेशालय में कलर लैब



कलर लैब का उदघाटन करते हुए महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री अजय राज शर्मा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय की जन संपर्क शाखा में एक कलर फोटो लैब की स्थापना की गई है। इस लैब का उद्घाटन महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री अजय राज शर्मा ने 5 जून, 1991 को किया। इस लैब की स्थापना हो जाने से अब रंगीन फोटोग्राफ अपनी इस लैब में ही तैयार किए जा सकेंगे। इस लैब के अतिरिक्त जन संपर्क शाखा में ही एक फोटो स्टूडियो की भी स्थापना की गई है।

मोटर वाहन प्रतियोगिताएं

अन्तर रेंज मोटर वाहन प्रतियोगिता 1991 का आयोजन 25 से 29 अप्रैल, 1991 तक ग्रुप केंद्र रामपुर में किया गया। इस प्रतियोगिता में बल की 12 रेंजों की विभिन्न टीमों ने भाग लिया। रामपुर रेंज के नायक चालक विशम्भर सिंह और कांस्टेबल चालक सत्यबीर सिंह 137 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रहे। हैदराबाद रेंज के नायक चालक एन.एल. किंदु और कांस्टेबल चालक महिंदर सिंह 129 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रहे, जबकि नीमच रेंज के कांस्टेबल धर्मवीर सिंह और कांस्टेबल बी.टी. गुप्ता 127 अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहे।

इस प्रांतीयोगेता के आधार पर नायक विशम्भर सिंह, कांस्टेबल धमवीर सिंह, कांस्टेबल रतन सिंह तथा कांस्टेबल महिंदर सिंह का चयन केंद्रीय मोटर परिवहन टीम के लिए कर लिया गया।

86 बटालियन को ट्राफी

7 जून, 1991 को एक सादे किंतु आकर्षक समारोह में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ने वर्ष 1990 के लिए सर्वोत्कृष्ट बटालियन ट्राफी दिल्ली स्थित 86 वीं बटालियन के कमांडेंट श्री डी.के.खुराना को प्रदान की।

86 वीं बटालियन जून, 1985 में गांधीनगर में खड़ी की गई थी। 6 वर्ष की अवधि में इसने गोवा, हरियाणा, चंडीगढ़ और पंजाब में उत्कृष्ट कार्यकुशलता का परिचय दिया। यूनिट ने शौर्यता के लिए 3 पुलिस पदक, सराहनीय सेवा के लिए 4 पुलिस पदक और महानिदेशक के 4 प्रशंसा डिस्क अर्जित किये हैं।

इस अवसर पर श्री गिल ने वर्ष 1990-91 के लिए महानिदेशक का प्रशंसा डिस्क झड़ौदा कलां, नई दिल्ली के अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री बी.एस. रेखी को प्रदान किया। यह डिस्क उनको के.रि.पु.बल में उनके नूतन, सृजनात्मक और उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

इस समारोह में के.रि.पु.बल के अनेक वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

तीन कार्मिक सम्मानित

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री के. पी.एस. गिल ने इस वर्ष की गणतंत्र दिवस में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बल के तीन कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया है। ये सम्मान पाने वाले कार्मिक हैं:-70 बटालियन के सहायक कमांडेंट ब्रिजेंदर सिंह, 75 बटालियन के उपाधीक्षक रविदीप सिंह साही और ग्रुप केंद्र बनतालाब के इंस्पेक्टर (बैंड) पी. एस. थापा।

नौ कार्मिक सम्मानित

कें.रि.पु. बल के नौ कार्मिकों को वर्ष 1991 में पंजाब और जम्मू कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों के विरुद्ध उनकी सराहनीय भूमिका के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया है।

ये सम्मान पाने वाले कार्मिक हैं:-द्वितीय कमान अधिकारी ओ.डी. माथुर (5 बटा.) एवं जयपाल सिंह (66 बटा.), सहायक कमांडेंट ए.शानमुगम (99 बटा.), पुलिस उपाधीक्षक राकेश चन्द्र (5 बटा.) एवं वी.के. कुन्दाल (60 बटा.), निरीक्षक तरमेल सिंह (64 बटा.), उपनिरीक्षक छतर सिंह (54 बटा.), हैड कांस्टेबल नेमी चंद (64 बटा.), सिपाही सालिब राम पाटिल (64 बटा.)।

कें.रि.पु. बल के दो कार्मिकों को शौर्यता पदक

भारत के राष्ट्रपति श्री आर.वेंकटरामन ने चतुर्थ बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के हैड कांस्टेबल बालक राम तथा नायक कमलेश कुमार को शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया है। उन्हें यह सम्मान पंजाब में आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ते हुए दिखाई गई उत्कृष्ट वीरता, अपूर्व साहस और उच्च कोटि की कर्तव्य-परायणता के लिये दिया गया है।

इन कार्मिकों ने अपने कर्तव्य पालन के लिये अपनी जान की भी परवाह नहीं की। उपरोक्त सम्मान उन्हें उनकी इस कार्यकुशलता के लिए प्रदान किया गया।

नीति वाक्य

आजादी के मायने यह नहीं हैं कि हर एक आदमी आजादी के नाम पर बुरा काम करे।

आश्रिताओं को अनुदान



अनुदान ग्रहण करने वाली आश्रिताओं से बात करते महानिदेशक श्री के.पी.एस.गिल

27 जून 1991 को के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ने एक सादे एवं भावभीने समारोह में के.रि.पु. बल के तीन शहीद कार्मिकों की विधवाओं को, जिन्होंने राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, एक लाख पच्चीस हजार रूपए के अनुग्रह अनुदान (एक्स ग्रेसियां पेमेंट) के चेक प्रत्येक को भेंट किये। यह राशि जम्मू कश्मीर सरकार से प्राप्त की गई तथा के.रि.पु. बल की विभिन्न निधियों से मिलने वाली सहायता से भिन्न है।

यह अनुदान स्वर्गीय सहायक कमांडेंट श्री दीवान सिंह उपनिरिक्षक चन्द्रभान तथा हवलदार ईश्वर सिंह की विधवाओं ने प्राप्त किये।

समारोह में बोलते हुए श्री गिल ने के.रि.पु. बल के शहीद कार्मिकों को अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की और कहा कि उन शहीदों की आहुति के.रि. पु. बल में सदैव गर्व और इज्जत से याद की जाएगी। इन्होंने विश्वास प्रगट किया कि के.रि. पु.बल शहीद कार्मिकों के परिवार को हर-सम्भव सहायता देता रहेगा।

संक्षिप्त विवरण जिनमें तीन कार्मिक शहीद हुए इस प्रकार है: सहायक कमांडेंट श्री दीवान सिंह (98 बटालियन) जो कि एक माने हुए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के

पहलवान थे। 11 मार्च 1991 को श्री-नगर के पास आतंकवादियों द्वारा बिछाए हुए जाल में फंस गये और उनकी गोलियों के शिकार हो गये, यद्यपि उनके दल ने बड़ी बहादुरी से आतंकवादियों का सामना किया और तीन आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया और एक को पूरी तरह घायल कर दिया फिर भी वह अपने को नहीं बचा सके। द्वितीय घटना में 89 बटालियन के उप-निरिक्षक चन्द्रभान 16 मार्च 1991 को श्रीनगर से 20 किलोमीटर दूर एक गाँव के पास आतंकवादियों की घात के शिकार हो गये। इसी तरह तीसरी घटना में 27 मार्च 1991 को 60वीं बटालियन के हवलदार ईश्वर सिंह आतंकवादियों से जूझते हुए वहीं रीना चौक के पास शहीद हो गये।

माह मई, 91 में मृत बल के कार्मिक

माह मई 1991 में बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई। सी.आर.पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना करता है।

वाटरमैन ए.पी. अथवाले (45 बटा.) कां. /ड्राइवर मोहम्मद महमूद (70 बटा.) कां. निर्मल सिंह (58 बटा.) कां. अलफुद्दीन (58 बटा.), कां. साबिर खान (गु.के.नागपुर), कां. /रे.आ. जसपाल सिंह (सिग. बटा.), नायक आर.एम.राई (81 बटा.) नायक सूबेदार सिंह (82 बटा.), कां.टी.जोस कुट्टी (91 बटा.), कां. शेख उस्मान (81 बटा.), कां.अश्वनी कुमार(23 बटा.), कां. विजयपाल सिंह (महानिरीक्षक परिचालन कार्यालय, पंजाब) और कां. बख्तावर (50 बटा.) इस के अनुसार अप्रैल, 91 माह में 128 बटा. कें.कां/रंगरुट दुर्गा प्रसाद सारंगी की भी मृत्यु हो गई।

179 आतंकवादी गिरफ्तार

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह मई 1991 में देश भर में 179 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई कुल 98 मुठभेड़ों में 87 आतंकवादी मारे गए तथा 10 गंभीर रूप से घायल हुए। इन मुठभेड़ों में पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं। मारे गये आतंकवादियों में भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान का स्वयंभू जनरल गुरमत सिंह भोजा, खालिस्तान कमांडो फोर्स का स्वयंभू ले. जनरल बलदेव सिंह, खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट का ले. जनरल रविंद्र सिंह, बब्बर खालसा का ले. जनरल बलदेव सिंह जिसके सिर पर पांच लाख का इनाम था तथा भिंडरावाले टाइगर फोर्स आफ खालिस्तान का लखविंदर उर्फ लक्खा शामिल हैं। इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 78 घातक हथियार बरामद किए, बरामद हथियारों में 49 ए.के.47 राइफलें, दो ए.के.74 राइफलें, एक ए.के.73 राइफलें, 47 पिस्तौलें, चार रिवाल्वरें, दो जी.पी.एम.जी. तीन राकेट लांचर, तीन एस.एल.आर., दस 303 राइफलें, एक स्पिनर राइफल, ए.के.56 राइफल, एक ए.के.97 राइफल, छः राइफलें तथा दो असाल्ट राइफलें भी शामिल हैं। इस के अतिरिक्त भारी संख्या में गोली बारुद भी बरामद किया गया।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल को अपने 6 बहादुर जवानों की जान से हाथ धोना पड़ा, जबकि 23 जवानों गंभीर रूप से घायल हुए।

राशन भत्ते में बढ़ोत्तरी

भारत सरकार के एक आदेश के अनुसार कें.रि.पु बल, भा.ति.सी.पु.सी.सी.पु, बल तथा आई.बी.के गैर राजपत्रित कर्मचारियों के राशन भत्ते को बढ़ा दिया गया है। अब बल के कार्मिकों को राशन भत्ते के रूप में कुल 267 रुपए प्रति माह मिलेंगे। पहले यह राशि 259 रुपए थी। यह बढ़ी हुई राशि 1 अप्रैल, 1990 से देय है।

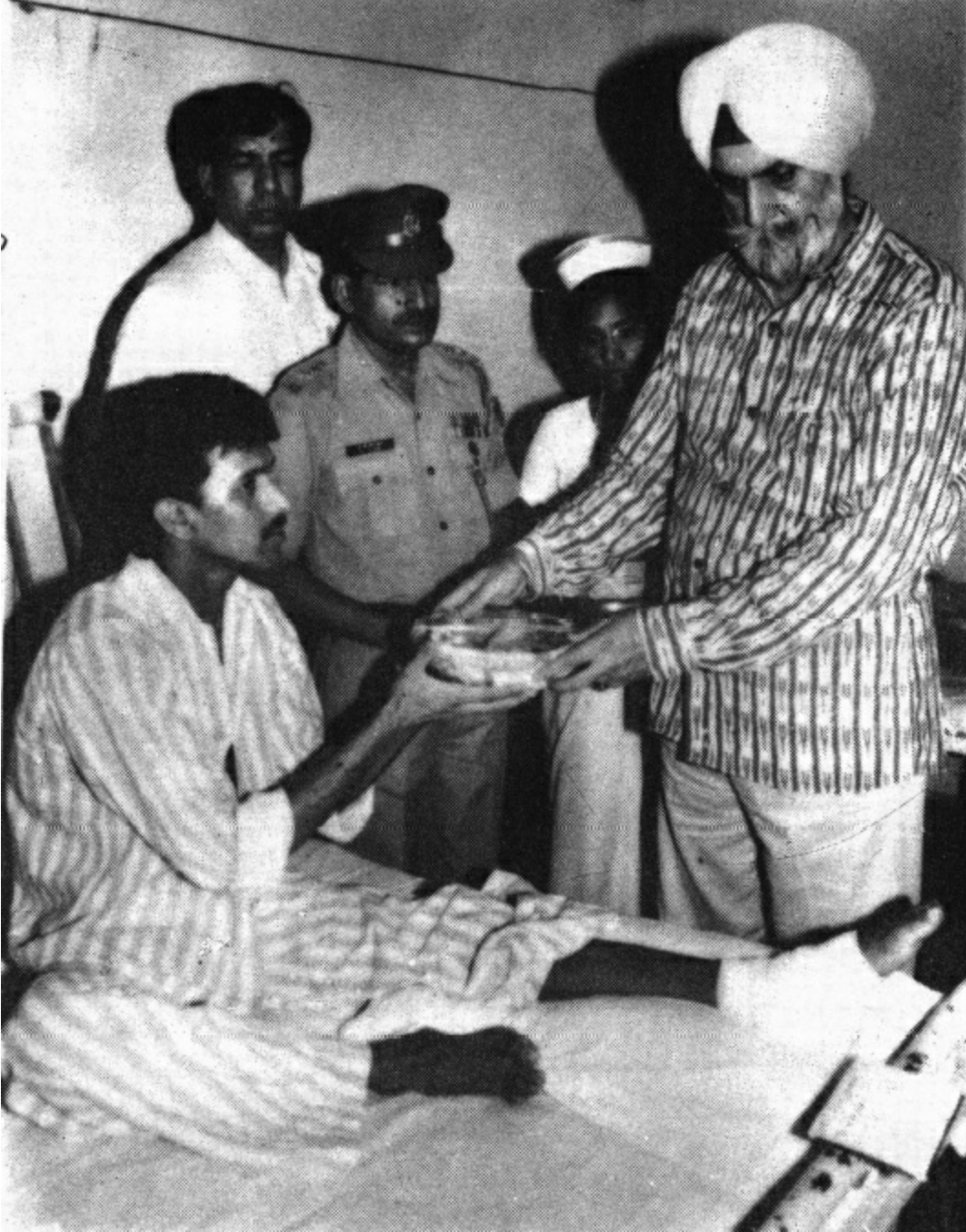
29 बटा. का स्थापना दिवस

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 29 बटा. ने 15 मई, 1991 को रामबाग, श्रीनगर में अपना स्थापना दिवस मनाया। यह बटालियन पंजाब केरल, आंध्र-प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, मणिपुर, दिल्ली और असम में अपनी कार्यकुशलता का भरपूर परिचय देने के बाद कश्मीर में तैनात है। अपने 24 साल के कार्यकाल में इस बटालियन ने आतंकवाद विरोधी मुहिम में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इस बटालियन के तीन कार्मिकों को राष्ट्रपति के पुलिस पदक, तथा 9 कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।

हिंदी डिक्शन प्रतियोगिता

1990-91 के दौरान बल के सभी कार्यालयों में 1 अप्रैल, 90 से 31 मार्च 91 तक “हिन्दी डिक्शन योजना” लागू की गई। इस योजना के अन्तर्गत क व ख क्षेत्रों के निवासियों के लिए 500 रुपये का एक पुरस्कार तथा “ग” क्षेत्र (अहिन्दी भाषी) के निवासियों के लिए 500 रुपए का दूसरा पुरस्कार निर्धारित किया गया था। 85 बटालियन के सहायक कमांडमेंट श्री एस.पी. बड़ौला ने 1990-91 के दौरान सरकारी काम-काज में 1,37,790 शब्दों का हिन्दी में डिक्शन देकर सार्वधिक अंक प्राप्त किये तथा अपर महानिदेशक महोदय ने उन्हें 500 रुपए का पुरस्कार स्वीकृत कर सम्मानित किया। “ग” क्षेत्र के निवासियों में श्री सी.ए.एन. अलबर्ट्स, सहायक कमांडेंट, उत्तरी सेक्टर नई दिल्ली ने 10,095 शब्दों का हिन्दी में डिक्शन देकर सर्वाधिक अंक प्राप्त किये तथा अपर महानिदेशक महोदय ने उन्हें भी 500 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया।

कार्मिकों को सम्मान और बेस हस्पताल में नए उपकरण

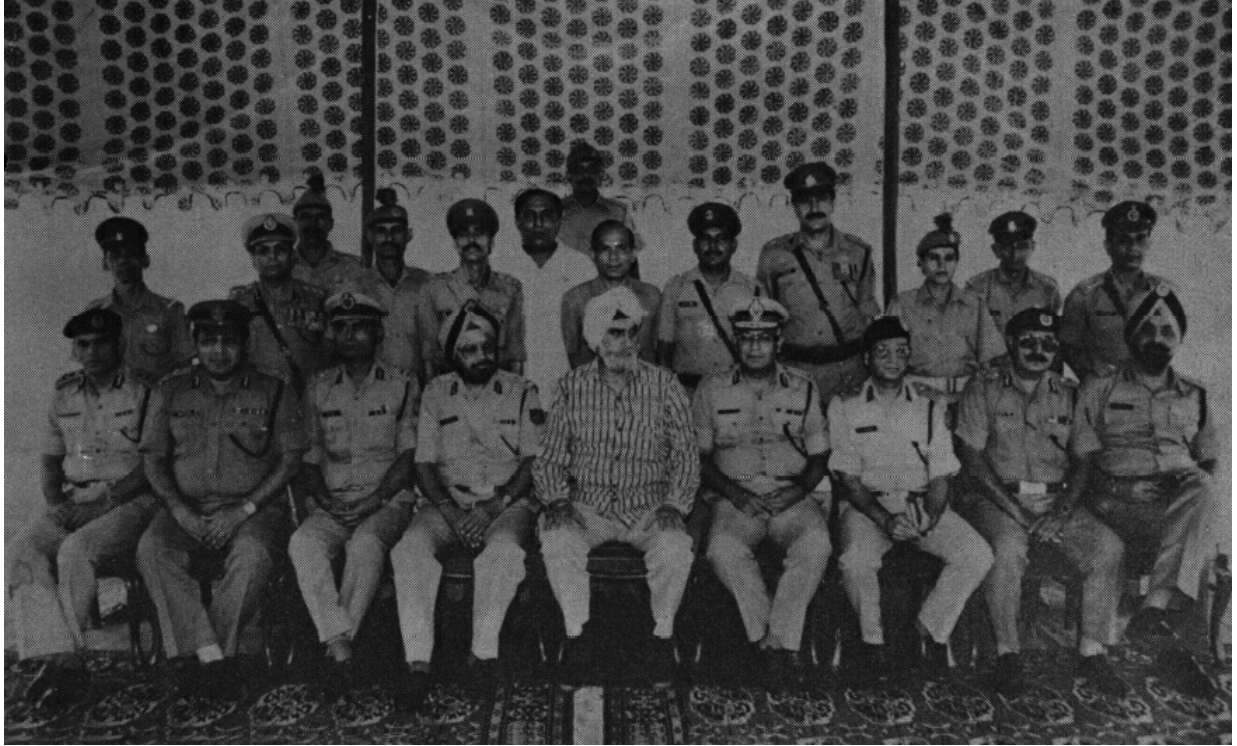


बेस हस्पताल में एक मरीज को मिठाई भेंट करते महानिदेशक श्री के.पी.एस.गिल।

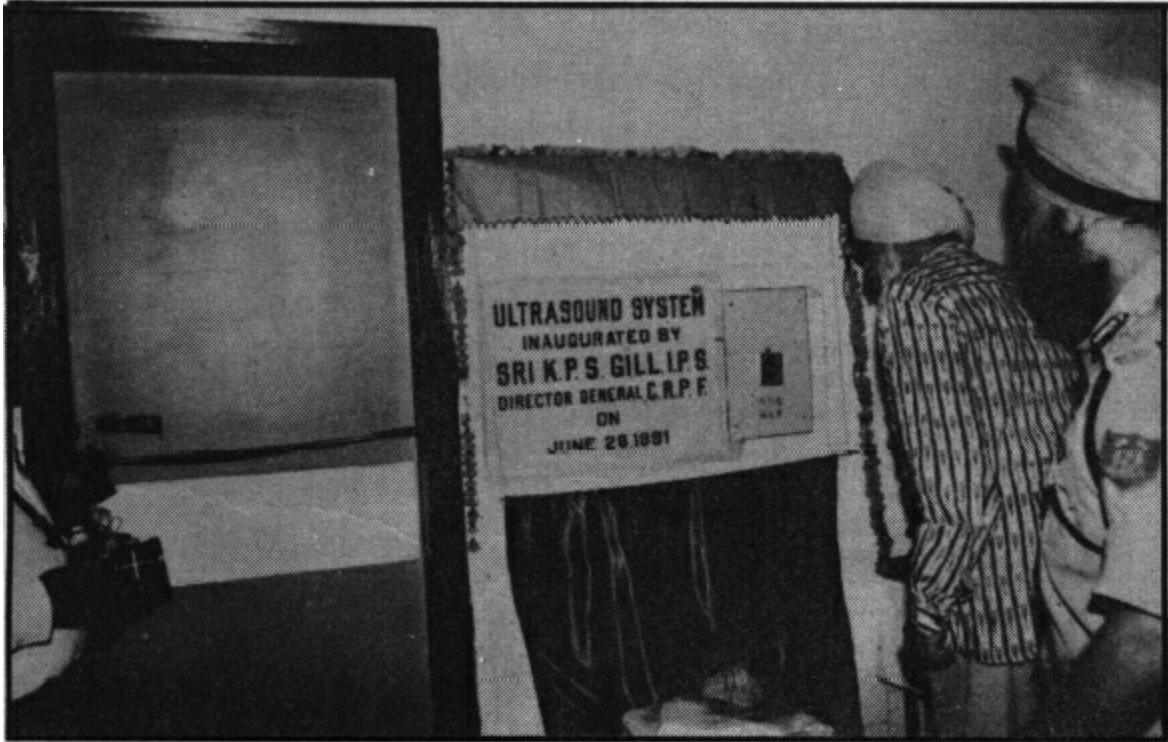
28 जून 1991 को कें.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री के.पी.एस.गिल ने एक सादे किंतु आकर्षक समारोह में 12 कें.रि.पु. बल के कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया तथा 88 बटालियन की महिला सिपाही दर्शन शर्मा को “चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ” का प्रशंसा-पत्र प्रदान किया।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क पाने वाले अधिकारी हैं: महानिदेशलय के कमांडेंट श्री एस.सी.मिश्रा, कमांडेंट श्री के.एस.राणा, सहायक कमांडेंट श्री जे.एस.गहलोत, संयुक्त

सहायक निदेशक श्री जी.सी. शर्मा, चिकित्सा अधिकारी श्री विजय बहादुर, कार्यालय अधीक्षक श्री विक्रम सिंह रावत, निरीक्षक (आशुलिपिक) एन.एम. सोनी, उप निरीक्षक (आशुलिपिक) पी.पी.बक्शी, बेस अस्पताल-1 के उप-निरीक्षक (लिपिक) जे.बी.जैन, महानिदेशालय के लांसनायक एन.बी.मिश्रा, 70वीं बटालियन के सिपाही जैठा राम, एवं रसोईया सन्तोष सिंह।



सम्मान प्राप्त करने वाले कामिकों के साथ महानिदेशक



अल्ट्रा सैनिक सिस्टम का उद्घाटन करते महानिदेशक

तत्पश्चात श्री गिल ने बेस अस्पताल-एक, में दो नये स्वास्थ्य संबंधी उपकरणों का उद्घाटन किया। ये उपकरण “अल्ट्रा साउंड डायग्नोस्टिक सिस्टम” एवं “आटो ऐनी डाइजर” हैं जिनकी कीमत क्रमशः 16 लाख एवं 4 लाख रुपए है। अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डी. एन. कर ने महानिदेशक महोदय एवं उपस्थित सभी अन्य अधिकारियों को विस्तार सहित बताया गया कि इन उपकरणों के आ जाने से दिल्ली का यह बेस अस्पताल आधुनिकता के क्षेत्र में अन्य अस्पतालों के करीब आ गया है। श्री गिल अस्पताल में उन जवानों और अधिकारियों को देखने गये जो आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए जम्मू और कश्मीर में घायल हुये और अस्पताल में इलाज करवा रहे हैं।

इस समारोह में कें.रि.पु.बल के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। जिनमें अतिरिक्त महानिदेशक श्री सी.एस.द्विवेदी भी शामिल थे।

दूसरी किस्त

डा० भीमराव अम्बेदकर

जीवन और योगदान

**आंतारेक सुरक्षा अकादमी मांऊट आबू द्वारा आयोजित 'डा. भीमराव
अम्बेडकर-जीवन और योगदान' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में
प्रथम पुरस्कार से सम्मानित 10 वीं बटालियन के उपाधीक्षक श्री भानु प्रताप सिंह
के निबंध की दूसरी कड़ी।**

सन् 1915

विश्व युद्ध का समय

भीमराव अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र में एम.ए.की डिग्री प्राप्त करके तुरन्त ही अर्थशास्त्र में सेलिगमेन के परामर्श से पी.एच.डी. पर कार्य प्रारम्भ कर दिया था। भीमराव ने शोध का विषय ऐसा चुना जो उस समय अछूता और महत्वपूर्ण था। भीम ने इस कार्य को दत्तचित्त होकर अपने को पूर्णतः होम कर दिया। वह न चाय पीने किसी के घर जाते और न ही फालतू बातें करते।

अध्ययन, अध्ययन और बस अध्ययन। परिणाम यह हुआ कि इसका प्रभाव उनकी आँखों पर हुआ, और वे चश्मा लगाने लगे।

“भारत का राष्ट्रीय लाभ-एक एतिहासिक एवं विषलेषणात्मक अध्ययन” विषय पर भीम ने एक ऐसा निबंध लिखा कि उनके निर्देशक, परीक्षक एवं सहपाठी दंग रह गये।

दुर्भाग्य फिर सामने आ खड़ा हुआ और पैसों के आभाव में वह यह शोध-पत्र छपवा नहीं सके। नियम यह था कि मुद्रित कुछ प्रतियाँ दाखिल करने पर ही विश्वविद्यालय से डिग्री मिल पाती थी। अन्ततः 1924 में लन्दन की संस्था पी.एस. किंग एण्ड सन्स के द्वारा भीम ने इसे “भारत में प्रान्तीय अर्थव्यवस्था का विकास” के नाम से छपवाया, तब विश्वविद्यालय ने इन्हें पी.एच.डी. की डिग्री प्रदान की। इस प्रकार भीमराव डा. भीमराव अम्बेडकर हो गये। डा. भीमराव अम्बेडकर का यह शोधपूर्ण ग्रन्थ इतना महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि रायल कमीशन जब भारत आया तो उसके हर सदस्य के पास इस शोध ग्रन्थ की एक प्रति थी, और रायल कमीशन ने जो कुछ भारत में किया उसका आधार यह शोध ग्रन्थ ही था। पी.एच.डी. करके भीमराव की ज्ञान पिपासा शान्त नहीं हुई। छात्रवृत्ति की अवधि समाप्त हो रही थी प्रयास करने पर भी अवधि एक वर्ष बढ़ी भीमराव अमेरिका छोड़कर लन्दन आ गये। अमेरिका प्रवास में संग्रह की गयी पाँच हजार पुस्तकें एक अमरीकी मित्र को सौंप आये।

भीमराव ने लन्दन पहुँच कर प्रसिद्ध संस्था “लन्दन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइन्स” में एम.एस.सी. इकनोमिक्स तथा “ग्रेजुएट” में बार एट लॉ के लिए प्रवेश प्राप्त किया। यहाँ पर भी उल्लेखनीय है कि छात्रवृत्ति की अवधि एक साल बढ़ी और उसकी सूचना भी भीमराव को लन्दन पहुँच कर मिली।

अब भीम का वही क्रम आरम्भ हो गया। वह इन्डिया आफिस लाईब्रेरी, लन्दन स्कूल और ब्रिटिश म्यूजियम के विशाल पुस्तकालयों में अध्ययन के लिए जाते और अध्ययन करते। भीम को इस बार शोध निबन्ध “रूपए का प्रश्न” विषय पर लिखना था यह भी

एक अमोघ विषय था, जिस पर पुस्तकें भी नहीं मिलती थीं भीम शोध पत्र तैयार कर ही रहे थे कि बढ़ाई हुई अवधि भी समाप्त होने लगी। भीमराव ने अवधि फिर बढ़ाए जाने का प्रयास किया परन्तु इस बार अवधि नहीं बढ़ी। भीमराव बहुत दुखी हुए और मन मसोर कर रह गये।

भीमराव की एम.एस.सी और बार एट ला बनने की चाह अधूरी ही रह गयी और उन्हें भारत लौटना पड़ा। भीमराव ने निश्चय किया कि भारत लौट कर बड़ौदा में नौकरी करके महाराजा के ऋण से मुक्त होना चाहिए।

भीमराव बड़ौदा आकर महाराजा से मिले और उन्हें अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। भीमराव महाराजा के बहुत ही कृतज्ञ थे। वह चाहते थे कि रियासत में रह कर ही कुछ सुधार करें और महाराजा की सेवा करके उऋण हों। गायकवाड भीमराव को अपना अर्थ मन्त्री बनाना चाहते थे।

इसलिए अर्थव्यवस्था का व्यवहारिक अध्ययन करने के लिए उन्होंने भीमराव को “महाराजा के सैनिक सचिव” के पद पर नियुक्त किया।

काम तो मिला मगर आवास की समस्या फिर खड़ी हो गयी कोई भी सवर्ण उन्हें अपने यहाँ रखने को तैयार न था।

भीमराव का भाग्य हर पग पर उनकी परीक्षा ले रहा था। हिन्दू संस्कृति के ठेकेदार मानो भीम के पीछे पड़ गए थे। बड़ौदा सचिवालय के कर्मचारियों में कानाफूसी होने लगी उनका कहना था कि महाराजा ने एक अछूत को हमारा अफसर बना दिया है। फलतः छोटे-बड़े सभी भीमराव का अपमान करने लगे।

अन्त में सचिवालय के कर्मचारियों ने एक सभा की और प्रस्ताव पास किया कि भीमराव उनकी मेजों के पास न आया करें। इस बात से एक बार फिर भीम के स्वाभिमान पर चोट लगी और वह तड़फ कर रह गये।

आखिरकार सभी ओर से निराश होकर भीमराव ने महाराज के समक्ष पूरी स्थिति रखी, परन्तु रियासत भर में खड़े इस असंतोष से महाराज को भी टकराने का साहस नहीं हुआ महाराज की यह असहाय दशा देखकर भीम टूट गये और उन्होंने दुखी होकर अपने पद से त्याग पत्र दे दिया और बम्बई लौट आये।

उन्होंने बम्बई आकर “स्टाक्स एण्ड एडवाइजरस” आर्थिक सलाह देने की एक संस्था खोली किन्तु सवर्णों के प्रचार और प्रतिस्पर्धा में महार जाति का युवक फिर अपनी कम्पनी बंद करके भाग खड़ा हुआ। भाग खड़ा नहीं हुआ, बल्कि भगा दिया गया।

भीमराव ने बेकारी के इस समय में “कास्ट इन इण्डिया” “स्माल होल्डिंग्स इन इण्डिया एण्ड देयर रेमेडीज” पुस्तकें भी लिखी, परन्तु आर्थिक लाभ कुछ नहीं हो सका।

लार्ड सिडेनहम की खुद की सिफारिश से भीमराव को चार सौ पचास रूपए मासिक की नौकरी मिल गयी। अस्पृश्यता ने सिडेनहा कालिज में भीम का पीछा नहीं छोड़ा। द्विजो ने यहाँ भी बहुत तंग किया, उन्हें पानी पीने का गिलास अपना अलग रखना

पड़ता। पानी खुद नहीं ले सकते थे।

कुछ स्वार्थी तत्वों ने अछूत की बात लेकर विद्यार्थियों को भड़काया कि वह भीमराव से न पढ़ें, परन्तु इस बार उनका वार खाली गया।

बम्बई में लोअर परल की डबक चाल:

चाल कुलियों की समान रखने की जगह को कहते हैं जिसमें सौ तक कमरे होते हैं और जिनमें बीस-तीस रुपए मासिक कमाने वाले श्रमिक रहा करते थे। भीमराव ऐसी एक चाल के कमरे में रहते थे।

भीमराव नहीं डाक्टर भीमराव अम्बेडकर, कोलम्बिया विश्वविद्यालय के पी.एच.डी.सिडेनहम कालिज में अर्थशास्त्र के प्रवक्ता केवल प्रवक्ता नहीं अर्थशास्त्र पर अधिकार सहित कितने ही निगमों के संस्थापक।

भीमराव महार अछूत, त्रस्त और आहत अभिमान की ऐसी प्रतिमूर्ति थे जिन्हें कदाचित भगवान ने नहीं बनाया था। बल्कि वे ऐसे निष्ठुर कलाकार की कृति थे, जिसका रचनाकार को खुद ख्याल नहीं था।

लन्दन स्कूल ऑफ इकनामिक्स से एम.एस.सी. डी.एस.सी. तथा ग्रेजटून से बार बट लॉ करने की भीमराव की इच्छा इतनी बलवती हो चुकी थी कि वह रमाबाई के इस विचार से सहमत नहीं हुए कि चार सौ रुपए की नौकरी काफी है और अब अपने परिवार को देखना चाहिए। भीमराव सारे आराम व आकर्षण छोड़कर अपनी इच्छाओं को मूर्तरूप देने में लगे थे। और भीमराव दोबारा लन्दन पहुँच गये। भीमराव एक बार फिर ज्ञान प्राप्त करने की दुनिया में खो गये, लन्दन यूनिवर्सिटी, इन्डिया आफिस पुस्तकालय और गोल्ड स्मिथ लाईब्रेरी आफ इकनामिक्स लिटरेचर में पुस्तकें पढ़ने और नोट्स तैयार करने का क्रम चलने लगा था।

“ब्रिटिश भारत में शाही समिति का प्रान्तीय विकेन्द्रीकरण” नाम के निबंध पर उन्होंने एम. एस.सी. और ग्रेजटून से बार एट लॉ की डिग्री प्राप्त की।

“रुपए की समस्या” जैसे अछूत विषय पर भीमराव ने डी.एस.सी. के लिए थिसिस प्रस्तुत की और स्पष्ट किया कि किस प्रकार ब्रिटिश लोगों ने पौंड और रुपए के सम्बन्ध कायम करके भारतीय रुपए का अपने हित में अवमूल्यन कराया है।

14 अप्रैल 1923

भीमराव को डी.एस.सी. की डिग्री प्रदान की गई।

यह निबंध 1926 में प्रकाशित हुआ और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा की।

बैरिस्टर, भीमराव अम्बेडकर।

विदेशों की यूनिवर्सिटीज से अर्थशास्त्र समाजशास्त्र आदि विषयों पर गहरा अध्ययन कर लौटे और कानून के निष्णात विद्वान भीमराव के समक्ष एक प्रश्न अकड़कर खड़ा हो गया।

उनके सामने दोराहा- बिल्कुल स्पष्ट था।

एक रास्ता नौकरी - परिवार का सुचारू रूप से पालन, सम्पत्ति, वैभव, शान्ति और अधिकार का जीवन।

दूसरा रास्ता - कानूनी व्यवसाय, न चलने की जोखिम, भूखमरी, कर्ज एवं दुख परन्तु स्वतंत्रता एवं अपने जैसे करोड़ों त्रस्त पीड़ित एवं उपेक्षित लोगों के लिए सुख-सुविधा खोजना, उनका नेतृत्व करना और उन्हें जीवन के मानवीय मूल्यों से अवगत कराना था।

भीमराव को जन्म से लेकर इस स्तर तक आने और महार-जाति में जन्म लेने के अपराध में कितने अपमान, कितने ताने और दुख झेलने पड़े। उन सबके विरुद्ध भीमराव के मन में समाज के एक वर्ग विशेष के प्रति विद्रोह और आक्रोश था। भीमराव की इच्छा थी कि उनके साथ जो हुआ सो हुआ, परन्तु कराड़ों लोगों को इस अभिशाप से मुक्त किया जाये और यदि पूरा जीवन लगा कर भी वह इस विषय में कुछ सफल हुए तो यह उनका सौभाग्य होगा। इसी मानसिक परिस्थिति के परिवेश में भीमराव ने बम्बई हाई कोर्ट में व्यवसाय करने की ठानी।

भीमराव आकर्षक व्यक्तित्व के युवक थे परन्तु कोर्ट में जब वह व्यवसाय के लिए गये तो वरिष्ठ लोगों को अच्छा नहीं लगा।

विरोध हुआ।

बार में बैठने के लिए उन्हें कुर्सी नहीं मिलती थी। वातावरण ऐसा बना दिया गया कि कोई व्यापारी, मारवाड़ी या धनी द्विज जमींदार तथा ठाकुर उन्हें पूछता ही नहीं था।

मिस्टर जीगंवाला के सतत प्रयास से उन्हें कचहरी में बैठने की जगह तो मिली, शिक्षा के क्षेत्र के समान ही वकालत के व्यवसाय में भी अछूत होने के कारण भीमराव को बहुत दुख झेलने पड़े।

समाज में जमींदारी, व्यापार तथा शक्ति द्विजों के हाथ में थी।

मुकदमें भी इन्हीं लोगों के होते थे। अछूत होने के कारण भीमराव को कोई वकील नहीं करता था। डा. भीमराव अभी परखे जा रहे थे।

परखा क्या जा रहा था घिसा जा रहा था, ढोंगी समाज रूपी सिल और अछूतपन के बट्टे के बीच परन्तु रंग आना निश्चित था। उसे गौतम स्मृति का विधान और तुलसीदास की रमायणी कल्पना रोक नहीं सकती थी। और न मनु की व्यवस्था उसमें बाधा बन सकती थी। अम्बेडकर की वकालत आखिरकार चल निकली और रात दिन चमकने लगी।

फुरसत के लिए

27 जुलाई का महत्व

तिथी 27 जुलाई का केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए एक विशेष महत्त्व है। आज के दिन 1939 को नीमच में क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस फोर्स की स्थापना की गई थी, प्रकारांतर में यही फोर्स केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के नाम से जानी जाने लगी। बल का स्थापना दिवस होने के अतिरिक्त अन्य कारणों से भी यह दिवस एक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। आइए 27 जुलाई को हुई कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं से आप को परिचित कराएं—

27.7.1665 स्वीडन द्वारा पोलैंड पर हमला।

27.7.1710 ब्रिटिश फौजों पर स्पेनी फौजों का हमला।

27.7.1795 स्पेन और फ्रांस में शान्ति संधि।

27.7.1839 ब्रिटेन व चीन के बीच युद्ध शुरू।

27.7.1848 रूस द्वारा इन्सब्रुक क्षेत्र पर हमला।

27.7.1889 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखा ब्रिटिश इंडिया कमेटी की स्थापना।

27.7.1933 असीरियाई ईसाइयों का इराक में संहार।

27.7.1941 जपानी फौजें द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हिंद चीन में पहुंची।

27.7.1953 कोरियाई संधि पर हस्ताक्षर।

27.7.1954 ब्रिटेन और मिश्र के बीच स्वेज नहर पर समझौता।

27.7.1965 अमेरिकी विमानों द्वारा उत्तरी वियतनाम के विमानभेदी प्रक्षेपास्त्र अड्डों पर हमला।

27.7.1978 नामीबिया में गुरिल्ला युद्ध समाप्त कराने की योजना संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा स्वीकार।

27.7.1988 इराक द्वारा ईरान के साथ युद्ध विराम के पूर्व आमने-सामने की बातचीत की शर्त।

27.7.1990 फिलीपींस में भूकंप में 1600 से अधिक लोग मारे गए।

संकलन-ओम प्रकाश शर्मा (उ.नि.एम.) वेतन एवं लेखा विभाग, महानिदेशालय.

रोचक रुचि

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में कार्यरत उप निरीक्षक (मि०) श्री राकेश कुमार एक रोचक रूचि रखते हैं। अपनी इस रूचि के कारण वह अक्सर अपने परिचितों के बीच चर्चा का विषय रहते हैं।

जनवरी 1976 में बल के परिवार में निम्न श्रेणी लिपिक के रूप में शामिल हुए राकेश कुमार घोर अध्ययनशील प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं: वह न केवल अध्ययनशील है, अपितु विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में जहाँ कहीं भी उन्हें केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल से संबंधित कोई समाचार दिखता है, वह उसकी कतरन काट कर अपनी संदर्भ पुस्तिका में

चिपका लेते हैं इस प्रकार उन्होंने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल से संबंधित खबरों का अच्छा खासा संग्रह एकत्र कर लिया है जो किसी भी शोधार्थी के लिए बेहद उपयोगी संदर्भ सूची साबित हो सकती है।

श्री राकेश शर्मा के इस कार्य की उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने भरपूर प्रशंसा की है तथा उन्हें उनके इस कार्य के लिए 24 प्रशंसा पत्र तथा 12 नगद पुरस्कार प्रदान किए हैं। श्री राकेश कुमार की यह रुचि क्लर्क सदस्यों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है।



86 बटालियन के कमांडेंट श्री डी के खराना महाविदेशक श्री के पी एस गिल से सर्वोत्तम बटालियन ट्राफी ग्रहण करते हुए।

मुख्य सम्पादक: ए० एन० शर्मा। सम्पादक: अनिल गुप्ता।

वरिष्ठ संपादक: सतीश खन्ना

मुद्रक तथा प्रकाशक: महाविदेशक के० रि० पु० बल, ब्लॉक 1 - सी० ली० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।

मुद्रक सी० आर० पी० एफ० प्रेस, अट्रोपा कला, नई दिल्ली- 110 072

कम्पोजिंग एवं प्रोसेसिंग: गीताशक्ति एडवर्टाइजर्स एवं प्रिंटर्स, एच - 26, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड-IV

अंक-V

मूल्य-1.95 रुपये

31 अगस्त, 1991

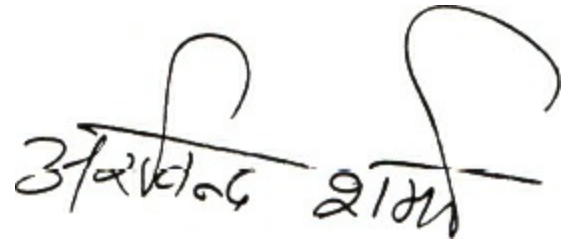
9 भाद्रपद, शक 1913



सम्पादकीय

अगस्त का महिना हम सब भारतवासियों के जीवन में एक विशेष महत्व रखता है, सावन और भादों की काली रूमानी घटाओं से घिरा यह महिना, जहां जेठ के ताप से तपती धरती की रूह को सींचता है, वहीं हम सभी को यह भी याद दिलाता है कि 1947 में इसी महिने की 15 तारीख को मध्य रात्रि में हमारे आकाश से गुलामी के बादल सदा सदा के लिए लुप्त हो गए थे। उस रात प्रज्वलित की गई आजादी की मशाल आज पूरे गौरव के साथ जल रही है। यह ज्वाला निरंतर जलती रहे, इसके लिए कई देश भक्तों को प्राणों की आहुति इसमें देनी पड़ रही है। इस मशाल को जितना खतरा आज आतंकवादियों, देशद्रोही तत्वों और अलगाववादियों से पैदा हो गया है, उतना पहले कभी नहीं था। इसी के साथ साथ देश की आंतरिक और भीतरी सुरक्षा में तैनात जवानों की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। देश की भीतरी सुरक्षा में तैनात सुरक्षा बलों (जिनका कि के०रि०पु० बल एक बड़ा हिस्सा है) की निरंतर बढ़ती मांग, देश की एकता और अखंडता की और बढ़ते खतरे का ही सूचक है। हमारे जवान अपनी आजादी की मशाल को हरदम जलाए रखने के लिए प्राणोपन्न से जुटे हैं। हम से जुड़ी देश की आशाएं और जनता का विश्वास हमारा सम्बल है। “सेवा और भक्ति” हमारा उद्देश्य है। जनता की सेवा में और राष्ट्र-भक्ति में प्राणों की भेंट हमारे लिए तुच्छ है।

स्वतंत्रता दिवस की इस बेला पर हम के०रि०पु० बल के कार्मिक जहाँ पूरे देश के साथ अपने स्वतंत्रता पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, वहीं अपनी स्वतंत्रता की मशाल को निरंतर प्रज्वलित रखने के लिए स्वयं को हवि के रूप में प्रस्तुत करने की अपनी प्रतिज्ञा को कार्य रूप में प्रणीत करने को भी सहर्ष तत्पर होते हैं। आतंकवादियों, देशद्रोही तत्वों एवं अलगाववादियों के प्रयास हमारी इस प्रतिज्ञा की अडिग चट्टान के आगे महज समुद्र का एक ज्वार है, जिसकी नियति चट्टान से टकरा कर लौट जाना है, खंड-खंड हो जाना है।



(अ. ना. शर्मा)

अजमेर में वृक्षारोपण



अजमेर ग्रुप केन्द्र में-11 में एक पौधा रोपते हुए महानिदेशक श्री के०पी०एस० गिल ।
सावन की रिमझिम फुहारों के बीच 29 जुलाई, 91 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल ने अजमेर स्थित ग्रुप केन्द्र-2 में वन महोत्सव के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर उपस्थित बल के जवानों और उनके परिवारजनों व आमंत्रित अतिथियों को सम्बोधित करते हुए श्री गिल ने कहा कि बल द्वारा देश के सभी 20 ग्रुप केन्द्रों पर इस वर्ष वर्षा के मौसम में सघन वृक्षारोपण किया जाएगा। उन्होंने देश के बाहरी और भीतरी खतरों से निबटने के लिए जवानों द्वारा की जा रही सेवा की सराहना करते हुए उनसे देश की हरियाली और खुशहाली के लिए प्रयत्न करने की अपील की।



अजमेर ग्रुप केंद्र में महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल अन्य अधिकारियों के साथ

बल के दिल्ली-अजमेर रेंज के पुलिस उप-महानिरीक्षक आर. सी. अग्रवाल ने कहा कि ग्रुप केन्द्रों में लगाए जा रहे पौधे तीन महीने के बाद जवानों और उनके परिवारों को आवंटित कर दिए जाएंगे। ग्रुप केन्द्र द्वारा एक निरीक्षण दल का गठन किया जाएगा जो प्रत्येक तीन महीने पश्चात वृक्षों का निरीक्षण करेगा, जिन में तीन सर्वोत्तम रहे वृक्षों की सार सम्भाल करने वाले परिवारों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

ग्रुप केन्द्र-2 के अतिरिक्त पुलिस उपमहानिरीक्षक विश्वदेव सहगल ने समारोह में बताया कि इस वर्ष ग्रुप केन्द्र में पचास हजार पौधे लगाये जाने का लक्ष्य है, उन्होंने बताया कि 1966 में जब बल ने इस भूमि का अधिग्रहण किया था, तब यह भूमि एकदम बंजर थी। यहां कुछ भी पैदा हो सकने लायक स्थिति नहीं थी। जवानों ने

मेहनत कर इस भूमे को उपजाऊ बनाया और वर्तमान में इस भूमे पर 20 हजार से भी अधिक वृक्ष फल-फूल रहे हैं ।

वर्षा के सुहावने मौसम में केंद्रीय विद्यालय एक व दो की छात्राओं ने इस मौके पर रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया । श्री गिल ने जवानों द्वारा बनाई गई एक झील का भी निरीक्षण किया ।

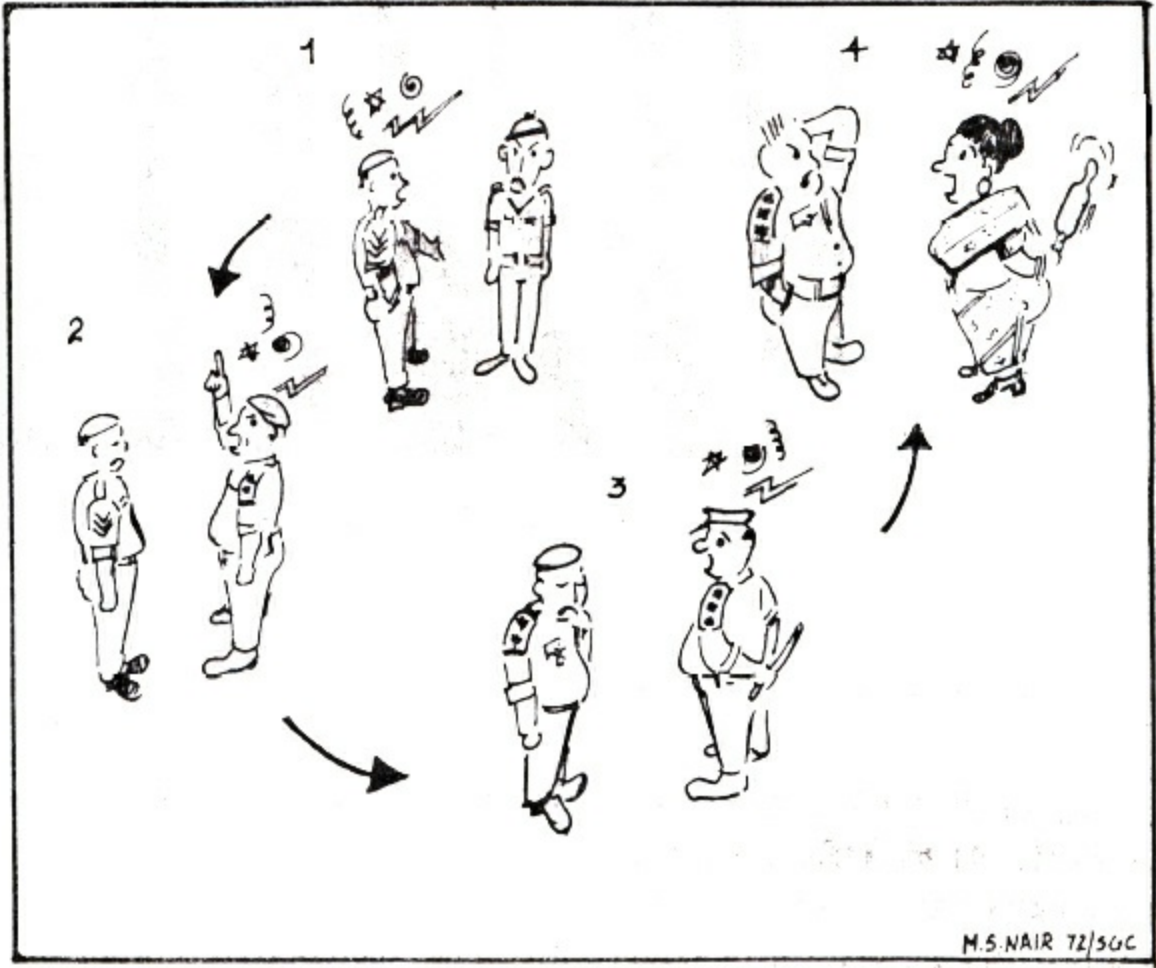
श्री गिल ने इस मौके पर पत्रकारों से बात करते हुए उन्हें बताया कि के. रि. पु. बल द्वारा जयपुर में एक बटालियन स्थापित की जाएगी । उन्होंने बताया कि इसके लिए स्थानीय प्रशासन के साथ भूमि अधिग्रहण की बात की जा रही है ।

श्री गिल ने इस मौके पर एक सैनिक दरबार को सम्बोधित कर जवानों की समस्याएं सुनी और उनका निराकरण किया ।

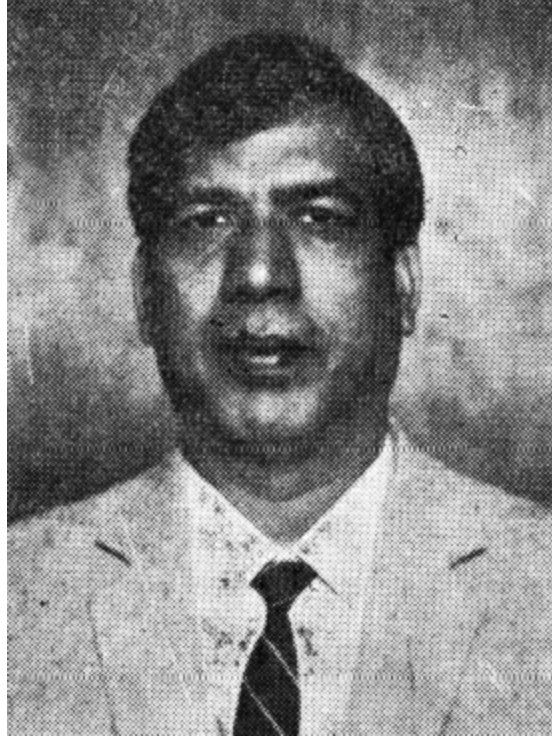
साभार दैनिक न्याय

एक औरत अपने बच्चे को पट्टी कराने डाक्टर साहब की दुकान पर गई ।

डाक्टर पूछा : ‘कहां पट्टी करनी है ?’ औरत ने बच्चे को टटोला, उसे उलट - पुलट किया, लेकिन उसे जख्म नहीं मिला । फिर कुछ सोच कर बोली: ‘हाय राम, मैं तो दूसरे बच्चे को उठा लाई ।’



श्री शर्मा महानिदेशक के नए स्टाफ अधिकारी



श्री सुरेश शर्मा

डिप्टी कमांडेंट श्री सुरेश शर्मा महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल के स्टाफ अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने अपना यह नया पद भार 3 मई, 1991 से संभाल लिया है। श्री शर्मा विज्ञान स्नातकोत्तर, विधि स्नातक तथा एम० बी० ए० हैं, साथ ही श्री शर्मा पर्सनल मैनेजमेंट में स्नाकोत्तर डिप्लोमाधारी भी हैं।

श्री शर्मा मनीला (फिलीपींस) के नागरिक विमानन प्रशिक्षण केन्द्र में नागरिक सुरक्षा कोर्स में सर्वश्रेष्ठ अधिकारी चुने जा चुके हैं, इसके अतिरिक्त श्री शर्मा ने सुरक्षा सम्बन्धी अन्य कई महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं। शस्त्र और रणनीति तथा डी० सी० पी० डबल्यू में उच्च संचार व्यवस्था में भी वह प्रथम रहे।

सुरक्षा सम्बन्धी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यानुभवी श्री शर्मा ने व्यापक रूप से पूरे देश में कार्य किया है।

हिन्दी कार्यशाला

नई दिल्ली स्थित 86 बटालियन में 16 से 25 जुलाई 1991 तक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन एवं समापन बटालियन के कमांडेंट श्री दर्शन कुमार खुराना ने किया। कार्यशाला का संचालन अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर अंचल चंडीगढ़ के निरीक्षक हिंदी अनुवादक क्यू० ए० सैयद ने किया।

प्रतियोगिता के अंत में प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले कार्मिकों को पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

हिन्दी में कार्य के लिए पुरस्कार



उ० नि० (म.) के० एन० मेहरा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के समस्त कार्यालयों में 1 अप्रैल, 1990 से 31 मार्च, 1991 तक हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में 211 कार्मिकों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के परिणामस्वरूप के० रि० पु० बल के कार्यालयों में 60 प्रतिशत से अधिक कार्य अब हिन्दी में होने लगा है। बल के कार्यालयों में प्रतियोगियों ने 20 हजार से दो लाख तक हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया। इन प्रतियोगिताओं में प्रतियोगियों को 46,700 रुपये के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। महानिदेशालय के उप निरीक्षक को प्रथम स्थान हासिल करने पर पांच-पांच सौ रुपये के पुरस्कार दिए गए।



उ. नि. (म.) ओमप्रकाश शर्मा

प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के अतिरिक्त 50 हजार से अधिक हिन्दी शब्द प्रयोग करने वाले प्रतियोगियों को भी हिन्दी के प्रति उन का उत्साह और प्रेरणा तथा रुचि को बनाए रखने के लिए 100-100 रुपए के पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया ।

आप बूढ़े हो रहे हैं :

जब आपको हर बात में तकलीफ होती हो, परेशानी होती हो ।

जब आप बात-बात में बीते जमाने की याद करते हों ।

जब किसी को देखकर यह सोचते हों कि इसे कहीं पहले भी देखा है (नाम याद नहीं पा रहा) ।

जब आप हर शाम अकेले बिताना चाहें ।

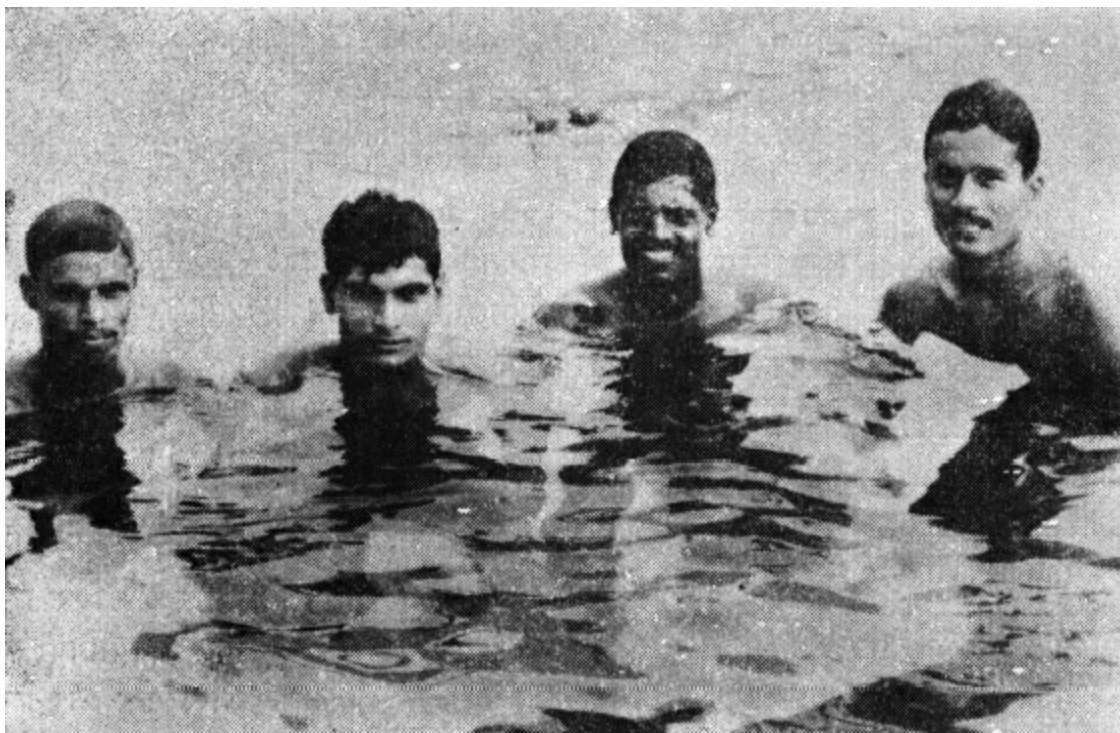
जब आप हर बात का कारण खोजते हों-कोई बाथरूम में कोई नहा रहा हो, तो उसके गाने का कारण भी ।

जब आप रोमांस की बात सोचकर नहीं, बल्कि खर्च का खयाल करके बत्ती (या बत्तियां) बुझा देते हों ।

जब आप कराची हलवा या सोहन हलवा खाने के लिए उसे दातों से काटें और दांत हलवे में ही रह जाएं ।

अंतर क्षेत्रीय तैराकी प्रतियोगिताएं

दक्षिण क्षेत्र ने चैम्पियनशिप जीती



4×100 मीटर फ्री स्टाइल रिले प्रतियोगिता की विजेता दक्षिण क्षेत्र की टीम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दक्षिण क्षेत्र ने इस वर्ष 167 अंक प्राप्त कर अंतर क्षेत्रीय तैराकी प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप जीत ली, जबकि 72 अंक प्राप्त करने पर इंस्पेक्टर रंजीत सिंह को तैराकी की व्यक्तिगत चैम्पियनशिप प्रदान की गई।

2 अगस्त, 1991 को नई दिल्ली में प्रारंभ हुयी इन प्रतियोगितामओ का उद्घाटन उत्तर क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह ने किया, जबकि 4 अगस्त, 1991 को समापन समारोह के अवसर पर बल के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये। 124 अंक प्राप्त कर उत्तर पूर्व क्षेत्र दूसरे स्थान पर रहा। प्रतियोगिता के सम्पूर्ण परिणाम इस प्रकार रहे।

400 मीटर व्यक्तिगत मेडले :- (1) उप-निरीक्षक दलीप सिंह, उत्तर पश्चिम क्षेत्र, 5:31:28, (2) इंस्पेक्टर रणजीत सिंह, उत्तर पूर्वी क्षेत्र 5:32:68, (3) निरीक्षक अजित सांगवान, दक्षिणी क्षेत्र 6:05:08

200 मीटर बेस्ट स्टोक :- (1) निरीक्षक-राधाकृष्णन, पूर्वी क्षेत्र 2:44:65, (2) हैड कांस्टेबल - जी. प्रार. चैरी, सेंट्रल सैक्टर, 2:45:69 (3) उप-निरीक्षक रोबिन्द्रो सिंह-

उत्तर पूर्वी सेक्टर, 2:46:59

200 मीटर बैक स्ट्रोक :- (1) निरीक्षक अजित सांगवान-दक्षिणी क्षेत्र 2:37:74, (2) उप-निरीक्षक दलीप मलिक, उत्तर पश्चिम क्षेत्र, 2:43:49, (3) कां. प्रसन्नजीतपाल, उत्तरी क्षेत्र, 2:51:69,

200 मीटर फ्री स्टाईल :- (1) निरीक्षक रणजीत सिंह, उत्तर पूर्वी क्षेत्र 2:15:23, (2) निरीक्षक अजित सांगवान दक्षिणी क्षेत्र, 2:17:42, (3) निरीक्षक राधाकृष्णन-पूर्वी क्षेत्र, 2:18:03,

100 मीटर बटरफ्लाय :- (1) कांस्टेबल प्रसन्न जीत पाल, उत्तर क्षेत्र, 1:07:55 (2) निरीक्षक - रणजीत सिंह उत्तर पूर्वी क्षेत्र 1:09:20 (3) हैड कांस्टेबल पदम पाल, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, 1:09:84

4×100 मीटर फ्री स्टाईल रिले :- (1) दक्षिणी क्षेत्र, 4:20:60, (2) पूर्वी क्षेत्र - 4:26:60 (3) उत्तरी क्षेत्र 4: 27:17

50 मीटर फ्री स्टाईल :- (1) सूबेदार मेजर के. सोमशेखरन, दक्षिणी क्षेत्र 0:26:82, (2) निरीक्षक के. प्रलोसश, उत्तरी क्षेत्र 0:27:56 (3) निरीक्षक रणजीत सिंह, उत्तर पूर्वी क्षेत्र 0:27:96



दक्षिण क्षेत्र को ट्राफी प्रदान करते हुए महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल

200 मीटर बटरफ्लाई :- (1) निरीक्षक रणजीत सिंह, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र 2:32:25, (2) हेड कांस्टेबल पद्म पाल उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र 2:33:65 (3) कांस्टेबल प्रसन्न जीत पाल, उत्तरी क्षेत्र 2:42:88

200 मीटर व्यक्तिगत मेडले :- निरीक्षक एस. राधाकृष्णन पूर्वी क्षेत्र 2:31:75, (2) निरीक्षक अजित सांगवान दक्षिणी क्षेत्र 2:32:25 (3) उप-निरीक्षक दलीप मलिक, उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र 2:35:20

4×200 मीटर फ्री स्टाईल रिले :- पूर्वी क्षेत्र 9:54:87, (2) दक्षिणी क्षेत्र 9:56:69, (3) उत्तरी क्षेत्र 10:11:75

400 मीटर फ्री-स्टाईल :- (1) निरीक्षक रणजीत सिंह, उत्तर पश्चिम क्षेत्र 4:50:16 (2) निरीक्षक राधाकृष्णन पूर्वी सेक्टर 4:59:60 (3) हेड-कांस्टेबल पद्म पाल उत्तर पश्चिम क्षेत्र 5:00:56.

1500 मीटर फ्री स्टाईल :- (1) निरीक्षक रणजीत सिंह, उत्तर पूर्वी सेक्टर 19:05:00, (2) निरीक्षक एस. राधाकृष्णन, पूर्वी सेक्टर, 20:12:03 (3) हेड कांस्टेबल पद्म पाल, उत्तर पश्चिम जोन 20:14:61

स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग :- (1) हेड कांस्टेबल बी. एन. तमोचे, दक्षिणी क्षेत्र 166.70 (2) लांस नायक सुरेश चन्द उत्तरी सेक्टर 148.10 (3) नायक बी. मणी दक्षिणी क्षेत्र 130.40

हार्ड बोर्ड डाइविंग :- (1) हेड-का स्टेबल बी. एन. तमोचे, दक्षिणी क्षेत्र, 240.30 (2) नायक पी. मणी, दक्षिणी क्षेत्र 184.40 (3) लांस नायक सुरेश चन्द, उत्तरी सेक्टर 96.00

100 मीटर बैक स्ट्रोक :- (1) निरीक्षक अजित सांगवान, दक्षिणी क्षेत्र 1:09:04, (2) उप-निरीक्षक दलीप मलिक, उत्तर पश्चिम क्षेत्र 1:10:07 (3) कांस्टेबल प्रसन्न जीत पाल, उत्तरी क्षेत्र, 1:13:68

100 मीटर ब्रेस्ट स्टोक :- निरीक्षक राधा कृष्णन, पूर्वी सेक्टर 1:13:44 (2) उप-निरीक्षक एम. रबिन्द्रो सिंह, उत्तर पूर्वी क्षेत्र 1:15:57, (3) हेड- कांस्टेबल जी. आर. चैरी, सेंट्रल सेक्टर 1:17:22

100 मीटर फ्री स्टाईल :- (1) सुबेदार मेजर के. सोमशेखरन, दक्षिणी क्षेत्र 1:01:13, (2) निरीक्षक रणजीत सिंह, उत्तर पश्चिम सेक्टर, 1:01:50 (3) हेड कांस्टेबल सी. के. संतरा, पूर्वी सेक्टर 1:02:91,

4×100 मीटर मेडले रिले :- (1) दक्षिणी क्षेत्र, 4:49:08, (2) उत्तर पूर्वी सेक्टर, 4:57:31 (3) पूर्वी सेक्टर, 5:02:00.,

वाटर पोलो चैम्पियनशिप-उत्तरी सेक्टर ।

वाटर पोलो रनर अप-पूर्वी सेक्टर ।

बेस्ट वाटर पोलो प्लेयर :-निरीक्षक के. पालोसिश-उत्तरी सेक्टर ।

संक्षिप्त समाचार

32 कार्मिकों को स्वतंत्रता दिवस सम्मान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 32 कार्मिकों को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया है। इनमें से तीन कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 29 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया है।

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री अजयराज शर्मा, उपनिदेशक (प्रशिक्षण) श्री एन० के० तिवारी (वी.एस.एम.) तथा निरीक्षक रेडियोआपरेटर एन० सी० पटनायक।

महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री अजयराज शर्मा पहले ही शौर्य वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक बार, सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक तथा विशिष्ट सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश सरकार का पदक प्राप्त कर चुके हैं।

उप निदेशक (प्रशिक्षण) श्री एन० के० तिवारी विशिष्ट सेवा मेडल तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्राप्त कर चुके हैं।

सिगनल बटालियन के निरीक्षक (रेडियो आपरेटर) एन. सी. पटनायक भी इससे पूर्व सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्राप्त कर चुके हैं। तथा रेडियो व सिगनल संचार में एक सिद्धहस्त अधिकारी हैं।

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्राप्त करने वाले अधिकारी हैं—कमांडेंट इंदरजीत सिंह (9 बटालियन), के. केशवन (52 बटालियन), जयप्रकाश (7 बटालियन) पी. एस. साइरस (63 बटालियन), सहायक निदेशक (प्रशासन) राजेन्द्र सिंह यादव (उत्तर पूर्वी सेक्टर शिलांग), सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) एन. पी. श्रीकुमार (महानिदेशालय), डा० सुरेन्द्र प्रसाद मिश्रा (मुख्य चिकित्सा अधिकारी, ग्रुप केन्द्र, नीमच), द्वितीय कमान अधिकारी मोलक सिंह सिद्ध (43 बटालियन), सुशील चन्द्र अरोड़ा (41 बटालियन), जयपाल सिंह (66 बटालियन), सहायक कमांडेन्ट अतर सिंह (5 सिगनल बटालियन), आर. सी. बहुगुर (126 बटालियन), रामनिवास यादव (114 बटालियन), उपाधीक्षक अनूप सिंह (55 बटालियन), सूबेदार मेजर लाल सिंह (81 बटालियन), इंस्पेक्टर अदालत सिंह (18 बटालियन), के. एल. थोमस (89 बटालियन), राम प्रसाद शर्मा (ग्रुप केन्द्र नागपुर), उपनिरीक्षक रविदत्त शर्मा (62 बटालियन), सतपाल सिंह (27 बटालियन), राजेन्द्र सिंह (67 बटालियन), हैड कांस्टेबल जगत सिंह (12 बटालियन), शिव सिंह (72 बटालियन), के. कृष्णन (35 बटालियन), पी. जी. मुरगेशन (आंतरिक सुरक्षा अकादमी), नायक ब्रिज बिहारी

मिश्रा (88 बटालियन), लांसनायक स्टीफन टेटे (67 बटालियन), लांसनायक/ड्राइवर वी. गोपालाकृष्णन (76 बटालियन) तथा कांस्टेबल मल सिंह (3 बटालियन) ।

तीन कार्मिकों को प्रशंसा डिस्क

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के तीन कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया है । उन्हें यह सम्मान जम्मू कश्मीर में आतंकवाद विरोधी मुहिम में निभाई गई शानदार भूमिका के लिए दिया गया है । यह सम्मान प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं, 24 बटालियन के सहायक कमांडेंट राजेन्द्र घई, 98 बटालियन के उपाधीक्षक आर० के० भट्टाचार्य तथा 53 बटालियन के उपाधीक्षक श्याम चंद ।

ज्ञातव्य है कि महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क वर्ष 1987 में प्रारम्भ की गई थी तथा यह प्रति वर्ष बल के सदस्यों को उनके प्रसाधारण कार्यों के लिए दी जाती है । इस सम्मान का उद्देश्य बल के सदस्यों के भीतर बहादुरी, साहस तथा सेवा भक्ति की भावनाओं को प्रोत्साहन देना है । इस सम्मान के लिए कार्मिकों का चयन परिचालन के दौरान उनकी भूमिका एवं उपलब्धियों, प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान सराहनीय कार्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल जगत में उपलब्धियां तथा अन्य किसी ऐसे कार्य के आधार पर किया जाता है, जिससे बल की कीर्ति एवं कार्यकुशलता में बढ़ोत्तरी हुयी हो ।

के.रि०पु०बल ने 243 आतंकवादी गिरफ्तार किए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जुलाई, 1991 में देशभर में 243 मातंकवादियों को गिरफ्तार किया । इस दौरान हुई कुल 137 मुठभेड़ों में 52 आतंकवादी मारे गए ।

मारे गए आतंकवादियों में खालिस्तान कमांडो फोर्स के हरइकबाल सिंह (जप्फरवाल गुट), मैनेजर सिंह उर्फ मंगा (जप्फरवाल गुट) तथा डा० बरजिंदर सिंह के अतिरिक्त भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स के चमकौर सिंह और सुखदेव सिंह उर्फ सुक्खा जैसे कुख्यात आतंकवादी भी शामिल थे ।

इसके अतिरिक्त बल के जवानों ने 126 घातक हथियार बरामद किए । जिनमें 27 ए.के. 47 राइफलें, 11 ए.के. 56 राइफलें, 5 ए.के. 73 राइफलें, 43 पिस्तौलें, 19 राइफलें, दो जी.पी.एम.जी., तीन एस.एल.आर. तथा एक स्टेनगन शामिल हैं । मगर इस सबके एवज में बल को अपने दो बहादुर साथियों की जान से हाथ धोना पड़ा, जबकि 50 जवान गम्भीर रूप से घायल हुए ।

महिला बटालियन को पुरस्कार

के० रि० पु० बल की 88 महिला बटालियन की एक टुकड़ी 2 और 5 मई, 1991 को नई दिल्ली स्थित खुर्शीद लाल भवन पर कानून व व्यवस्था बनाए रखने की ड्यूटी पर तैनात थी । ज्ञातव्य है कि इन दिनों टेलीफोन कर्मचारी हड़ताल पर थे, जिससे

स्थिति तनावपूर्ण थी। माहेला बटालियन को इस टुकड़ी ने इस हड़ताल के दौरान कानून व व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिस से शांति व्यवस्था बनी रही। महिला बटालियन की इन लड़कियों के कार्य की प्रशंसा करते हुए दिल्ली पुलिस के उप-कमिशनर महोदय ने इन लड़कियों को 125 रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया।

जोखिम निधि लाभ

माह जुलाई, 1991 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 17 मामलों में 5 लाख 95 हजार रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें 10 हजार रुपये प्रति मामला केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के सात मामलों में कुल एक लाख पांच हजार रुपये देने स्वीकार किए गए।

के.रि.पु. बल की नवगठित बटालियनों के कमांडेंटों का सम्मेलन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल ने 9 अगस्त, 1991 को नई दिल्ली में संपन्न हुए नव गठित बटालियनों के कमांडेंटों को संबोधित किया।

श्री गिल ने कमांडेंटों का आह्वान किया कि वे बटालियनों के नए जवानों के प्रशिक्षण में कोई कसर बाकी न रखें। देश के सामने पैदा हो रही चुनौतियों से निबटने के लिए आधुनिकतम तरीकों के प्रशिक्षण पर उन्होंने जोर दिया। उन्होंने कमांडेंटों को प्रशिक्षण के लिए जरूरी सभी सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

अन्त में महानिदेशक महोदय को धन्यवाद देते हुए महानिरीक्षक स्पेशल सेक्टर श्री डी. डी. गुप्ता ने उन्हें विश्वास दिलाया कि नवगठित बटालियनें देश तथा महानिदेशक महोदय की अपेक्षाओं पर खरी उतरेंगी।

माह जुलाई 1991 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की माह जुलाई, 1991 में मृत्यु हुई। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

रंगरूट ड्रा० महावीर सिंह (140 बटा०), कां० गुलाम मोहिउद्दीन (43 बटा०), कां० गनेश प्रसाद (22 बटा०), रंगरूट बलविंदर सिंह (108 बटा०), कां० गुरदास राम (108 बटा०), नायक/रे. आ. वीरपाल सिंह (1 सिंग), कां० साहिब सिंह (39 बटा०), उ. नि. (म०) श्रीमती ईश्वरी लुल्ला (ग्रु. के.-एक), कां० तेज बहादुर (75 बटा०), कां० सुदानसिंह (19 बटा०), है. का. एस. एन. यादव (49 बटा०), कां० सोहन लाल (सिंग. ग्र. के.), नायक कन्हैया राम (87 बटा०), है का० अवतार सिंह (18 बटा.), कां. के.पी. स्वामी (33 बटा०) वाटर कैरियर श्री राम (38 बटा०), कां० सुकुमार राम (44 बटा०),

कां० भोलानाथ प्रधान (ग्रु. के. भुवनेश्वर), कां० (ड्रा०) बी. राजन (79 बटा.) और कां. रघुबीर सिंह (68 बटा).

प्रशिक्षार्थी उत्तीर्ण

नई दिल्ली, वजीराबाद स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान से मोटर मैकेनिक तथा रेडियो और टी.वी. मैकेनिक प्रशिक्षुओं के प्रथम बैच ने अपने दो वर्ष के प्रशिक्षण को पूरा करके इस संस्थान से विदा ली। इस मौके पर वेल्डिंग ट्रेड के दूसरे बैच के प्रशिक्षु भी अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर संस्थान से विदा हुए।

इस मौके पर संस्थान में आयोजित एक सादे सामारोह में के.रि.पु. बल के महानिरीक्षक (परिचालन एवं प्रशिक्षण) श्री आर.के. शर्मा ने योग्य प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार भी प्रदान किए।

सर्वोत्तम वर्कशाप तथा छात्रावास के लिए बैरक नं. 11 को शील्ड प्रदान की गई। नरेन्द्र प्रसाद तिवारी को मोटर मैकेनिक कोर्स में सर्वोत्तम प्रशिक्षु का पुरस्कार प्रदान किया गया, जबकि रेडियो और टी. वी. मैकेनिक के लिए यह सम्मान श्री सुभाष चन्द्र को मिला। मोटर मैकेनिक ट्रेड में प्रथम स्थान के लिए चन्द्रकांत द्विवेदी को पुरस्कार मिला, जबकि श्री एम.आर. लिंगम को सर्वोत्तम प्रशिक्षक के लिए प्रधानाचार्य का विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। इस मौके पर श्री शर्मा ने विद्यार्थियों को उनके प्रदर्शन के लिए बधाई दी और आशा व्यक्त की कि यह संस्थान भविष्य में भी इसी प्रकार विद्यार्थियों को उच्च स्तर का प्रशिक्षण प्रदान करता रहेगा।

ज्ञातव्य है कि इस औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना 1989 में के.रि.पु.बल शिक्षा समिति के तहत की गई थी। यह संस्थान मोटर मैकेनिकों, रेडियो/टी.वी. तथा वेल्डिंग ट्रेड के तीन कोर्स चलाता है। यह संस्थान के.रि.पु.बल के कार्मिक के बच्चों के लिए कल्याण कार्यक्रम के तहत स्थापित किया गया था। यहां इन बच्चों को यह प्रशिक्षण मुफ्त दिया जाता है। वर्तमान में यहां 89 विद्यार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। वेल्डर ट्रेड के प्रथम बैच के सभी विद्यार्थी जो कि 31 जुलाई, 1990 को यहां से उत्तीर्ण हुए थे, अब अच्छे स्थानों पर रोजगार पा चुके हैं। मोटर मैकेनिक तथा रेडियो टी.वी. ट्रेड के प्रथम बैच के विद्यार्थियों ने 31 जुलाई, 1991 को उत्तीर्ण होने के बाद संस्थान से विदा ली है।

पत्नी ने कहा : 'तुम घर पर टेलीफोन क्यों नहीं लगवा लेते ?

पति बोला: 'तुम चाहती हो कि दफ्तर में रह कर भी चैन की सांस न ले सकू।

पत्नी ने कहा : 'हम कितने भाग्यशाली हैं बचपन से ही हमें एक दूसरे से मुहब्बत थी। फिर भगवान की दया से शादी भी हो गई। आज मैं तुमसे यह वादा लेना चाहती हूं कि अगर मैं मर गई तो भी तुम दूसरी शादी नहीं करोगे।'

'कैसी बातें करती हो डालिंग', पति बोला, 'मुझ पर एतवार न हो तो आजमा कर

देख लो ।’

तीसरी किस्त

डॉ० भीमराव अम्बेडकर

जीवन और योगदान

आंतरिक सुरक्षा अकादमी माऊंट आबू द्वारा प्रायोजित ‘डॉ० भीमराव अम्बेडकर-जीवन और योगदान’ विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरुस्कार से सम्मानित 10 वीं बटालियन के उपाधीक्षक श्री प्रताप सिंह के निबंध की तीसरी कड़ी ।

2. संकल्पों के लिए :-

डा० भीमराव अम्बेडकर ने जन्म से लेकर जिस सामाजिक विषमता और धार्मिक दूराव को झेला था और जिन मनुनीत सामाजिक विकृतियों को झेलकर अम्बेडकर बड़े हुए थे वह कुल अनुभव उनके समक्ष थे, जो संकल्प उन्होंने किये थे उन्हें मूर्त रूप देने का समय था । अम्बेडकर करोड़ों त्रस्त पीड़ित और निरीह मूक लोगों को भाषा देना चाहते थे और हीन भावना, अछूतपन एवं द्वितीय श्रेणी के नागरिकों की तरह जीने की पीड़ा से मुक्ति दिलाना चाहते थे । अब अम्बेडकर वकालत भी करते थे और अपने लोगों के बीच सामाजिक कार्य भी करते थे । उनके सम्पूर्ण जीवन के कटु अनुभव रात दिन उनके समक्ष रहते थे। वे चाहते थे कि जिस अधंकार, पीड़ा, निराशा एवं अभावों की गहराई से उन्हें गुजरना पड़ा है उनसे उन जसे अन्य करोड़ों लोगों को गुजरना न पड़े । रात दिन अम्बेडकर इसी उधेड़ बुन में रहते थे कि किस प्रकार अछूतपन के इस कलंक को अपनी जाति के मस्तक से हटा दें । वह नहीं भूलते थे कि उनका पूरा समाज किस दीन दिशा में जी रहा था ।

अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक “जाति भेद विनाश” में अपने समाज के विरुद्ध होने वाले धार्मिक एवं सामाजिक अत्याचारों का स्मरण कराया है । अम्बेडकर ने समाज में होने वाले दूराव और बहुत कठोर अपमान झेले थे और अम्बेडकर व्यक्तिगत रूप से इस स्थिति से बहुत उद्वेलित रहते थे ।

अम्बेडकर अछूतोद्धार के कार्यों को अपने ही समाज के लोगों द्वारा किया जाना श्रेष्ठ मानते थे । द्विजों द्वारा इस और किये गये कार्यों को अम्बेडकर बिल्लों द्वारा चूहों की, बाघों द्वारा बकरियों की एवं बाजों द्वारा बटेरों की नसल सुधारने की संज्ञा

देते थे। गांधी जी से उनका मात्र यह दुराव था कि गांधी वण व्यवस्था, अवतारवाद, गीता, रामायण, एवं विष्णु भक्ति आदि को हिन्दु धर्म का आधार मानते हुये अछूतोंद्वारा करना चाहते थे, जबकि अम्बेडकर हिन्दू समाज में धुसी हुई पोंगा पन्थी में आमूल परिवर्तन के समर्थक थे। वास्तव में गांधी जी का यह जोड़ तोड़ और घुमाव का ढंग अम्बेडकर को मान्य नहीं था। अम्बेडकर ने जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन लगाने का प्रण लिया था वह उसमें धुमाव व दूराव के लिए तैयार नहीं थे। अम्बेडकर अन्याय को सीधे और प्रत्यक्ष ढंग से समाप्त करना चाहते थे। कोल्हापुर नरेश की अध्यक्षता में “भारतीय बहिष्कृत परिषद” के अधिवेशन में अम्बेडकर ने एक प्रस्ताव पारित कराया था कि “अछूत भाईयों को अपने उद्धार के लिए अपने ही पैरों पर खड़ा होना चाहिए।”

“अल्पज संघ” अम्बेडकर ने अछूतों के चन्दे व सहयोग से चलने वाली संस्था बनाई। इस संस्था ने वाचनालय, छात्रावास एवं पुस्तकालयों की ऐसी कड़ी स्थापित की, कि अछूतों में यह संघ चेतना का केन्द्र बिन्दु बन गया। सांस्कृतिक विकास एवं आत्मोद्धार के दृष्टिकोण से अम्बेडकर ने “बहिष्कृत हितकारिणी सभा” की स्थापना की इसका अधिवेश सी. एम. सी तलवाड़ की अध्यक्षता में सन् 1924 ई० में सम्पन्न हुआ। अम्बेडकर ने शोलापुर में “हाकीकल्ब” की स्थापना की और “बहिष्कृत भारत” पत्र निकाला। अम्बेडकर सामाजिक विषमता और धार्मिक दुराव के विरुद्ध अपने समाज को जागृत करने के लिए व्यापक दौरे करते रहे और भाषण देते रहे।

25 अप्रैल सन् 1925 ई० को बम्बई के रतनागिरी जनपद में छोटे से गांव मालवान में “प्रान्तीय अस्पृश्य परिषद” के मंच से अम्बेडकर ने बहुत मार्मिक भाषण दिया और मंच के सामने बैठी महिलाओं की दीन दशा देखकर बिलख पड़े। अम्बेडकर ने कहा कि जैसा अन्न व कपड़ा दूसरे लोगों को प्राप्त है आपको भी प्राप्त होना चाहिए। यह तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है। इस अधिकार को प्राप्त करने के लिए तुम्हें स्वयं आगे आना होगा। मजबूत हृदय से काम करना होगा। अम्बेडकर मालावार गये और लोगों की दयनीय दशा देखकर दुखी हुए। अम्बेडकर अपने लोगों को सामाजिक समता दिलाने की ऊआ पोह में मालावार घूम रहे थे। उनकी वाणी गूंज रही थी और मालावार अम्बेडकर के विचारों से चमत्कृत होकर मचल रहा था।

महाद के चौदार तालाब से पानी पीने का अधिकार अछूतों को दिलाने के लिए अम्बेडकर ने एक सुनियोजित आंदोलन चलाया। इस संघर्ष में अम्बेडकर को चोट भी लगी परन्तु अम्बेडकर के नेतृत्व में अछूतों को भी चौदार तालाब से अन्य लोगों के समान पानी पीने का अधिकार न्यायालय से प्राप्त हुआ।

सन् 1927 में अमरावती, विदर्भ में अम्बादेवी मंदिर में प्रवेश पर “दलित जाति परिषद” में अम्बेडकर ने भाषण दिया और तीन माह बाद ही अम्बा देवी का मंदिर अछूतों के लिए खोल दिया गया। तीन फरवरी सन् 1928 ई० को ‘साईमन कमीशन’ के समय अम्बेडकर ने “बहिष्कृत हितकारिणी सभा” के माध्यम से फौज, पुलिस और काउंसिलों में अछूतों के प्रतिनिधित्व की मांग की। सन 1929 में अम्बेडकर ने

“दालेत जाते पारेषद” “समाज समता संघ”, और “समता सौनेक दल” की स्थापना बम्बई में की और अछूत वर्ग के लिए नागरिक अधिकार प्राप्त करने के लिए सक्रिय संघर्ष किया।

दादरा गणेशोत्सव में अछूतों के प्रवेश को लेकर अम्बेडकर ने संघर्ष किया और अपने लोगों को अन्य लोगों की तरह उत्सव में सम्मिलित होने का अधिकार दिलाया। नासिक के प्रसिद्ध कालेराम के मंदिर में अछूत प्रवेश नहीं कर पाते थे और न ही उन्हें भगवान राम का रथ खींचने का अधिकार था। 2 मार्च सन् 1930 को अम्बेडकर के नेतृत्व में श्री कालेराम का रथ खींचने के लिए अछूतों ने सत्याग्रह किया और पोंगा पंथी हारे, तथा अछूतों को मन्दिर प्रवेश और रथ खींचने का अधिकार प्राप्त हुआ।

यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि जहां अम्बेडकर समाज में अपने लोगों को अधिकार दिलाने के लिए संघर्षरत थे वहीं साथ ही भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलन में एक विशेष वाणी से अंग्रेजों के समक्ष वह इस समस्या को स्पष्ट रख रहे थे कि जब भारत स्वतंत्र होगा तो उसमें करोड़ों अछूतों को क्या सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक अधिकार प्राप्त होंगे? अम्बेडकर अंग्रेजों से स्वतंत्र भारत में अपने लोगों के लिए और दूसरे राष्ट्रीय नेताओं से राजनैतिक अधिकारों की गारन्टी चाहते थे। 25 नवम्बर सन् 1930 ई० में गोलमेज सम्मेलन के समय अम्बेडकर ने यह मुद्दा इंग्लैंड में भी उठाया था और कहा था कि उनके वर्ग के लोगों की स्थिति भारत में कुत्ते और बिल्लियों से बेहतर नहीं है। उनकी दशा सुधारने के लिए अंग्रेजों ने भी कुछ नहीं किया इसलिए वह जनता के लिए, जनता का, जनता के द्वारा संचालित राज्य चाहते थे। गांधीजी अम्बेडकर के इन कार्याकलापों से बहुत विचलित थे। भारत लौटकर आये अम्बेडकर से उन्होंने विस्तृत वार्ता की, परन्तु अम्बेडकर थे कि अपने उद्देश्य से टस से मस न हुए। वास्तव में अम्बेडकर अपने लोगों के प्रति इतने गहरे समर्पित थे कि उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता जैसा मुख्य कार्य भी अपने लक्ष्य की अपेक्षा गौण ही दिखाई देता था। (जोरी)

हम भारत के बेटे हैं

सजग प्रहरी बन कर घूमें, देश की रक्षा करने को,
जान हथेली लिये चले हम, भ्रष्टाचार से लड़ने को।

कैसी थी तस्वीर हिन्द की, कैसी सामने आई है,
देशद्रोही, भ्रष्टाचारी, की अब शामत आई है।

कर में है बन्दूक, कमर में बारूदों को लपेटे हैं,
बूट, बेल्ट और सजी है टोपी, हम भारत के बेटे हैं,

शांति व्यवस्था कायम थी जहाँ, आज आग के शोले हैं,
इसीलिये इस अग्नि शमन को, बने जवाँ हम ओले हैं ।

विभक्त न होने देंगे देश को, हर जवान की बोली है,
छिन्न-भिन्न जो करे अखण्डता, उसके लिए हम गोली हैं ।

कोई बांटना चाहे देश को, कोई स्वर्ण समेटे है,
अरमां चूर करेंगे उनके, हम भारत के बेटे हैं ।

अविरल बहती धारा को पोंछ के हम दिखला देंगे ।
करके आतंकवाद का अन्त, प्रणय पुष्प खिला देंगे ।

वर्दी जो धारण की हमने, उसकी शान बढ़ायेंगे ।
हिन्द से विद्रोहियों का हम, नामो निशां मिटायेंगे ।

शस्त्र परीक्षण उच्च कोटि का, 'खैरा' ना यूँ ही लेते हैं ।
कदम हमारा उठे देश-हित, हम भारत के बेटे हैं ।

हवलदार जी० सी० खैरा,
डी/13वीं बटालियन



पंजाब में बल के जवानों द्वारा आतंकवादियों से बरामद किए गए हथियार ।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा । सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना । मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक
के० रि० पु० बल, ब्लॉक 1, सी० जी० प्रो० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा ।
मुद्रक : सी० आर० पी० एफ० प्रेस, झड़ोदा कलाँ, नई दिल्ली-110072 ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

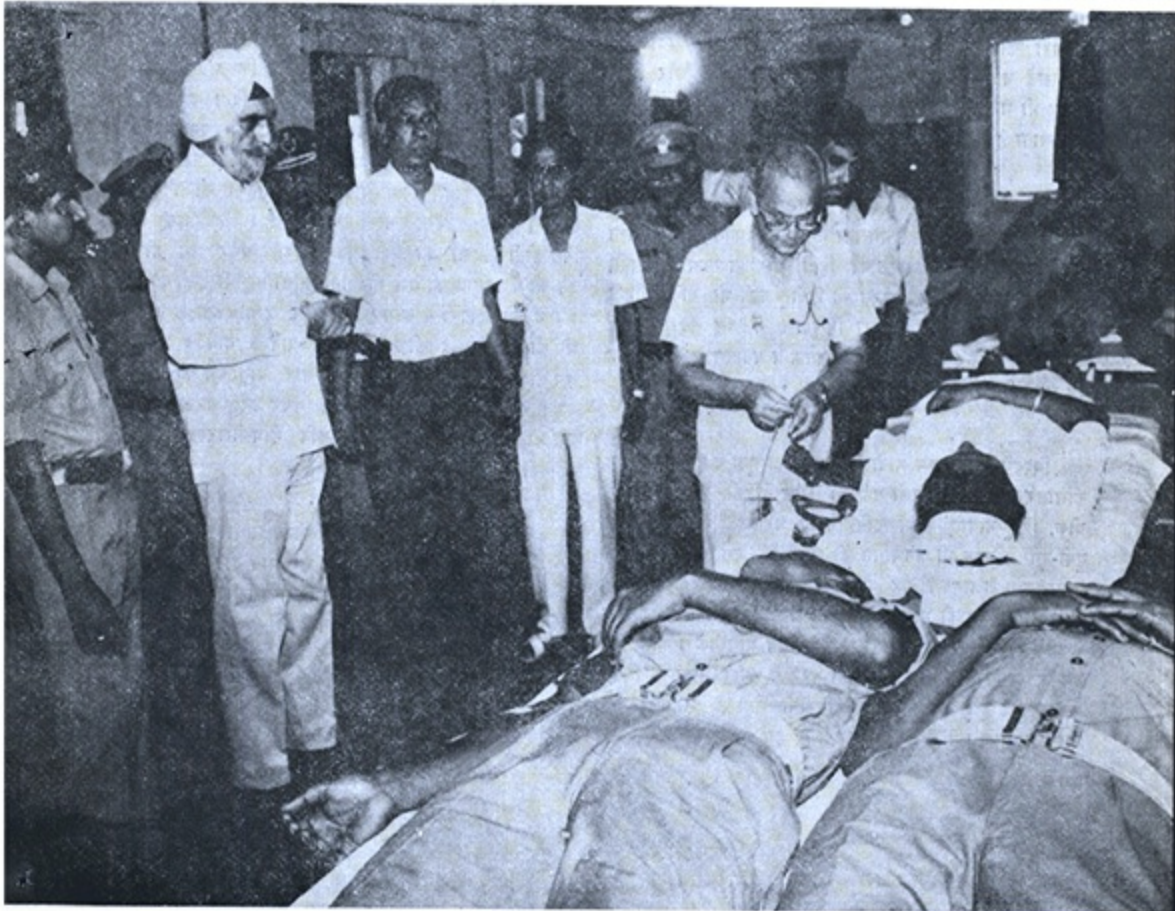
सीआरपीएफ समाचार

खंड IV अंक VI

मूल्य 1.95 रुपये

30 सितम्बर, 1991

8 आश्विन शक 1913



छाया—सतीश खन्ना

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर का अवलोकन करते हुए महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल ।

सम्पादकीय

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसका जितना उत्थान, विकास हो, राष्ट्र उतना ही गौरवान्वित होगा। सितम्बर का महीना आते ही सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों में तेजी लाई जाती है। इसी महीने हम हिंदी दिवस और हिंदी सप्ताह भी मनाते हैं। इस दौरान बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि हिंदी को प्रोत्साहन देने की जरूरत है।

हिंदी की ग्राह्यता पूरे विश्व में बेमिसाल है। विश्व की किसी अन्य भाषा में यह गुण नहीं मिलता। हर चार कोस के बाद इसका स्वरूप बदल जाता है। मेरठ की हिंदी और लखनऊ की हिंदी, हैदराबाद की हिंदी और बनारस की हिंदी, कहीं भी देखिए हिंदी स्थानीय स्वरूप में ढली लिपटी मिलेगी। न यह हैदराबाद में अपरिचित बनकर पहुंचती है न लखनऊ व बनारस में, हर जगह यह अपने लिए जगह बनाती आई है।

विश्व की महानतम भाषाएं, ग्राह्यता का गुण न होने के कारण कालांतर में मृत होती चली गई हैं। आज वैदिकी, संस्कृत, लैटिन ग्रीक, हिब्रू भाषाएं केवल इतिहास की धरोहर हैं, जबकि हिंदी युगों-युगों से आज भी जनमानस की भाषा है, बस समय-समय की आवश्यकता के अनुरूप यह अपना स्वरूप बदलती रही है। यह आज भी जनजन की भाषा है। किन्तु अंग्रेजों के भारत में आगमन के साथ ही अंग्रेजी भी हमारे यहां फैशन एवं आधुनिकता का प्रतीक बनकर घुसपैठ कर गई और बुरी तरह से हमारे मानस से चिपट कर रह गई है। हम अंग्रेजी के विरोधी नहीं हैं, अंग्रेजी एक विश्व भाषा के रूप में तेजी से उभरी है, हम इसकी भावक्षमता एवं वैज्ञानिक स्वरूप की प्रशंसा करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि आज उच्च शिक्षा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के लिए इसका ज्ञान अति आवश्यक है। हम अंग्रेजी को उसके स्थान से हटाना नहीं चाहते, किंतु हम यह अवश्य चाहते हैं कि अंग्रेजी को यह सम्मान अपनी मातृभाषा का अपमान कर न दिया जाये। हिंदी अपने विकास, अपने सार्वजनिक स्वरूप एवं जन हृदय साम्राज्ञी के पद से सन्तुष्ट है, मगर उसे अपमानित तभी होना पड़ता है, जब वह खेतों-खलिहानों, सड़कों से निकलकर शहरों की विशालकाय इमारतों में स्थित भव्य दफ्तरों में पहुंचती है। हिंदी अगर अपमानित होती है, तो यहीं इन्हीं दफ्तरों में और अगर उसे प्रोत्साहन देने की फैशननुमा कोशिश की जाती है, तो वह भी इन्हीं दफ्तरों में, जबकि इन दफ्तरों में काम करने वाले प्राथमिकता के नाम पर अंग्रेजी के दो शब्द ठीक से न बोल पाने के बावजूद 'नोटशीट' अंग्रेजी में ही तैयार करते हैं। ऐसे सारे बाबू वर्ग को जो अपने बुजुर्गों से बात तो हिंदी में करता है, मगर उन्हें सरकारी नोटिस अंग्रेजी में भेजता है, हम राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां याद दिलाना चाहेंगे—

जिसको न निज गौरव तथा
निज भाषा का अभिमान है,

वह नर नहीं, नर निरा पशु है,
और मृतक समान है।

(अ०ना० शर्मा)

इंटर सेक्टर वालीबाल टूर्नामेंट

उत्तरी सेक्टर विजयी



मैच का एक रोमांचक क्षण

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इंटर सेक्टर वालीबाल टूर्नामेंट के अन्तिम दिन 23 सितम्बर, 1991 को खेले गए फाइनल मुकाबले में उत्तरी सेक्टर ने उत्तर पश्चिम सेक्टर को 15-10, 15-3 से हराकर चैम्पियनशिप ट्रॉफी जीत ली।

इन पांच दिवसीय प्रतियोगिताओं का उद्घाटन बल के अपर महानिदेशक श्री सी० एस० द्विवेदी ने 19 सितम्बर, 1991 को नई दिल्ली रविन्द्र रंगशाला स्थित 86 बटालियन स्थल पर किया था।

इस प्रतियोगिता में बल के उत्तरी सेक्टर (दिल्ली), दक्षिण सेक्टर (हैदराबाद), पूर्वी

सेक्टर (कलकत्ता), उत्तर पूर्वी सेक्टर (शिलांग), उत्तर पश्चिम सेक्टर (चंडीगढ़) तथा केन्द्रीय सेक्टर (लखनऊ) की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मैच लीग-कम-नाट आउट आधार पर खेले गए।

फाइनल मुकाबले के दिन अन्य दर्शकों के साथ-साथ बल के अपर महानिदेशक श्री आर० के० वढ़ेरा भी उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरुस्कार प्रदान किए।

उत्तर सेक्टर की टीम को फाइनल तक पहुंचने के लिए दक्षिण सेक्टर को 17-5, 15-4, केन्द्रीय सेक्टर को 15-4, 15-6 तथा पूर्वी सेक्टर को 15-8, 10-5, 15-7, 15-5 से हराना पड़ा। जबकि उत्तर पश्चिम सेक्टर की टीम को यहां तक पहुंचने के लिए पूर्वी सेक्टर, उत्तर पूर्वी सेक्टर तथा केन्द्रीय सेक्टर की टीमों को क्रमशः 15-12, 15-6, 15-4, 15-5 तथा 15-13, 11-15, 15-9 से हराना पड़ा।

जिमनास्टिक प्रतियोगिताएं

ग्रुप केन्द्र आवड़ी में 9 से 12 अगस्त, 1991 तक इन्टर सेक्टर जिमनास्टिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बल के सभी छः सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन उप-महानिरीक्षक श्री आर०एस० मुशाहारी ने किया। पूर्वी सेक्टर की टीम ने प्रतियोगिता में 510.40 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि 347.65 अंक प्राप्त करने पर उत्तर पूर्वी सेक्टर को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। 339.45 अंक प्राप्त कर उत्तरी सेक्टर की टीम तीसरे स्थान पर रही।

केन्द्रीय सेक्टर के इन्सपेक्टर के० राजेन्द्रन प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ जिमनास्ट घोषित किए गए।

चार अपराधी पकड़े



अपराधियों से पकड़े गए हथियार

37 बटालियन की एक टुकड़ी 27 जुलाई, 91 को मोकामा में कानून व्यवस्था ड्यूटी के लिए तैनात थी। 28 तारीख सुबह एक बजे प्लाटून स्थानीय पुलिस के साथ भरोची थानांतर्गत हुमरा गांव में गई। वहां प्लाटून ने एक संदिग्ध घर में छापा मारा तथा भारी मात्रा में हथियारों एवं कारतूसों के साथ चार अपराधियों को भी गिरफ्तार कर लिया। बरामद हथियारों में एक सेमी ऑटोमैटिक राइफल, पांच देशी पिस्तौलें, एक-38 रिवाल्वर तथा तीन 315 राइफल भी शामिल हैं।

78 बटालियन की प्रशंसा

संसदीय राजभाषा समिति ने 24 से 26 सितम्बर, 1991 तक मिजोरम स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग का जायजा लिया। 24 सितम्बर, 1991 की समिति के सदस्यों ने बल की 78 वीं बटालियन का दौरा किया। समिति के सदस्य बटालियन की स्वच्छता बागवानी, लगाए गए बेनरों, नामपट्ट व हिन्दी के प्रयोग से बहुत प्रभावित हुए। बटालियन के कमांडेंट धूमसिंह ने समिति को बताया कि उनकी बटालियन पिछले कई वर्षों से इस क्षेत्र में कार्यरत हैं और विभिन्न प्रकार की परिचालन ड्यूटियों को निभाती आ रही है। उन्होंने बटालियन में हिन्दी प्रगति के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख किया। कमांडेंट ने समिति को यह भी आश्वासन दिया कि अभी तक बल की परम्परा के मुताबिक प्रत्येक सोमवार हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता था, किन्तु अब उनकी बटालियन में हर दिन ही हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाएगा। समिति के सदस्य बल में हिन्दी के कार्य से संतुष्ट थे।

के०रे०पु० बल ने 293 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अगस्त, 1991 में देश भर में 293 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान देश भर में आतंकवादियों एवं देशद्रोही तत्वों से हुई कुल 179 मुठभेड़ों में 69 आतंकवादी मारे गए तथा दो घायल हुए। इन में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गए आतंकवादियों में भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान का स्वयंभू ले० जनरल रामसिंह चहल उर्फ अमरीकसिंह, मंधरसिंह उर्फ धिरास उर्फ अजितसिंह, परमजीत सिंह उर्फ पम्मा उर्फ कमला, बलविंदर सिंह उर्फ छत्तर सिंह, अमरीकसिंह, खालिस्तान लिब्रेशन आर्गेनाइजेशन का एरिया कमांडर जगतारसिंह जग्गा तथा खालिस्तान कंमाडो फोर्स का मुखिया गुरंजसिंह राजस्थानी जैसे दुर्दांत आतंकवादी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल जवानों ने 125 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में 20 ए. के. 47 राइफलें, 27 पिस्तोलें, 19 राइफलें, नौ ए. के. 56 राइफलें, एक ए. के. 74 राइफल, एक स्टेनगन, एक थामसन गन, आठ माउजर, एक एल. एम. जी., चार एस. एल. आर. तथा एक राकेट लांचर भी शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के 10 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए जबकि 47 गम्भीर रूप से घायल हुए।

माह अगस्त, 1991 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अगस्त, 1991 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल एन. जी. राम (98 बटा०) कां० आ० पट्टाभिरमन (91 बटा.), बारबर बिक्रम ठाकुर (72 बटा.), वाटर मैन मोती लाल (72 बटा.), सफाई कर्मचारी मुन्ना लाल (72 बटा.), सफाई कर्मचारी भंवर लाल (72 बटा.), कां. रमेश लाल (20. बटा.), सब इन्स्पेक्टर दिवान चन्द (75 बटा.), नायक एम. के. अत्तर (75 बटा.), लां. नायक मेघराज सैनी (75 बटा.), कां./ ड्रा. प्रवीण भाई (75 बटा.), कां. सुल्तान खान (75 बटा.), कां. हल्कूराम (75 बटा.), कां० मोहम्मद आसिफ (20 बटा.), सहायक कमांडेंट सी. गोपी (3 सिंग. बटा.) कां० पाल सिंह (61 बटा.), लां. नायक बशीर हुसैन (98 बटा.), कां. एम. आर. भाई (4 बटा.), नायक गंगाराम (4 बटा.), कुक नर बहादुर (ग्रु. के. नई दिल्ली), नायक बीरपाल सिंह (126 बटा.), लां. नायक लक्ष्मणसिंह (ग्रु. के. रामपुर), रंगरूट कां. एन. वैकटेशन (115 बटा.), लां. नायक सुलतान सिंह (85 बटा.), उ.नि. मोटर मैकेनिक धर्मपाल यादव (18 बटा.) एवं कां. पी. ए. रेड्डी (61 बटा.)।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह अगस्त, 1991 में मृत्यु के 13 मामलों में कुल 4 लाख 55 हजार रुपये देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रति मामला 10 हजार रुपये की केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी. बी. एफ. राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के चार मामलों में 60 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।

हिंदी सप्ताह

के. रि. पु. बल महानिदेशालय में 5 से 13 सितम्बर, 1991 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित हिन्दी डिक्टेसन प्रतियोगिता का पहला पुरस्कार अनुभाग अधिकारी श्री प्रेमचन्द जैन, दूसरा पुरस्कार अनुभाग अधिकारी ज. ल. बजाज तथा तीसरा पुरस्कार अनुभाग अधिकारी जे० एल० पंडिता को प्रदान किया गया। हिन्दी नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार उप निरीक्षक (मं), कंवरसिंह, द्वितीय पुरस्कार सहायक उप-निरीक्षक (मं) हरफूलसिंह तथा तीसरा पुरस्कार सुबेदार मेजर (मं) जे. जे. भट्ट को प्रदान किया गया।

हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार स. उ. नि. (मं) आलमसिंह रावत, दूसरा पुरस्कार उ. नि. (मं) श्रीमती सुनीता दुग्गल तथा तीसरा पुरस्कार स. उ. नि. (मं) मलखानसिंह को प्रदान किया गया। ग्रुप केन्द्र नीमच में भी 14 से 21 सितम्बर, 1991 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। इस में पु. उ. म. नि. कार्यालय, ग्रुप केन्द्र, सी. टी. सी.-1 आर. टी. सी.-1, 4 सिगनल बटालियन, 89 बटालियन तथा 112 बटालियन के कर्मचारियों ने भाग लिया।

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 को ट्राफी



श्री विनोद सेठ केरल के मुख्य मंत्री श्री करुणाकरण से ट्रॉफी ग्रहण करते हुए

इस वर्ष केरल में मनाए गए पर्यटक समारोह के दौरान त्रिवेन्द्रम में आयोजित समारोहों में के०रि०पु०बल रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 के कार्मिकों ने काफी उत्साह के साथ भाग लिया, इन समारोहों में बल के कार्मिकों की भूमिका और कार्यक्रमों की सम्मानित अतिथियों और जनता ने भरपूर प्रशंसा की।

बल के कार्मिकों की इस उपलब्धि के लिए स्थानीय पर्यटक निदेशक ने बल की टीम को एक विशेष ट्रॉफी देने की घोषणा की। 23 अगस्त, 1991 को त्रिवेन्द्रम में आयोजित एक भव्य समारोह के बीच केरल के मुख्य मन्त्री श्री करुणाकरण ने रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 के प्रधानाचार्य श्री विनोद सेठ को यह ट्रॉफी प्रदान की।

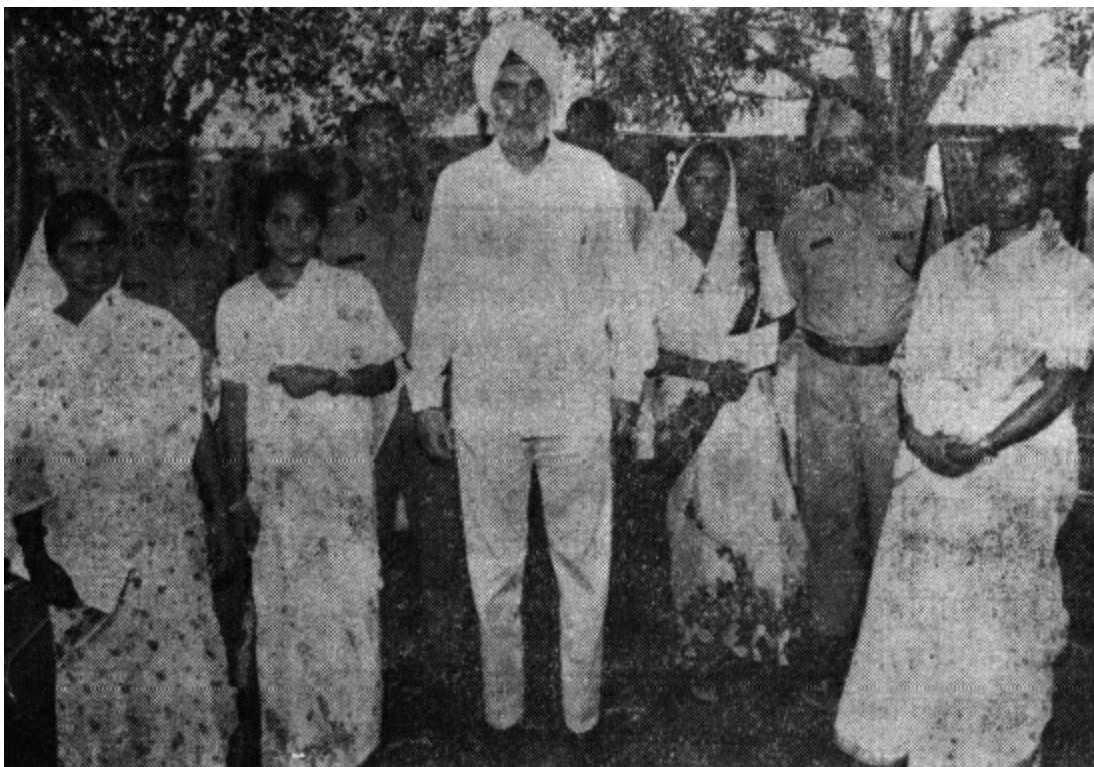
हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार स. उ. नि. (मं) ओमप्रकाश अभिचदांनी ग्रुप केन्द्र नीमच को, द्वितीय पुरस्कार स. उ. नि. (मं) बिशनसिंह गौड़, 112 बटालियन को तथा तृतीय पुरस्कार स. उ. नि. (मं) श्रीमती गीता जोशी, ग्रुप केन्द्र नीमच को दिया गया।

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार 89 बटा. के स. उ. नि. (मं) मनोज भम्भानी को, दूसरा पुरस्कार ग्रुप केन्द्र नीमच की स.उ.नि (मं) कुमारी गीता शर्मा तथा स.उ.नि. (मं) गोविन्द सिंह रघुवंशी को तथा तीसरा पुरस्कार ग्रुप केन्द्र नीमच के उ. नि. सुग्रीवसिंह को दिया गया।

हिन्दी नोटिंग-डाफ्टिंग के लिए पहला पुरस्कार ग्रुप केन्द्र नीमच के स.उ.नि (मं) कृष्णानन्द मौर्य को, दूसरा पुरस्कार 89 बटालियन के उ. नि. (मं) ए. ओ. एंटनी को, तथा तीसरा पुरस्कार 89 बटालियन के नायक मो. ख्वाजा को दिया गया।

आहेन्दो भाषेयों के लिए हिन्दी वाक् प्रातियोगेता का पहला पुरस्कार ग्रुप केन्द्र नीमच की स. उ. नि. (मं) कुमारी सीता को, दूसरा पुरस्कार सी. टी. सी.-1 के सिपाही संदीप दत्ता को तथा तीसरा पुरस्कार ग्रुप केन्द्र नीमच के हवलदार आर. पुष्प राज व स० उ० नि० (मं) आर. वेणुगोपाल को प्रदान किया गया।

विधवाओं को अनुदान और 400 कार्मिकों द्वारा रक्तदान



अनुदान प्राप्त करने वाली आश्रिताओं के साथ महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल

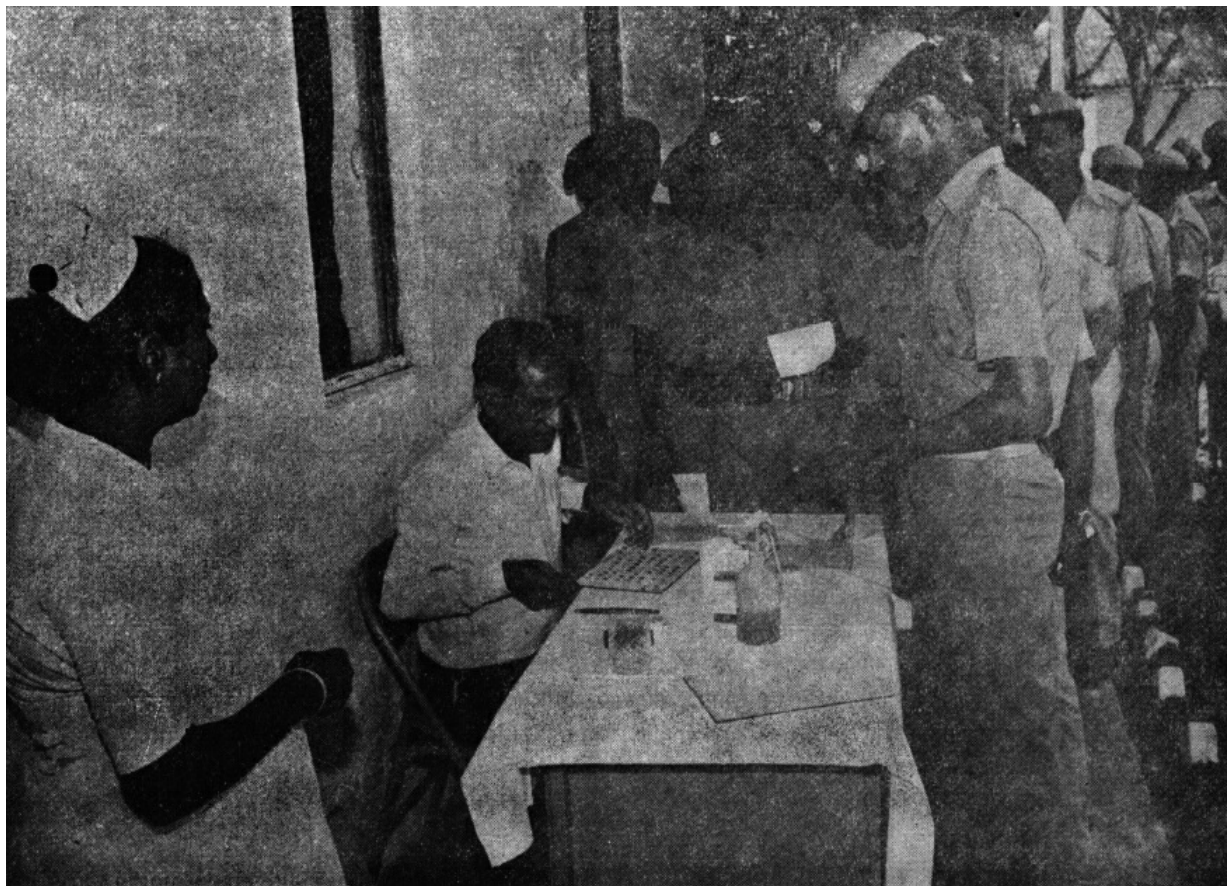
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने 16 अगस्त, 1991 को स्वतंत्रता दिवस अनुष्ठान रूप में मनाया। इस अवसर पर दिल्ली स्थित बल की यूनिटों के 400 अधिकारियों और जवानों ने आर० के० पुरम स्थित के० रि० पु० बल अस्पताल में रक्तदान किया। इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री के० पी० एस० गिल ने किया।

इसी अवसर पर आयोजित एक सादे एवं भावभीने समारोह में श्री गिल ने पंजाब में आतंकवादियों का सामना करते हुए मारे गए बल के तीन कार्मिकों की विधवाओं को दो-दो लाख का चेक भेंट किया। तथा एक विधवा को एक लाख का चेक भेंट किया।

33 बटालियन के उपाधीक्षक विशम्भर सिंह; 22 फरवरी, 1991 को भोजिया ग्राम

में आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

20 मार्च, 1990 को पंजाब के एक गांव धोतिया में आतंकवादियों ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी। सूचना मिलते ही बल की 33 बटालियन की एक टुकड़ी घटनास्थल की ओर कूच कर गई। रास्ते में आतंकवादियों ने घात लगाकर बल की टुकड़ी पर स्वचालित हथियारों से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद लांसनायक ओंकार सिंह ने बहादुरी से आतंकवादियों का सामना किया मगर बाद में वह वीरगति को प्राप्त हुए।



रक्तदान के लिए पंक्तिबद्ध बल के कार्मिक

30 नवंबर, 1990 को मोगा शहर में एक डाक्टर की हत्या का समाचार मिलते ही बल की 71 बटालियन की एक टुकड़ी घटनास्थल की ओर कूच कर गई। रास्ते में आतंकवादियों के हमले से नायक शिवचरण बुरी तरह घायल हो गए। घायल होने के बावजूद वह आतंकवादियों का सामना करते रहे, अंततः इस संघर्ष में वह वीरगति को प्राप्त हुए।

12 दिसम्बर, 1990 को यह सूचना प्राप्त होने पर की आतंकवादियों का एक तरफ जा रहा है, तत्काल 71 बटालियन की एक टुकड़ी गंतव्य की तरफ रवाना हुई। रास्ते में एक गन्ने के खेत में छिपे आतंकवादियों से मुठभेड़ होने पर लांसनायक रामानन्द अत्याधिक घायल हो गए, किन्तु वह घायलावस्था में भी खेत में घुस गए तथा

आतंकवादियों से आंतेम सांस तक लोहा लेते रहे।

मृतकों की आश्रिताओं को अनुदान राशि के यह चेक पंजाब सरकार की तरफ से भेंट से भेंट किए गए हैं।

इस अवसर पर मौजूद सभी अधिकारियों और जवानों ने एक मिनिट का मौन रख कर वीरगति को प्राप्त कर्मिकों को अपनी श्रद्धांजलि भी दी।

हिन्दी राष्ट्रीय एकता की कड़ी

हिन्दी दिवस के अवसर पर आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माऊन्ट आबू में 'हिन्दी-राष्ट्रीय एकता की सशक्त कड़ी' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ पाए गए सहायक कमांडेंट श्री प्रताप सिंह के निबंध को अपने पाठकों की जानकारी के लिए हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं :

प्रस्तावना : हिन्दी भाषा को संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अन्तर्गत संघ की भाषा यानि भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। संविधान में कुल 15 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है और उनमें हिन्दी भी शामिल है, परन्तु सिर्फ हिन्दी को ही राजभाषा घोषित किया गया है। हिन्दी का जन्म आठवीं शताब्दी में हुआ और इसका प्रारम्भिक स्वरूप ब्रज, मैथिली, राजस्थानी में देखने को मिलता है जिसमें क्रमशः सूरदास, विद्यापति तथा मीराबाई ने अपनी कविताओं की रचना की थी जिनको अभी हिन्दी साहित्य की धरोहर माना जाता है। इस 1200 वर्ष की लम्बी आयु में हिन्दी ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। आजादी से पूर्व जब अंग्रेजों से देश को आजाद करवाना था तब हमारे साहित्यकारों और शिक्षक वर्ग ने हिन्दी ही के माध्यम से कविताएं और भाषण बोलकर राष्ट्रियता की भावना को जागृत किया जिनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम मुख्य है। आजादी तो मिल गई परन्तु अंग्रेज अपनी अंग्रेजी को छोड़ गये जो आज तक सिंहासन पर विद्यमान है। संविधान बनाते समय यह बात मद्देनजर रखी गई थी कि हिन्दी को उपयुक्त स्थान दिया जावे और इसी कारण इसे राजभाषा घोषित किया गया था; परन्तु “राजभाषा” और “राष्ट्रभाषा” में अन्तर होता है। भारत संघ अपना सरकारी कामकाज चाहे हिन्दी में ही करे परन्तु जब तक सभी राज्य हिन्दी को नहीं अपनायेंगे तब तक यह राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। राजभाषा अधिनियम, 1963 में प्रावधान किया गया और हिन्दी को लागू करने के लिए कदम भी उठाये गये। परन्तु जो अनुच्छेद 343 (2) में कहा गया था कि संविधान लागू होने के 15 साल तक अंग्रेजी में कामकाज किया जायेगा बाद में हिन्दी में ही सभी कार्य किए जाएंगे ऐसा नहीं हो सका। जिसका परिणाम आज सामने है कि अंग्रेजी अभी भी अपना महत्व बनाए हुए है। भाषा चाहे कोई भी हो जब तक यह जन-जन की भाषा नहीं हो जाती इसे राष्ट्रभाषा कहना अनुचित होगा। भारत में कोई भी भाषा अभी तक राष्ट्र-भाषा नहीं रही है। हिन्दी

हो एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारत में 40 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है और अन्य अहिन्दी-भाषी राज्यों में भी 50% लोग हिन्दी बोल सकते हैं या समझ सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि कम से कम 50% लोग हिन्दी जानते हैं जबकि अंग्रेजी, जो आज सब भाषाओं में आगे है, इसको सिर्फ 2% लोग ही बोल व समझ सकते हैं। हिन्दी ही हमारी मातृभाषा है और अंग्रेजी विदेशी भाषा है। तो जब आज़ादी के वक्त हमने सभी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया था तो अंग्रेजी का बहिष्कार भी होना चाहिए था। इसका अर्थ यह नहीं है कि हिन्दी के प्रचार तथा ज्ञान का कोई प्रचार ही नहीं हुआ, हुआ है परन्तु जितना होना चाहिए था उतना नहीं हो सका है। अभी हम देखते हैं कि हमारी राजभाषा का हमारी राष्ट्रीय एकता से क्या सम्बन्ध है।

हिन्दी और राष्ट्रीय एकता

यह कहा जाता है कि भारत में अनेकता में एकता है और भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोग, विभिन्न संस्कृतियों को मानने वाले लोग, रहते हैं और सदियों से रहते आये हैं, फिर भी वे एकता के सूत्र में बन्धे हुए हैं। इतिहास गवाह है कि जब भी कभी संकट की घड़ी आई है हमने अपनी भाषा, क्षेत्र और धर्म को भूलकर एकजुट होकर उसका सामना किया है। परन्तु अभी ऐसी परिस्थितियाँ हैं कि लोग अपने राजनीतिक, धार्मिक, सामुदायिक क्षेत्रीय हितों को सामने रखकर भाषा, धर्म, क्षेत्र सामुदायिक आधार पर देश के टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं। दक्षिण भारतीय राज्य हिन्दी के नाम से चिढ़ते हैं। ऐसे समय में हिन्दी ही एकमात्र ऐसा साधन है जो 50% लोगों की भाषा है और अन्य कोई भाषा ऐसी नहीं है जिसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाये और इन्सान को इन्सान से एक सूत्र में बांधा जा सके। जिस प्रकार सोवियत रूस, चीन, जापान, जर्मनी आदि देशों में एक भाषा होने से पूरा राष्ट्र एकता के सूत्र में बंधा रहता है और यह सफल भी रहा है, ठीक उसी प्रकार हिन्दी को संपर्क भाषा बनाकर अहिन्दीभाषी लोगों को भी हिन्दी भाषी बनाया जा सकता है तभी हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा की जा सकती है। परन्तु यह तब तक संभव नहीं है जब तक सरकार अपनी शिक्षा नीति का समन्वय हिन्दी के साथ नहीं करती। भाषा अगर हिन्दी होगी तो उसे जन-जन की भाषा बनाना आसान होगा क्योंकि इसे अधिकतर लोग बोल सकते हैं, समझ भी सकते हैं और थोड़ी सी कठिनाई से इसे राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी ही क्यों जरूरी है ?

1. अब प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी को ही क्यों राष्ट्रीय भाषा बनाया जाये। उसके कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण यह है कि हिन्दी ही भारत में पैदा हुई एकमात्र ऐसी भाषा है जो अधिकतर लोगों द्वारा बोली जाती है और जो लोग हिन्दी नहीं जानते उन्हें इसकी शिक्षा देना आसान है।
2. भावनात्मक एकता के लिए एक ही भाषा का राष्ट्रभाषा और वह भी हिन्दी का राजभाषा होना ही उपयुक्त होगा जिससे लोगों में अर्पने-पन की भावना, एकता की

भावना पैदा होगी और इससे न केवल राष्ट्रीय एकता को ही बल मिलेगा बल्कि अन्य भी कई समस्याएं हल हो जाएंगी।

3. अभी सरकार अधिकतर धन कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए खर्च कर रही है और अगर हमारी भाषावादी, क्षेत्रवाद, समुदायवाद, धार्मिक समस्याएं हल हो जायें तो सरकार को कानून एवं व्यवस्था पर पैसा खर्च करना नहीं पड़ेगा। और वही पैसा देश की तरक्की के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा। इसलिए हिन्दी न केवल हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है बल्कि हमारी तरक्की के लिए भी आवश्यक है।

4. हिन्दी को अहिन्दी भाषी राज्यों में संपर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल करके हम किसी क्षेत्रीय भाषा को कोई ठेस नहीं पहुंचाएंगे और साथ ही हमारी हिन्दी भाषा की तरक्की भी होगी।

5. हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने से केन्द्र तथा राज्य सरकारों के बीच अच्छा समन्वय हो सकेगा और इसका नतीजा जल्दी ही नजर आना शुरू हो जाएगा।

6. वैज्ञानिकों द्वारा यह माना गया है कि हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है और जैसे लिखी जाती है वैसे ही बोली जाती है अतः इस भाषा के द्वारा लोगों को शिक्षित करना ज्यादा कठिन नहीं है।

7. संसार में अंग्रेजी, चीनी के बाद हिन्दी भाषा ही संसार के अधिकतर लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और भावी हिन्दी भाषा ही भविष्य में विश्व भाषा बनने का सपना देख सकती है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी का कहना है :—

“बनने चली विश्व भाषा जो
अपने घर में दासी है
सिंहासन पर रखकर,
जिसको सारी दुनिया भागी है”

यानि अपने घर में हिन्दी की कदर नहीं जब कि विश्व के बहुत से लोग हिन्दी बोल रहे हैं, सीख रहे हैं।

8. हिन्दी राष्ट्रभाषा और जन-जन की भाषा हो जाने के बाद क्षेत्रवाद, क्षेत्रीय भाषाओं की समस्या हल हो जाएगी।

राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय एकता :—

राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय एकता का घनिष्ठ संबंध है। राष्ट्रीय भाषा के हो जाने से लोगों में भावनात्मक एकता और अपना-पन पैदा हो जाता है। और वे फिर किसी भाषा को उच्च वर्ग या निम्न वर्ग की भाषा नहीं मानते। जैसा कि अभी अंग्रेजी को अमीरों की भाषा माना जाता है। सोवियत रूस, चीन के नेता अपनी राष्ट्रीय भाषा में ही भाषण इत्यादि देना अधिक पसंद करते हैं क्योंकि लोगों में एक प्रकार का अपनापन पैदा होता है और इसी अपनेपन से राष्ट्रीय एकता जन्म लेती है। एक व्यक्ति अपने

विचार दूसरों तक पहुंचा सकेगा उसे कोई कांठेनाई नहीं होगी और जब हिन्दी भाषा या अहिन्दीभाषी की दीवार खत्म हो जाएगी तो राष्ट्र सशक्त बनेगा।

हिन्दी राष्ट्रीय एकता की कड़ी

जिस प्रकार कड़ी से कड़ी मिलाकर चैन बनाई जाती है, ठीक उसी प्रकार हमारे नागरिक, जो हिन्दी भाषी हों, नागरिक से मिलकर एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। हिन्दी ने न केवल अपना प्रचार सहित्यिक तौर पर ही किया है बल्कि अन्य माध्यमों जैसे आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा हिन्दी सिनेमा के द्वारा हिन्दी का बहुत प्रचार किया गया है। हमारी सेनाएं, हमारे सुरक्षा बलों में प्रत्येक क्षेत्र तथा प्रत्येक भाषा बोलने वाले लोग हैं परन्तु हमारी हिन्दी की सिखलाई सबको एकता के सूत्र में बांध देती है। यही कारण है कि हमारे सुरक्षा बल एक भारत का स्वरूप हैं और राष्ट्रीय एकता की एक मिशाल है। इसी तरह हम पूरे भारत को एकता की कड़ी में बांध सकते हैं।

संक्षेप :—हिन्दी भाषा राष्ट्रीय एकता की एक सशक्त कड़ी है और हिन्दी को “राजभाषा” से राष्ट्रभाषा बनाकर ही हम देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा कर सकते हैं। आजकल शिक्षा नीति में भी त्रिभाषा फार्मूला अपनाकर हम समूचे भारत को हिन्दी भाषी बना सकते हैं इससे क्षेत्रीय भाषाओं को भी सम्मान मिलेगा और हमारे बापू गाँधी का सपना भी साकार हो सकेगा। सरकार इसके लिए उपयुक्त कार्यक्रम बना रही है परन्तु इसे जन-जन की भाषा बनाये जाने के प्रयास करना अति आवश्यक है। हमारी सामाजिक एकता के लिए भी हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना अति आवश्यक है। अब समय आ गया है जब अंग्रेजी को भूलकर हमें अपनी राष्ट्रभाषा को मान देना होगा और वह दिन दूर नहीं जब हम हिन्दी को विश्व भाषा के सिंहासन पर आसीन पायेंगे।

बिजली के एक खम्भे पर बिजली वालों की चेतावनी लिखी थी:

‘खतरा ! खम्भा छूने से फौरन मौत हो सकती है। आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। कैद और जुर्माना दोनों हो सकते हैं।’

दुकान पर आई एक युवती से दुकानदार ने कहा : ‘अब तो आपकी शादी की पहली सालगिरह आ रही है।’

‘हां, आ तो रही है। मगर आपको कैसे याद है ?’

दुकानदार : ‘आपकी ममी आपकी शादी पर सामान उधार ले गई थीं। पेमेंट अभी तक नहीं आई है।’

एक महिला अपनी अविवाहित सहेली को समझा रही थी : ‘तम्हें दो बातों में से एक का चुनाव करना है। या तो कुंवारी रहो और हर रोज पति की प्रतीक्षा करो, या फिर शादी कर लो और हर रात पति का इन्तजार करो।’

चौथी किस्त

डॉ० भीमराव अम्बेडकर

जीवन और योगदान

आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंट आबू द्वारा आयोजित 'डॉ० भीमराव अम्बेडकर - जीवन और योगदान' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरुस्कार से सम्मानित 10 वीं बटालियन के उपाधीक्षक श्री प्रताप सिंह के निबंध की अन्तिम कड़ी।

अम्बेडकर ने राष्ट्रीय नेताओं के समक्ष पृथक चुनाव का मुद्दा उठाया जिसके द्वारा अम्बेडकर अपने समाज के लोगों के लिए राजनैतिक अधिकार सुनिश्चित करना चाहते थे। गाँधी जी ने अम्बेडकर के इस प्रयास का विरोध किया। अम्बेडकर पुनः 26 मई सन् 1932 ई० को लन्दन गये और अंग्रेजों को अपनी बात समझायी। अंग्रेजों ने “साम्प्रदायिक निर्णय” नाम से अछूतों के लिए कुछ सुविधाओं की घोषणा की। इस व्यवस्था में दलितों की पृथक निर्वाचन की मांग को स्वीकृति प्रदान की गई थी। गाँधी को राजनैतिक दृष्टिकोण से यह व्यवस्था हिन्दू समाज से अछूतों को अलग करने की अंग्रेजी चाल प्रतीत हुई और उन्होंने आमरण अनशन किया। अम्बेडकर ने गाँधी के आमरण अनशन को राजनैतिक झांसे की संज्ञा दी। अन्ततः “पूना पैक्ट” हुआ और गाँधी की जान बच गयी और अछूत गाँधी की हत्या के कलंक से बच गये। 14 अक्टूबर सन् 1935 ई० को जिला नासिक ग्राम यवेला में दलित समाज का एक बहुत बड़ा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें अम्बेडकर ने घोषणा की थी कि उनका जन्म हिन्दू समाज में हुआ यह उनके बस की बात नहीं थी परन्तु वह हिंदू के रूप में मरे नहीं यह उनके बस की बात है। अपने इस विचार पर अम्बेडकर ने बहुत सोचा, बहुत विचार किया। उनके समक्ष उनका बहुत बड़ा अधिकारहीन समाज था। अम्बेडकर को किसी ऐसी धार्मिक व्यवस्था की खोज थी जिस पर उनका समाज अमल कर सके और उसके सिद्धान्तों को अपने जीवन में भी उतार सके। अम्बेडकर चाहते थे कि वह व्यवस्था सरल हो एवं भारतीय हो। हिन्दू धर्म में बहुत पाखण्ड हैं। मोक्ष और आत्मा भी बहुत उलझे हुये विषय हैं। सिख धर्म में भी अम्बेडकर को दुराव लगा। ईसाई और इस्लाम भारतीय धर्म नहीं थे इसलिए अम्बेडकर ने इन सबको नकार दिया। इस मन मंथन में अम्बेडकर बुद्ध धर्म पर केन्द्रित रहे। बुद्ध धर्म सभी धर्मों के लोगों का समान आदर करता है और इसके संस्थापक अपने को मोक्षदाता नहीं कहते हैं, बल्कि मोक्ष का रास्ता बताने वाले मानते हैं। मोक्ष का रास्ता भी बुद्ध ने दीन दुखियों की सेवा करने

को ही बताया है इसलिए अम्बेडकर इसी व्यवस्था पर स्थिर हुये और अन्त में बौद्ध होकर बुद्ध के हो गये। अम्बेडकर का मत था कि बौद्ध हिन्दू धर्म का ही सहोदर है। बौद्ध होकर हिन्दू धर्म की कुल अच्छाईयों को अपनाकर रखा जा सकता है।

स्वतन्त्रता का सवेरा हुआ अम्बेडकर को भी राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का अवसर मिला। अम्बेडकर को संविधान की मसविदा कमेटी का सदस्य नियुक्त किया गया और बाद में उनकी विद्वता और सूझ-बूझ का आदर करते हुए उन्हें इस कमेटी का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस राष्ट्रीय कार्य को अम्बेडकर ने परिश्रम और निष्ठा से सम्पन्न किया। अम्बेडकर ने अपने पूरे जीवन के अनुभवों एवं विद्वता से भारतीय संविधान इस प्रकार बनाया कि युगों से समाज में व्याप्त सामाजिक एवं आर्थिक विषमता समाप्त हो और निर्बल वर्ग स्वतन्त्र भारत में दिनों दिन अपनी दीन दशा से उभर सके। उन्होंने परिकल्पना की थी कि लोकतन्त्र को सुदृढ़ करने के लिए सामाजिक और राजनैतिक लक्ष्य वैध मार्ग से प्राप्त किये जायेंगे, हिंसात्मक एवं कपटपूर्ण उपायों से नहीं। उन्होंने संविधान की धाराओं पर बहस के समय स्पष्ट किया था कि हमारे समाज में जो सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विभेद व्याप्त हैं यदि उन्हें समय रहते समाप्त नहीं किया गया तो अत्यन्त परिश्रम से निर्माण किया गया यह लोकतन्त्र का मंदिर ध्वस्त हो जायेगा। उनका मतव्य यह था कि स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र जीवट और प्राक्रम से अमल में आते हैं किसी प्रार्थना या मनुहार से नहीं। डेमोक्रेसी जन बल मांगती है देव बल नहीं। कर्तव्य निष्ठा और गहन विचारों से प्रभावित होकर संविधान सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि डा० अम्बेडकर ने जिस उत्साह एवं निष्ठा से संविधान निर्माण के कार्य को सम्पन्न किया है वह अन्य कोई और व्यक्ति नहीं कर सकता था। संविधान में निहित व्यवस्थाओं से आज भी भारत का निर्बल वर्ग बराबर लाभान्वित हो रहा है और अम्बेडकर के योगदान का ऋणी है। कानून मंत्री के रूप में अम्बेडकर ने “हिंदू विवाह विधेयक”, “हिंदू उत्तराधिकार विधेयक”, “हिंदू अल्प व्यस्कता और संरक्षक विधेयक” तथा हिंदू दत्तक ग्रहण एवं निर्वाह विधेयक”, हिंदू कोड बिल के रूप में प्रस्तुत किये थे परन्तु सारे भारत में इसका विरोध हुआ और हिंदू कोड बिल पारित नहीं हो सका। अम्बेडकर के त्यागपत्र देने के बाद हिंदू कोड बिल ही अलग-अलग करके उपरोक्त विधेयकों के रूप में भारतीय संसद ने पारित किये और आज सारा हिंदू समाज इन कानूनों से लाभान्वित होकर फल और फूल रहा है।

अम्बेडकर ने “पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी” की स्थापना की और बम्बई में “सिद्धार्थ कालेज” और औरंगाबाद में “मिलिंद कालेज” की स्थापना की और यह संस्थाएँ अम्बेडकर के आदर्शों एवं संकल्पों के मूर्तरूप हैं।

कोल्हापुर रियासत के महाराजा की सहायता से भीमराव ने मराठी के एक पाक्षिक पत्र “मूक नायक” का संचालन किया। भीमराव “मूक नायक” के माध्यम से बराबर समाज के अछूतों की कसमसाती आत्माओं के चीत्कार का भान कराते रहते थे।

उन्होंने अपने जीवन का हर क्षण अपने समाज के अधिकार हों लोगों के लिए जिया और उन्हीं के उत्थान की सोचते हुए वह निर्बाण को प्राप्त हुए। —समाप्त

*दो लेखक आपबीती सुना रहे थे। एक ने कहा : क्या बताऊं यार, एक बहुत अच्छा उपन्यास लिख कर पूरा किया था, लेकिन मेरे लड़के ने उसे उठाकर चूल्हे में फेंक दिया।’

‘तुम्हारा लड़का कितना बड़ा है ?’

‘चार साल का।’

‘तुम खुशानसीब हो कि तुम्हारा लड़का इस उम्र में इतना समझदार हो गया है।’

*एक शराबी ने होटल में खाना खाया और जाते हुए सौ रुपये का नोट टेबल पर छोड़ गया। बैरे ने नोट चुपके से उठाना चाहा, लेकिन मैनेजर ने देख लिया।

बैरा बोला : ‘कमाल है, कैसे-कैसे लोग आते हैं, खाने का बिल तो देते नहीं और इतनी टिप छोड़ जाते हैं।’

*प्रेमी: ‘अमरीका में एक ऐसा कम्प्यूटर बना है जो इंसान की तरह है।’

‘तुम्हारा मतलब है कि वह मनुष्य की तरह सोच सकता है ?’

‘नहीं। आदमी से गलती होने पर वह सारी जिम्मेदारी कम्प्यूटर पर डाल देता है।’

महानिदेशक का प्रशंसा डिस्क



महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह (क्रमशः बाएं से दाएं) सब इंस्पेक्टर बदलू राम तथा इंस्पेक्टर (म०) रेवत सिंह शेखावत को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान करते हुए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह ने अपने क्षेत्र के दो कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया है। यह सम्मान पाने वाले कार्मिक हैं इंस्पेक्टर (हैड क्लर्क) रेवत सिंह शेखावत तथा सब-इंस्पेक्टर बदलू राम। इन कार्मिकों को यह सम्मान अपने सेवाकाल के दौरान अनुकरणीय भूमिका के लिए दिया गया है।

ज्ञातव्य है कि महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क वर्ष 1987 में प्रारंभ की गई थी तथा यह प्रति वर्ष बल के सदस्यों को प्रदान की जाती है। इस सम्मान का उद्देश्य बल के सदस्यों के भीतर बहादुरी, साहस तथा सेवा भक्ति की भावनाओं को प्रोत्साहन देना है। इस सम्मान के लिए कार्मिकों का चयन परिचालन के दौरान उनकी भूमिका एवं उपलब्धियां, प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान सराहनीय कार्य, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल जंगत में उपलब्धियां तथा अन्य किसी ऐसे कार्य के आधार पर किया जाता है, जिस से बल की कीर्ति एवं कार्यकुशलता में बढ़ोत्तरी हुई हो।

इस अवसर पर के. रि. पु. बल के कई वरिष्ठ अधिकारी व जवान उपस्थित थे। यह सम्मान समारोह के.रि.पु. बल उत्तरी क्षेत्र के कार्यालय आर. के. पुरम, नई दिल्ली में हुआ।

एक लड़की की शादी होने वाली थी। उसने अपनी एक सहेली से अपने होने वाले पति की तारीफ करते हुए कहा :

मेरे वोह बहुत शांत स्वभाव के हैं।’
सहेली : अच्छा ।’
‘बहुत ही ज्यादा सहनशील हैं।’
‘अच्छा ?’
‘मुझे मेरे कहने पर ही प्यार करते हैं, तंग नहीं करते कभी।’
‘अच्छा ।’
‘मेरा हर कहा मानते हैं।’
‘अच्छा ।
‘पिछले महीने की 15 तारीख से उन्होंने शराब और सिगरेट बिल्कुल छोड़ दी मेरे
ही कहने पर।’
‘कमाल है !’
‘अच्छा बहन अब तुम बताओ, मेरे होने वाले पति के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?’
सहेली बोली : ‘कुछ नहीं, बस बेचारा कसाई हाथों पड़ गया।’



इंटर सेक्टर वालीबाल टूर्नामेंट के विजेता उत्तरी सेक्टर को चैंपियन ट्राफी प्रदान करते हुए अपर महानिदेशक श्री आर० के० वढ़ेरा ।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा । सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक 1, सी० जी० ग्रो० काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से ए० एन० शर्मा ।

मुद्रक : सी० आर० पी० एफ० प्रेस, भड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।

CRPF SAMACHAR

Vol. No:6 No:7

November 30, 1991

Agrahayana 9, Saka 1913.



Union Minister Shri Rajesh Pilot presenting All India Police Aquatic Championship trophy to the CRPF team.

नूतन वर्षाभिनंदन

अभिलाषाएं आकृति पाएं, यत्न बने उपलब्धि,
जीवन में अभिनंदनरत हो श्वास श्वास समृद्धि,
सुख सुविधाओं का हर पल हो जाए आयुष्मान,
यही कामना नव संवत्सर लाए स्वर्ण विहान ।

महानिदेशक का संदेश

नए महानिदेशक

४०वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताएं

५०० जवानों की पासिंग आऊट परेड

शरीर में खून की कमी

फुरसत में



संदेश

इस वर्ष केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी ५२ वीं वर्षगांठ मना रहा है। के. रि. पु. बल में हम सब लोगों के लिए यह न केवल एक खुशी का मौका है, अपितु यह एक ऐसा अवसर है, जब कि हम देश की एकता और अखण्डता के प्रति प्रतिबद्धता की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हैं और देश में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए अपने को सहर्ष अर्पित करने को तत्पर होते हैं। १६३६ में काउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस फोर्स के रूप में गठित किया गया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल विगत में देश के विभिन्न भागों में डकैत गिरोहों, अलगाववाद, उग्रवाद एवं आंतकवाद के उन्मूलन के लिए सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। विदेशी आक्रमणों के समय भी यह बल भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिला कर दुश्मनों के दांत खट्टे करता रहा है, साम्प्रदायिक दंगों और प्राकृतिक विभीषिकाओं से त्रस्त मानवता के समक्ष के. रि. पु. बल हमेशा राहत और शांति का पैगाम ले कर पहुंचा है।

३२ वर्ष पूर्व २१ अक्टूबर, १९५६ को लद्दाख हाट स्प्रिंग्स में बल की एक टुकड़ी पर चीनी सैनिकों ने घात लगाई। संख्या में अत्याधिक रूप से कम होने के बावजूद केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान बहादुरी के साथ लड़े और १० जवान देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। बाकी जवानों को भी दुश्मन तब तक हाथ नहीं लगा सका, जब तक कि उनके पास एक भी गोली रही। इन शहीदों की याद में पूरे देश के पुलिस बल २१ अक्टूबर को शहीद दिवस के रूप में याद करते हैं। १९६५ में के. रि. पु. बल के जवानों ने एक बार फिर इतिहास की रचना की, जबकि बल को एक छोटी सी टुकड़ी एक पाकिस्तानी ब्रिगेड के साथ सीधे भिड़ी। बंगलादेश आपरेशन के दौरान भी के. रि. पु. बल ने अपने जौहर दिखाए। श्री लंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में के. रि. पु. बल की टुकड़ियां भी शामिल थी। हमारे कार्मिकों को भारी तादात में शौर्य एवं युद्ध पदक मिले हैं। के. रि. पु. बल देश की विभिन्नता में एकता का प्रतीक बन गया है। इसे अपने धर्मनिरपेक्ष एवं सार्वदेशिक स्वरूप पर गर्व है। हमारे जवान देश के हर वर्ग,

क्षेत्र, धर्म एवं जाति का प्रातोनोधत्व करते हैं, हर वर्ग को बल में उचित प्रातोनोधत्व मिला है, और इस प्रकार के. रि. पु. बल की हर बटालियन सही मायनों में हमारे देश का सच्चा प्रतिनिधित्व करती है। हमें यह कहने में गर्व है कि हमारे बल के एक तिहाई से अधिक सदस्य अल्पसंख्यक समुदायों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों से आते हैं। पूरे देश में केवल हमारा बल ही एक मात्र ऐसा बल है, जिसके पास एक महिला बटालियन है। यह बटालियन पूरे विश्व के समक्ष यह सिद्ध करती है कि भारत की नारी देश की एकता और अखंडता की रक्षा में किसी के पीछे नहीं है। इस मौके पर मुझे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी के शब्द याद आते हैं। उन्होंने कहा था, “के. रि. पु. बल एक ऐसी फोर्स की मूलभूत जरूरत को पूरा करता है, जिस में कि विभिन्न धर्मों, विभिन्न राज्यों एवं विभिन्न भाषाओं में बात करने वाले लोग एक साथ काम करते हों। हमने देखा है कि जहां कहीं भी के. रि. पु. बल गया है, लोगों ने इस में विश्वास व्यक्त किया है और इन्होंने (के. रि. पु. बल जवानों ने) भी अत्यधिक साहस और समर्पण के साथ काम किया है।”

५२ वर्ष पूर्व के. रि. पु. बल का जन्म नीमच में एक बटालियन के रूप में हुआ। आज इस में १२६ बटालियनें हैं। इसके कार्य के महत्व एवं भूमिका की विभिन्नता को इतने कम समय में नहीं बताया जा सकता। के. रि. पु. बल के जवान हर उस भूमिका को निभाते हैं, जिस की कि एक पुलिस कर्मी एवं प्रशिक्षित व्यावसायिक सैनिक से उम्मीद की जाती है।

के. रि. पु. बल इस समय उग्रवादियों एवं आतंकवादियों द्वारा देश की एकता और अखंडता के सम्मुख खड़ी की जा रही चुनौतियों से निबटने में पूरी तरह व्यक्त है। इस कार्य में के. रि. पु. बल के जवानों ने भारी संख्या में अपने प्राणों की आहुति दी है। इस मौके पर हम अपने इन बहादुर साथियों को सलाम करते हैं। मेरा हृदय शहीद हुए जवानों के परिवारों के प्रति उमड़ा पड़ता है। मैं इन परिवारों को यह यकीन दिलाना चाहूंगा कि हम हमेशा उनके साथ हैं, और वे हमें अपने किसी भी संकट में पीछे नहीं पाएंगे।

के. रि. पु. बल को अपने अतीत और अपनी उपलब्धियों पर गर्व है। हम देश के सम्मुख खड़ी चुनौतियों के प्रति भी सजग हैं। देश द्वारा के. रि. पु. बल के प्रति व्यक्त किए गए विश्वास को पूरा करने के लिए हम अपने जवानों को सघन प्रशिक्षण दे रहे हैं, अपनी क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं और अपने जवानों को नई चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बना रहे हैं। हम अपने उद्देश्य “सेवा एवं भक्ति” को हमेशा दिमाग में रखते हैं।

इस मौके पर के. रि. पु. बल में हम सभी यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि देश की एकता और अखंडता, शांति और सदभाव को बनाए रखने के लिए हम कोई भी कदम उठाने से चूकेंगे नहीं, ताकि देश शांति और समृद्धि के पथ पर आगे की ओर बढ़ सके।

जय हिंद

स.सु.ब्रह्मण्यन

(एस सुब्रह्मण्यन)
महानिदेशक, के. रि. पु. बल)

डा. एस. सुब्रह्मण्यन

के. रि. पु. बल के नए महानिदेशक



पद्म श्री डा. एस. सुब्रह्मण्यन ११ नवंबर, १९६१ को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का पदभार संभाल लिया है। उन्होंने यह पदभार श्री के. पी. एस. गिल से ग्रहण किया, जो कि पंजाब पुलिस में महानिदेशक नियुक्त किए गए हैं। डा. सुब्रह्मण्यन भारतीय पुलिस सेवा के १९५८ बैच के आंध्र प्रदेश काडर के अधिकारी हैं।

डा. सुब्रह्मण्यन जो कि राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के भी महानिदेशक हैं, इस पदभार को भी संभाले रहेंगे। अपने लंबे पुलिस जीवन में डा. सुब्रह्मण्यन इंटेलिजेंस ब्यूरो, केंद्रीय जांच ब्यूरो, स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप तथा राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वह फेडरल रिपब्लिक आफ जर्मनी स्थित भारतीय

दूतावास में मंत्री भी रह चुके हैं।

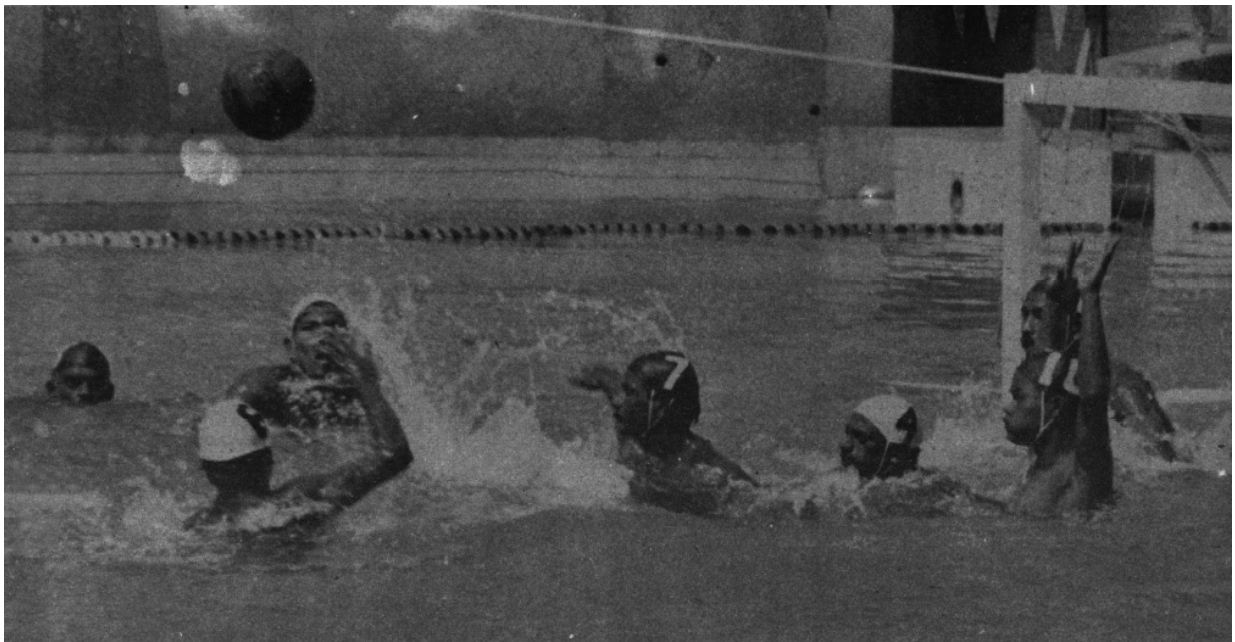
डा. सुब्रह्मण्यन राष्ट्रीय सम्मान पद्म श्री से सम्मानित हैं तथा उन्हें विशिष्ट व सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किए गए हैं।

डा. सुब्रह्मण्यन ने दो पुस्तकें तथा व्यवसायिक विषयों पर कई लेख लिखे हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने पुलिस तथा प्रबंधकीय विषयों पर कई शोध प्रबंधों का निर्देशन भी किया है।

४०वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताएं

विजय का सेहरा फिर के. रि. पु. बल के सिर

लेख-अनिल गुप्ता/छाया-एस. के. खन्ना



वाटर पोलो मैच के दौरान एक तनाव पूर्ण क्षण

४० वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों की अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं की चैंपियनशिप केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष २२८ अंक प्राप्त कर जीत ली। १६८ अंक प्राप्त कर सीमा सुरक्षा बल दूसरे स्थान पर रहा, जबकि १०० अंक प्राप्त करने पर केरल पुलिस को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

इस वर्ष की अखिल भारतीय तैराकी प्रतियोगिताओं एवं कास कंट्री दौड़ का आयोजन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तत्वाधान में २ से ६ अक्टूबर, १९६१ तक नई दिल्ली स्थित तालकटोरा तरणताल में किया गया।

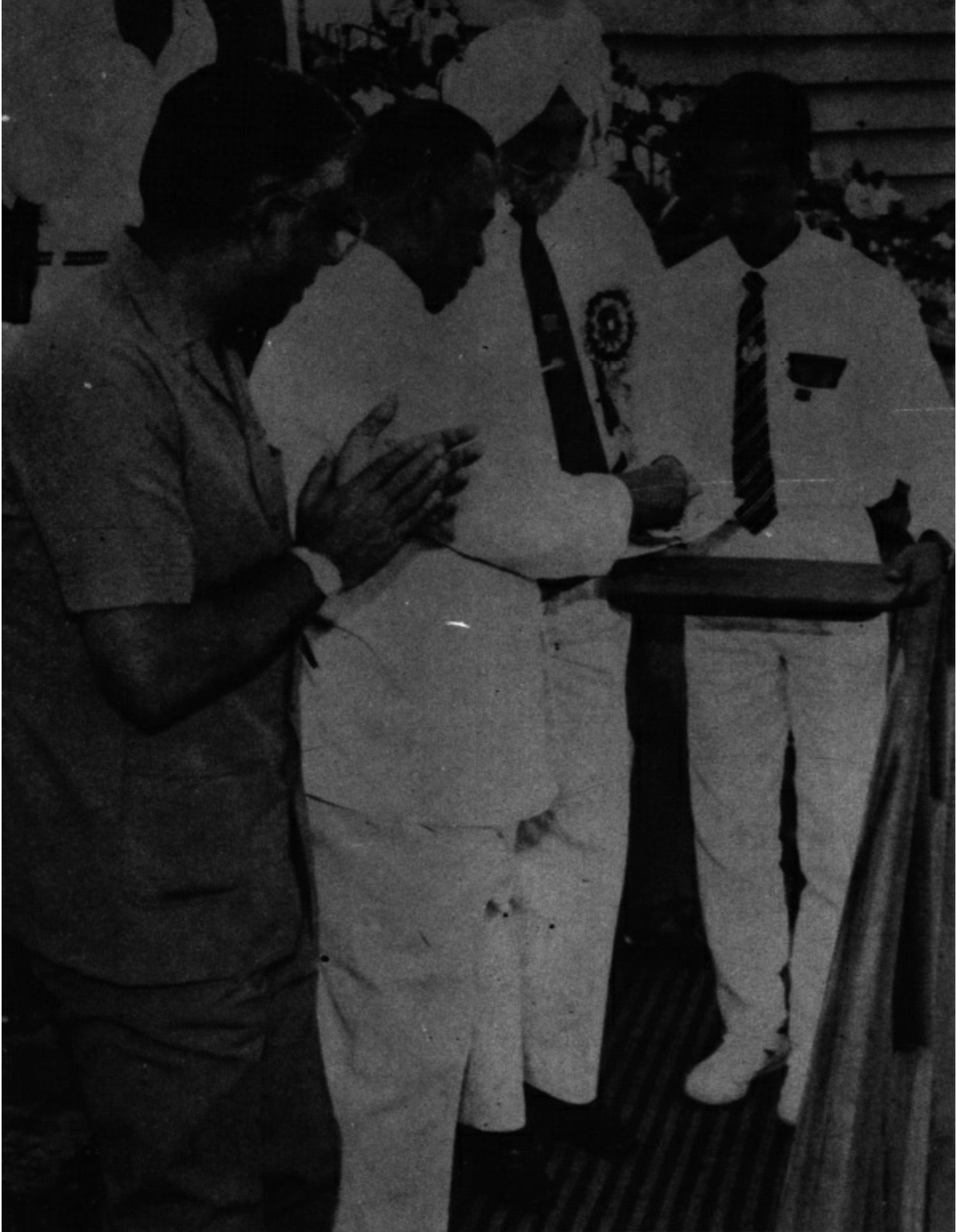
केंद्रीय गृह मंत्री श्री एस. बी. चव्हाण ने २ अक्टूबर को तालकटोरा तरणताल पर इन प्रतियोगिताओं का विधिवत् उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने प्रतियोगियों द्वारा प्रस्तुत की गई एक आकर्षक परेड की सलामी भी ली।

इस मौके पर प्रकाशित एक स्मारिका का विमोचन भी मुख्य अतिथि ने किया। इस प्रतियोगिता में राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों एवं केंद्रीय पुलिस संगठनों की १६ टीमों के ५०० से भी अधिक प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में उड़ीसा, त्रिपुरा, दिल्ली, गोवा, केरल, पंजाब, तमिलनाडु, गुजरात और उत्तर प्रदेश सहित केंद्रीय पुलिस संगठनों भा. ति. सी. पु, रेलवे सुरक्षा बल और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के तैराकों की प्रतिभा के जौहर देखने को मिले।

इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर के कई तैराकों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में आकर्षण का मुख्य केंद्र के. रि. पु. बल के खजान सिंह, सोमशेखरन, प्रेम जीत सिंह और एस राधाकृष्णन, सीमा सुरक्षा बल के राजीव कुमार एवं सुरेंद्र टोकस, भा. ति. सी. पु के आशीष चक्रवर्ती तथा केरल पुलिस के शाजी जोसफ और के एस. बीनू रहे।

६ अक्टूबर को केंद्रीय संचार मंत्री श्री राजेश पायलट ने इन प्रतियोगिताओं के समापन की घोषणा की। इस अवसर पर उन्होंने प्रतियोगी टीमों द्वारा प्रस्तुत मार्च पास्ट की सलामी ली तथा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक सीमा सुरक्षा बल के राजीव कुमार को घोषित किया गया। कास कंट्री दौड़ की टीम तथा व्यक्तिगत चैंपियनशिप भी सीमा सुरक्षा बल को प्रदान की गई।



गृह मंत्री श्री एस. बी. चव्हाण स्मारिका का विमोचन करते हुए
सर्वश्रेष्ठ राज्य पुलिस टीम की ट्रॉफी केरल पुलिस को प्रदान की गई।
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कुल १० स्वर्ण, चार रजत तथा पांच कांस्य पदक प्राप्त

किए, जबकि सीमा सुरक्षा बल ने कुल छः स्वर्ण, नौ रजत और तीन कांस्य पदक जीते । तीसरे स्थान पर रहीं केरल पुलिस को तीन रजत और सात कांस्य पदक मिले ।

इस प्रतियोगिता में तैराकी के कुल १६ मुकाबले आयोजित किए गए । प्रस्तुत है इन सभी मुकाबलों के प्रथम तीन परिणाम

४०० मीटर फ्री स्टाईल: (१) राजीव कुमार, सीमा सुरक्षा बल, ४:२०.८४ नया पुलिस रिकार्ड, (२) प्रेमजीत सिंह, के. रि. पु. बल ३४२३ (३) रणजीत सिंह, के. रि. पु. बल, ४:३८.३०,

२०० मीटर ब्रेस्ट स्टोक : (१) एस राधाकृष्णन, के. रि. पु. बल, २:३६.६६, (२) शाजी जोसफ, केरल २:३६.१६, (३) के. एस. बीनू, केरल २:४६.१०,

१०० मीटर बैक स्टोक : (१) खजान सिंह, के. रि. पु. बल, १:०५.५१ (२) संजीव टोकस, सी. सु. बल, १:०७.६२, (३) प्रवीण राणा, सी. सु. बल १:०८.६७ ।

१५०० मीटर फ्री स्टाईल : (१) राजीव कुमार, सी. सु. बल, १७:२३.०५ नया पुलिस रिकार्ड, (२) प्रेमजीत सिंह, के. रि. पु. बल १८:१४.१२, (३) मनोज सबेस्टीयन, केरल, १८:१५.२१



बल की विजेता टीम के साथ महानिदेशक श्री गिल एवं अन्य वरिष्ठ

२०० मीटर बटरफ्लाय : (१) राजीव कुमार, सी. सु. बल २:१४.४१ (२) सुरेंद्र टोकस, सी. सु. बल, २:१६.३१, (३) दलबीर टोकस, के. ओ. सु. बल २:२०.४७

४ x २०० मीटर फ्री स्टाईल रिले : (१) सी. सु. बल, ८:५०.५० (२) के. रि. पु. बल ८:५७.००, (३) केरल, ६:००.०५



बल के उच्चाधिकारियों से परिचय प्राप्त करते गृह मंत्री श्री चव्हाण

५० मीटर फ्री स्टाईल : (१) खजान सिंह, के. रि. पु. बल, ०.२५४६ नया पुलिस रिकार्ड
(२) आर्ड. सी. राजू, केरल, ०:२५५६, (३) के सोमशेखरन, के. रि. पु. बल, ०.२५८८

४०० मीटर व्यक्तिगत मेडले : (१) राजीव कुमार, सी. सु. बल, ५:०४४१, (२) प्रवीण राणा सी. सु. बल, ५:११३३, (३) प्रेमजीत सिंह, के. रि. पु. बल, ५:२५६६

२०० मीटर फ्री स्टाईल : (१) राजीव कुमार, सी. सु. बल, २०:३३८ नया पुलिस रिकार्ड,
(२) प्रेमजीत सिंह, के. रि. पु. बल, २:०८८५, (३) रणजीत सिंह, के. रि. पु. बल, २:०६५१

२०० मीटर बैक स्ट्रोक : (१) खजान सिंह के.रि.पु.बल, २:२३५२ (२) संजीव टोकस सी. सु. बल, २:२४६३, (३) राजीव कुमार सी. सु. बल, २:२८७२

हाई बोर्ड डाईविंग (१) ईश्वर देव नारायण राय, उत्तर प्रदेश, २६८६५ अंक, (२) देबाशीश बैनर्जी, सी. सु. बल, ३६२६५ अंक, (३) सुभाष यादव, उत्तर प्रदेश ३४८४५ अंक

१०० मीटर फ्री स्टाईल : (१) खजान सिंह, के. रि. पु. बल, ०:५६७७ (२) राजीव कुमार, सी. सु. बल, ०:५७६६३, आई सी राजू, केरल ०५८३४

२०० मीटर व्यक्तिगत मेडले (१) खजान सिंह के. रि. पु. बल, २:२३६७, (२) प्रवीण राणा, सी सु बल, २:२६२०, (३) प्रेमजीत सिंह, के. रि. पु. बल २:००३६,

४.×१०० मीटर फ्री स्टाईल रिले (१) के. रि. पु. बल, ३:५६५२, (२) सी. सु. बल ४:००३६, (३) केरल ४:०१११

स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग : (१) मनोपाल सिंह शेखावत, सी. सु. बल, ४१५०५ अंक, (२) रमेश चंद, दिल्ली पुलिस, ३६२८० अंक, (३) सुंदर सिंह, सी. सु. बल, ३१६५५ अंक,
 १०० मीटर बटरफ्लाय : खजान सिंह, के. रि. पु. बल, ०:५६६७, (२) राजीव कुमार, सी. सु. बल, १:०१६० (३) सुरेंद्र टोकस, सी. सु. बल, १:०३.५५,
 १०० मीटर ब्रेस्ट स्टोक : (१) एस राधाकृष्णन, के. रि. पु. बल १:१२८३, (२) शाजी जोसफ, केरल, १:१४३५, (३) के एस बीनू, केरल १:१५२७,
 ४ × १०० मीटर मेडले रिले : (१) के. रि. पु. बल, ४:२२१६, (२) सी. सु. बल, ४:२५६४, (३) केरल, ४:२७११
 कास कंटी रेस में २८ अंक प्राप्त कर सी. सु. बल प्रथम, ७२ अंक प्राप्त कर के. रि. पु. बल द्वितीय और ११८ अंक प्राप्त कर पंजाब पुलिस तीसरे स्थान पर रही।
 वाटर पोलो प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले को के. रि. पु. बल ने सी. सु. बल को ८ - ६ गोलों से हरा कर जीत लिया। इससे पूर्व सेमी फाइनल मुकाबलों में सी. सु. बल ने पंजाब पुलिस को ६ - ६ गोलों से और के. रि. पु. बल ने केरल पुलिस को १३ - ३ गोलों से हराया।

५०० जवानों की पासिंग आऊट परेड



श्री सुब्रह्मण्यम परेड की सलामी लेते हुए
 १० सितंबर, १९६१ को रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र - पल्लिपुरम में आयोजित रंगरूटों के

२७ वें बैच के ५०० जवानों की दोक्षांत परेड संपन्न हुयी । इस मौके पर बल के भूतपूर्व महानिरीक्षक श्री सी सुब्रह्मण्यम जो अब केरल पुलिस के अपर महानिदेशक हैं, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

श्री सुब्रह्मण्यम ने जवानों द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी ली तथा इस मौके पर बोलते हुए कहा कि देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में के. रि. पु. बल का महत्वपूर्ण योगदान है । उन्होंने कहा कि के. रि. पु. बल न केवल देश में ही अपितु विश्व भर में एक अनूठा सुरक्षा बल है ।

इस मौके पर प्रशिक्षण केंद्र के प्रधानाचार्य श्री विनोद सेठ ने जवानों को शपथ दिलायी ।

गांधी नगर ग्रुप केंद्र सर्वश्रेष्ठ

गांधी नगर ग्रुप केंद्र सर्वश्रेष्ठ

वर्ष १९६१ के लिए गांधी नगर ग्रुप केंद्र सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र घोषित किया गया है, अतः सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र की टाफी इस वर्ष गांधी नगर ग्रुप केंद्र को प्रदान की जाएगी । ज्ञातव्य है कि प्रत्येक वर्ष बल के १६ ग्रुप केंद्रों में से एक को यह टाफी प्रदान की जाती है । इस टाफी के लिए ग्रुप केंद्र का चयन करते समय उसके रख रखाव सहित सम्पूर्ण उपलब्धियों एवं अन्य कार्यों का लेखा जोखा देखा जाता है ।

प्रशिक्षणार्थियों को रोजगार

के. रि. पु. बल आई टी आई के ३१ जुलाई, १९६१ को पास हुए वेल्डर टेड के दो लड़कों को श्रीराम फूड एंड फर्टिलाइजर्स इंडस्टीज में रोजगार मिल गया है । इस संबंध में इस कम्पनी के मुख्य प्रबंधक ने आई. टी. आई. के प्रधानाचार्य को लिखा है कि हमें कुल तीन उम्मीदवार चुनने थे, जिन में से कि दो हमने के. रि. पु. बल आई. टी. आई. के चुने क्योंकि उन का प्रदर्शन अन्यो के मुकाबले बहुत अच्छा था ।

आप का स्वास्थ्य

शरीर में खून की कमी

डा जी एस सोनी डी एच एम एस

शरीर में खून की कमी या रक्त हीनता जिसे मेडिकल जुबान में अनिमिया कहते हैं, एक बहुत ही भयंकर रोग है जिसके कारण कई प्रकार की बीमारियां पैदा हो जाती हैं । यही नहीं इससे रोगी की मृत्यु भी हो सकती है । इस रोग के कई कारण होते हैं जिनसे कि शरीर में कई प्रकार के रोगों का जन्म होना शुरू हो जाता है । यह एक

ऐसा रोग है जो खून में लोहे के अभाव के कारण पैदा होता है। शरीर में दरअसल खून के अभाव में रोगी क्षीण, दुर्बल तथा आभाहीन होकर रह जाता है। कई प्रकार के रोग जैसे शोक, मासिक श्राव की अधिकता सविराम रोग, आपौष्टिक भोज्य पदार्थ तथा संक्रामक रोग भी इस रोग का कारण बनते हैं। इस बीमारी में रोगी की दशा अजीब प्रकार की होती है, जैसे रोगी मुरझाया हुआ व निढाल सा दिखाई देने लगता है। हृदय की धड़कन कभी बढ़ने व कभी कम होने लगती है। दम घुटने लगता है, सर चकराने लगता है। स्त्रियों में मासिक स्राव समय से पहले बन्द हो जाता है व रोगी को ठंड लगने लगती है। रोगी हमेशा सोना पसंद करेगा व उसका किसी काम में दिल नहीं लगेगा और ना ही जल्दी से उठने की कोशिश करेगा। रोगी के नाखून सफेद हो जाएंगे व खून की कमी के कारण चमच के आकार की तरह मुड़ना शुरू हो जाएंगे।

यह कोई स्वतंत्र रोग नहीं है बल्कि किसी न किसी रोग के परिणामस्वरूप रक्त की कमी से हो जाया करता है। इसीलिये इस रोग का कोई मुख्य कारण निश्चित नहीं किया जा सकता, फिर भी अभी तक के अध्ययन से जो परिणाम सामने आये हैं उनसे खून की कमी के मुख्यतः निम्न कारण होते हैं :-

१. लाक्षणिक एनिमिया :- किसी विशेष रोग के कारण रक्त की कमी के लक्षण रोगी के चेहरे पर दिखाई दिया करते हैं। शरीर का रंग बिल्कुल पीला होकर मटियाला पड़ जाता है यानी पीलापन खत्म हो जाता है।

२. अपौष्टिक आहार का सेवन :- यानी ऐसे भोज्य पदार्थों के सेवन से जिसमें पौष्टिक तत्व नहीं होते हैं। रक्त में क्षीणता पैदा हो जाती है और भोजन आदि के सेवन से भी रक्त में वृद्धि नहीं हो पाती। इसके अलावा रक्तहीनता के कारण हड्डियों के अन्दर की चर्बी वाले तन्तुओं पर भी प्रभाव पड़ता है, जिससे मनुष्य के शरीर में खून की कमी पैदा हो जाती है।

३. बच्चों का एनिमिया:- यह एनिमिया प्रायः हर बच्चे में पाया जाता है। अक्सर लोहे की कमी ही इसका कारण होता है।

४. पर्निशियस एनिमिया :- इसे ऐडिसन्स एनिमिया भी कहते हैं। यह रोग प्रायः ४० से ६० साल तक की उम्र में होता है। अपच, पाकाशय के विकार, रक्तस्राव, मासिक नाव इसके मुख्य कारण होते हैं। कभी कभी यह रोग लम्बी हड्डी के चर्बी वाले तत्वों में भी उत्पन्न हो जाता है, जिसे डाक्टरी या मेडिकल भाषा में पी. ए. फेक्टर कहते हैं, इस रोग के और कई रूप होते हैं जैसे :- गर्भावस्था का एनिमिया, स्टेनोसिस आफ दी स्माल इन्टेस्टाईन, यकृत के रोग, रेफेण्ड्री मैनेलो सार्याटक एनिमिया

इस रोग में रोगी के चेहरा मुरझाया हुआ सा दिखाई देता है, छाती छोटी खोखले दार व बाल बिल्कुल सफेद व त्वचा पर सफेद-सफेद से धब्बे से उभरे नजर आते हैं। त्वचा का रंग धीरे-धीरे पीला पड़ जाता है। आंखों की सफेदी गदली सी हो जाती है। रोगी को मुर्छा के दौरों पड़ने लगते हैं और सांस लेने में कठिनाई अनुभव होने लगती है। यहां तक कि शरीर के साथ-साथ जीभ, होंठ मसूड़े तक सफेद पड़ जाते हैं, रोगी के लिये उठना, बैठना तक कठिन हो जाता है। रोगी को कुछ दिन के बाद बुखार या

ज्वर हो जाता है और १०४ या १०५ डिग्री तक बढ़ जाता है, इस कारण रोगी का जब अन्त समय आ जाता है बुखार में कमी आ जाती है जो नार्मल से भी कम होता है ।

खून की कमी का इलाज करवाना व उससे पहिले उसके कारणों का पता लगाना बहुत जरूरी है, क्योंकि यह घातक व जान लेवा बीमारी है । इसके लिये भारत में कई प्रणालियां प्रचलित है जैसे :- अंग्रेजी, आर्युवेदिक व होम्योपैथी । होम्योपैथी चूंकि बीमारी को जड़ से निकाल फेंकती है व इन दवाओं से और किसी प्रकार की बीमारी का खतरा नहीं रहता है, अतः यह प्रणाली काफी कारगर सिद्ध हुई है । वैसे तो होम्योपैथी में खून की कमी को ठीक करने के लिये कई दवायें हैं मगर मुख्यतः निम्नलिखित हैं जो कि डाक्टर की सलाह के बाद ही लेनी चाहिये :-

चाईना, हेलेन नक्सवामिका, फासफोरिक एक्सिड, सल्फर, स्टफगेरिया कलकेरिया, नेट्रमयूर, होपर सल्फ, वेराईटा, आर्सेनिक कार्बोविष

फुरसत में

हिंद के पुत्र

तुम जगो हिंद के वीर पुत्र,
दीनों, दुखियों का हाथ धरो ।

जो भूले, लूले, लंगड़े हैं,
उन को दुलार कर साथ करो ।

तुम धैर्यवान हो वीर बली,
तुम पर गर्वान्वित है धरती ।

भारत माता के सपनों को,
प्रतिपल, प्रति क्षण साकार करो ।

तुम सजग, अडिग निर्भय प्रहरी,
अपनी निद्रा त्यागो गहरी ।

भारत ध्वज कभी न झुक पाए,
बस ऐसा बंधु, विचार करो ।

तुम गांधी के वंशज हो,
तुम भगत सिंह के भाई हो,
आजाद का नाम चमके हरदम,
बस ऐसी कसम करार करो ।

उपजाऊ भारत को भूमे
उपजे हैं लाखों लाल यहां,
तात्या टोपे, मंगल पांडे
नेता सुभाष को याद करो ।

सर्दी, गर्मी, वर्षा सह कर,
जंगल झाड़ी में रह कर,
इस उग्रवाद का,
सारा काम तमाम करो ।

कांस्टबल हवलदार सिंह
६ बटालियन, कै. रि. पु. बल

‘अटल प्रतिज्ञा’

आज जगत तुझको पुकारता,
मातृभूमि की रक्षा के हित,
मानवता के प्रहरी करना,
अपना जीवन सदा समर्पित ।

हो रही एकता छिन्न-भिन्न,
नित जाति-पाति का भेद बढ़ा,
चहु और अशान्ति की बेड़ी में,
जन-जन-जन का पग जकड़ा ।

सह संकट और सुविधा तज कर,
करतब करना सदा महान,
परबस जन का, कातर मन का,
प्रतिपल करना तुम कल्याण ।

शत्रु-दल से लोहा लेना,
राणा प्रताप से तुम सीखो,
मातृ-भूमि हित मरना-मिटना,
वीर भगत सिंह से सीखो ।

त्याग और बलिदान हमेशा,
गहरी चोट पहुंचाता है,

दुश्मन भी सौ बार सोचने को
मजबूर हो जाता है ।

‘सेवा-भक्ति’ की प्रबल शक्ति से,
रिपु को मित्र बना सकते हो,
के. रि. पु. बल की परम्परा से,
औरों को भी अपना सकते हो ।

उग्रवाद और अलगाववाद का,
नाम मिटा सकते हो तुम,
दिल में दृढ़ सकल्प रहे फिर,
भ्रष्टाचार मिटा सकते हो तुम ।

‘अटल प्रतिज्ञा’ के बल प्रहरी,
अरि-मर्दन तुम कर पाओगे,
प्रहरी ‘प्रभात’ की सूझ-बूझ से,
जय, जयघोष सुना पाओगे ।

हंसराज ओझा ‘प्रभात’

उप निरीक्षक (म)

पुलिस उप महानिरीक्षणालय, गुवाहाटी

इंसान

आज तुझे क्या हो गया है मानव ।
मनु ईड़ा की सृष्टि है तू न कोई
दानव ।

क्या हुआ तेरी मानवता को, शालीनता
को, संस्कार को ?

भूलकर मानवीय रिश्ते, तूल देता क्यों
अहंकार को ?

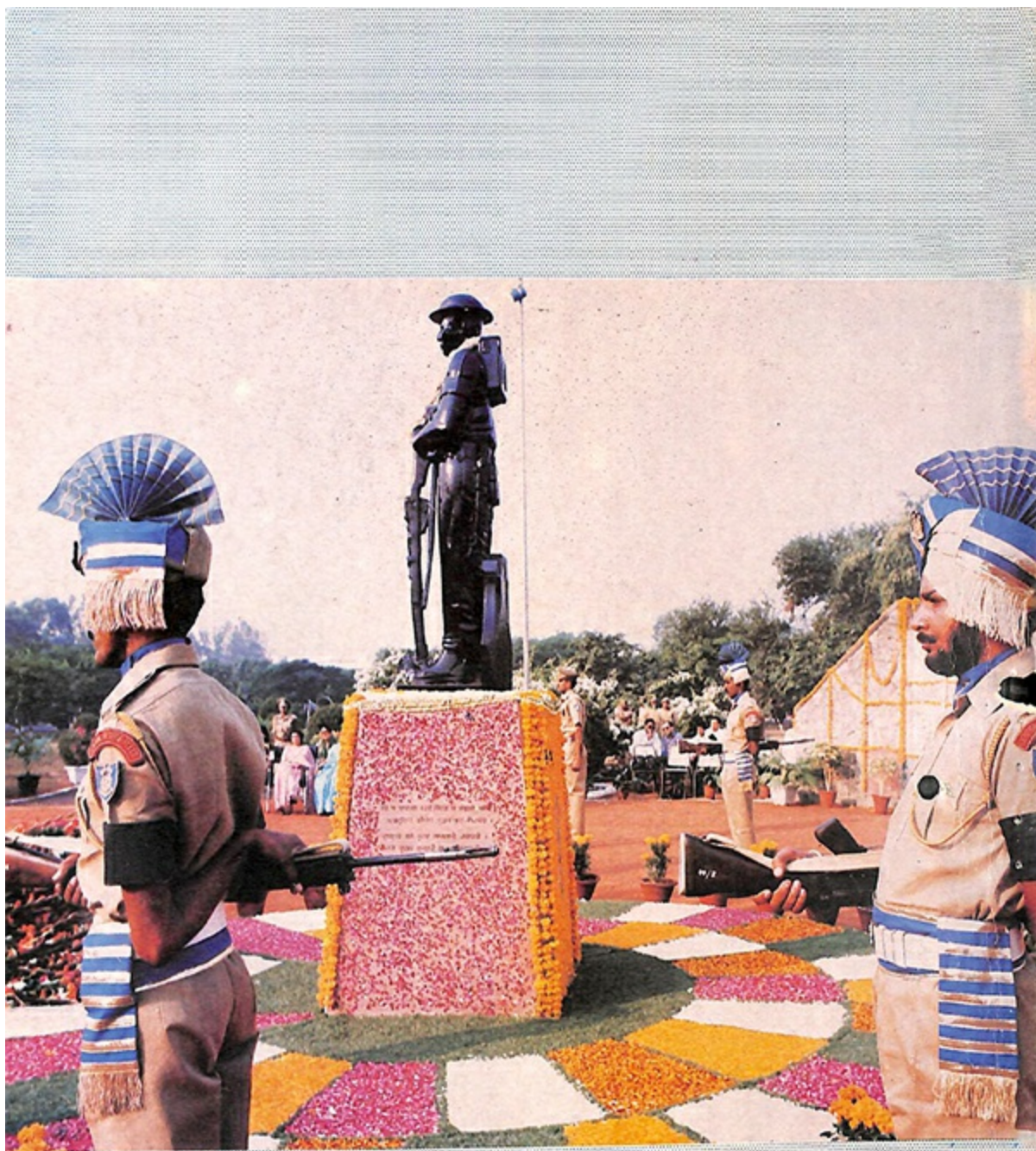
आया था तू कोख से मुठियां बन्द कर,
सोचा था उन्हें खोलकर
नवप्रकाश से जग आलोकित कर देगा ।
पर यह न पता था कि तू

अपने ही लहू में विष घोलेंगा ।
अब भी वक्त है,
आओ निर्माण करें, विश्व का नव ।
आज तुझे क्या हो गया है मानव,
मनु ईड़ा की सृष्टि है तू न कोई दानव ।
कहां गई वो तेरी पवित्र पुष्प. सी
मुस्कान ?
आखों में चमकते भविष्य का समन्दर,
आशाओं का नीला आसमान ?
कहां गई वो तेरी मां की गोद में खोए
रहने की अभिलाषा ?
वो तेरी निष्पाप, निष्कलंक, प्यार उड़ेलती
हुई सत्यनिष्ठ परिभाषा ?
आ इन अंधेरी राहों को सुदीप्त करें अब
आज तुझे क्या हो गया है मानव ।
मनु ईड़ा की सृष्टि है तू न कोई दानव ।

बाघदमन सिंह, स. उ. नि.
कार्यालय पु. उ. म. नि.
गुवाहाटी



Southern Sector team receiving athletic championship trophy from D.G. Shri K.P.S. Gill.



Martyrs remembered on 21st October.

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

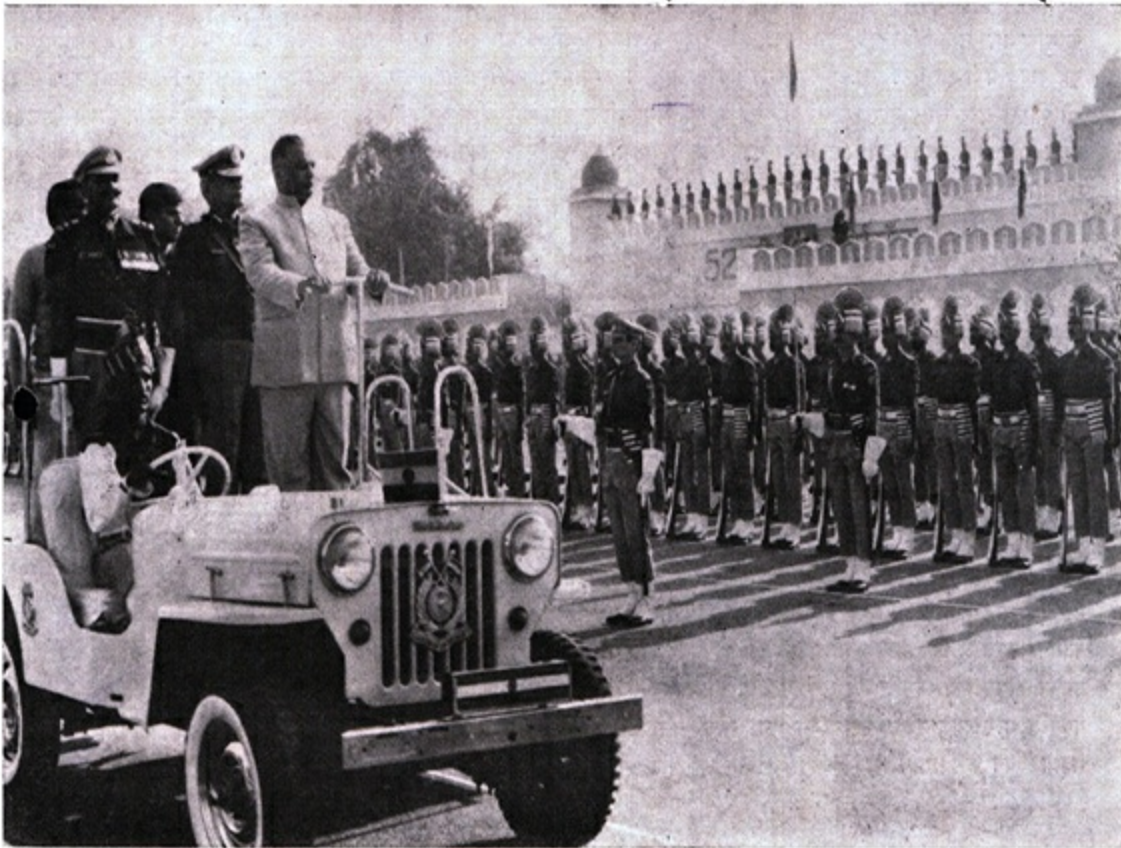
खंड—IV

अंक—VIII

मूल्य—1.95 रुपये

31 दिसम्बर, 1991

10 पौष, शक संवत् 1913



52वीं वार्षिकोत्सव परेड का निरीक्षण करते हुए गृह मंत्री श्री एस० बी० चव्हाण ।

छाया—डी० एन० तिवारी

सम्पादकीय

वर्ष 1991 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए भारी उथलपुथल का वर्ष रहा। इस वर्ष बल का अभूतपूर्व विस्तार हुआ। हमारे परिवार में 20 नई बटालियनें जुड़ी, चार सेक्टरों तथा 6 रेजों का गठन किया गया। इस प्रकार बल के सदस्यों की संख्या डेढ़ लाख को पार कर गई। कुल सेक्टरों की संख्या 23 हो गई है।

क्षमता में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ी है। इस वर्ष हमारे जवानों ने जहां बड़ी-बड़ी कुर्बानियां दीं, वहीं भारी उपलब्धियां भी हासिल कीं। इन सब की संक्षिप्त जानकारी हम पाठकों को इसी अंक में “1991—एक विहंगम दृष्टिपात” लेख में दे रहे हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए एक और गौरव का विषय डा० एस. सुब्रह्मण्यन की महानिदेशक के रूप में नियुक्ति रही। अनुभवी पुलिस अधिकारी एवं शिक्षाविद् पद्मश्री डा० सुब्रह्मण्यन के नेतृत्व में इस वर्ष बल के 52वें वार्षिकोत्सव ने एक नया मोड़ लिया, जब कि पहली बार किसी सुरक्षा बल द्वारा “भारत में आतंकवाद कारण और निवारण” जैसे ज्वलंत विषय पर विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। चूंकि देश में आतंकवाद से निबटने वाले सुरक्षा बलों में के. रि. पु. बल सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण सुरक्षा बल है, अतः इसके द्वारा इस विचार गोष्ठी का संयोजन और भी प्रासंगिक रहा। इस गोष्ठी में देश की लगभग सभी प्रमुख सुरक्षा संस्थाओं के मुखियाओं सहित विख्यात शिक्षाविदों, पत्रकारों एवं राजनीतिज्ञों ने भाग लिया। वक्ताओं में बल के महानिदेशक डा० सुब्रह्मण्यन, गृह राज्य मंत्री श्री एम. एम. जैकब, भारतीय मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता कामरेड हरकिशन सिंह सुरजीत, नेशनल कांफ्रेंस के श्री फारुख अब्दुल्ला, भारतीय जनता पार्टी के श्री जसवंतसिंह तथा कांग्रेस के श्री बसंत साठे शामिल थे। इस गोष्ठी में विषय के सभी पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया गया। अपने पाठकों की जानकारी के लिए इस गोष्ठी की एक रिपोर्ट हम इसी अंक में समायोजित कर रहे हैं।

52वीं वर्षगांठ इस वर्ष 30 नवंबर को हर्षोल्लास एवं परम्परागत ढंग से मनाई गई। मुख्य समारोह नई दिल्ली ग्रुप केन्द्र में आयोजित किया गया, जहां एक भव्य परेड की सलामी केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस. बी. चव्हाण ने ली। बल की उपलब्धियों एवं कारगुजारियों पर गृह मंत्री मुग्ध थे, जहां उन्होंने बल के शहीदों को पूरे देश की ओर से सम्मान के साथ याद किया, वहीं उनके साहसिक कारनामों को मुक्त कंठ से प्रशंसा की। दूरदराज स्थित अपनी यूनिटों के जवानों और अधिकारियों को जानकारी के लिए हम उनका भाषण अविकल रूप से इस अंक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

कुर्बानियां हमारी परम्परा रही है, आतंकवादियों एवं देशद्रोही तत्वों से सीधे भिड़ना हमारी आदत में शुमार है, हम जानते हैं कि बहादुरों की शहादत पर रोना उनका अपमान है, मगर फिर भी कभी-कभी कोई ऐसा हादसा घट जाता है कि दिल

काबू में नहीं रहता। ऐसा ही एक हादसा इसी माहने के दूसरे हफ्ते में घटा। हमारे 10 जवान इम्फाल के निकट नागा विद्रोहियों द्वारा लगाई गई एक घात में शहीद हो गए। इन शहीदों की याद को हृदय में समेटे हम भारी मन से वर्ष 1991 को विदा कर रहे हैं, और कामना करते हैं कि आने वाला वर्ष बल के कार्मिकों के लिए हादसों से मुक्त सफलताओं, उपलब्धियों के नए सोपान पैदा करे, उनका जीवन सुख, समृद्धि एवं सम्मान से परिपूर्ण हो। राह से भटके दिग्भ्रमित युवाओं के लिए नववर्ष के नव प्रभात की पहली किरण सदुबद्धि और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा का स्रोत बन फूटे ताकि वे राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल हों, राष्ट्र की प्रगति की राह में सहायक बन कर सामने आएँ।

(अ० ना० शर्मा)

नववर्ष की शुभकामनाएं

बल के महानिदेशक डा० एस० सुब्रह्मण्यन महोदय ने बल के समस्त अधिकारियों एवं जवानों की नव वर्ष की शुभकामनाएं दी है। अपने शुभकामना संदेश में उन्होंने कहा है--

‘क्रिसमस तथा नव वर्ष -1992 की पूर्व संख्या पर मैं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के समस्त कार्मिकों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आने वाला वर्ष आपके तथा आपके परिवारों के लिए स्वास्थ्य, समृद्धि तथा खुशहाली से परिपूर्ण हो। आइए इस मौके पर हम सब एक बार फिर से स्वयं को समर्पित करें और प्रण लें कि हम के. रि. पु. के बल नाम तथा झंडे को कभी झुकने नहीं देंगे।

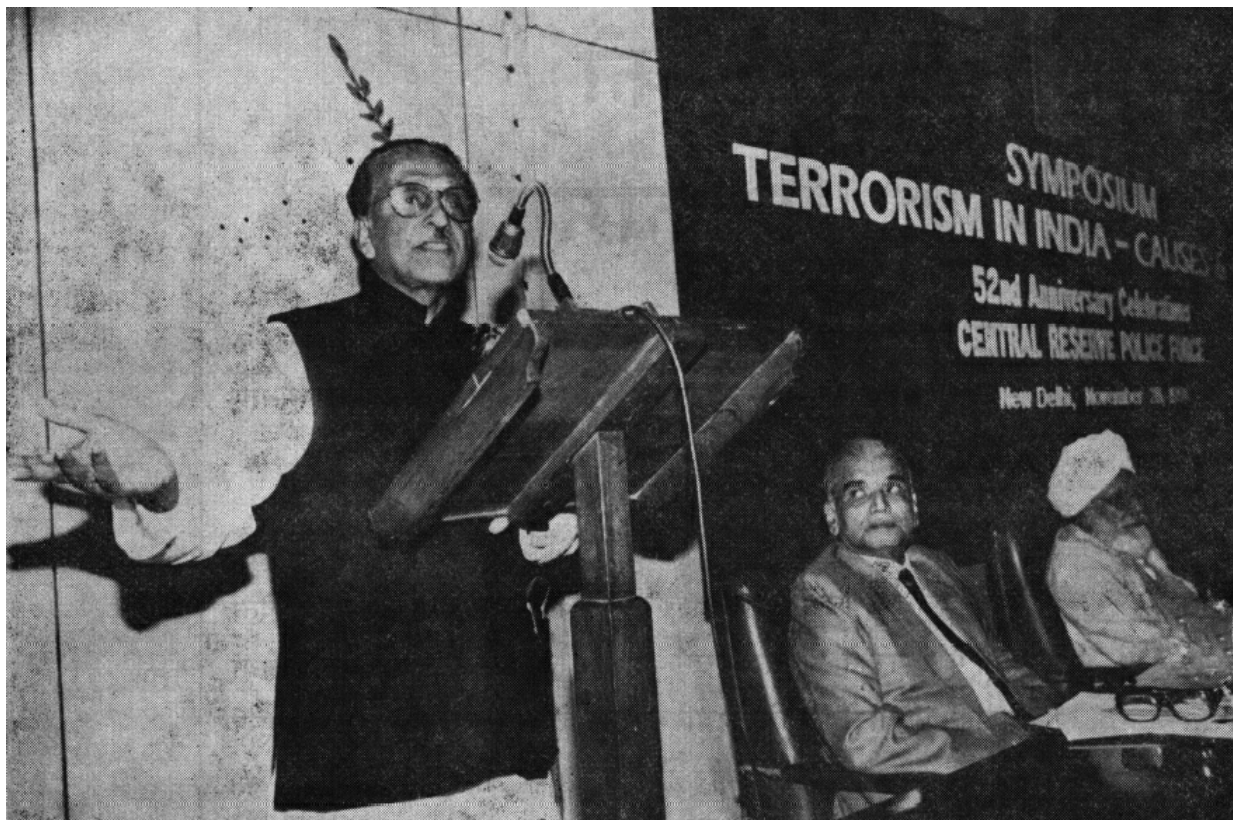
—डा० एस० सुब्रह्मण्यन

विचार गोष्ठी

भारत में आतंकवाद

कारण और निवारण

लेख—अनिल गुप्ता



गोष्ठी में बोलते हुए गृह राज्य मंत्री श्री एम० एम० जैकब

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 52 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित विचार गोष्ठी “भारत में आतंकवाद—कारण और निवारण” विषय पर 28 नवम्बर 1991 को देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों ने अपने विचार प्रकट किए। गोष्ठी में देश की लगभग सभी प्रमुख सुरक्षा संस्थानों के प्रमुख, प्रतिष्ठित शिक्षाशास्त्री, पत्रकार एवं राजनीतिज्ञ उपस्थित थे।

गोष्ठी का संचालन करते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री श्री एम. एम. जैकब ने आतंकवाद के जन्म के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हमें आतंकवाद के अन्त के लिए जनमत को तैयार करना होगा। इसके लिए लोकतांत्रित प्रक्रिया के तरीके को श्री जैकब ने उचित रास्ता माना। उन्होंने कहा कि इसी एक तरीके से हम नागालैंड, मिजोरम आदि राज्यों को राष्ट्र की मुख्य धारा में ला सके हैं।

श्री जैकब ने सभी राजनीतिक दलों से अनुरोध किया कि वे एक साथ बैठ कर देश में व्याप्त आतंकवाद की चुनौती से निबटने के उपायों तथा इससे प्रभावित क्षेत्रों के निवासियों की वाजिब समस्याओं को दूर करने के तरीकों पर विचार करें। श्री जैकब ने सुरक्षा बलों का आह्वान किया कि वे विघटनकारी तत्वों का प्रभावी तरीके से पता लगाने के लिए अपने खुफिया तन्त्र को और अधिक सुदृढ़ करें तथा आतंकवाद से जूझते समय अतिरिक्त सतर्कता बरतें।

देश की एकता और अखंडता के लिए उत्पन्न खतरों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि

देश सीमा पार से पड़ने वाले दबावों के आगे घुटने नहीं टेकेगा, क्योंकि हम इस तरह की किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री हरकिशन सिंह सुरजीत श्री जैकब के इस तथ्य से सहमत थे कि आज जब पंजाब समस्या गम्भीर रूप धारण कर चुकी है कश्मीर भी उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहा है, तो राजनीतिज्ञों के लिए अपनी आत्मा को टटोलना जरूरी है। उन्होंने कहा कि सरकार पंजाब तथा कश्मीर के लोगों की समस्याओं को दूर नहीं कर पायी और प्रारम्भ में इन समस्याओं के प्रति सरकार का रवैया भी ऐसा रहा कि अन्ततः इन समस्याओं ने इतने हिंसक आन्दोलन का रूप ले लिया।

श्री सुरजीत ने कहा कि हमें विगत से सबक लेना होगा तथा भारत के विशाल स्रोतों का सही दिशा में उपयोग करना होगा। उनके अनुसार आतंकवाद के निवारण के लिए राजनीतिक हितों के ऊपर देश हित को रखना होगा।

देश में उभर रही स्थिति के लिए राजनीतिज्ञों को जिम्मेदार ठहराते हुए भारतीय जनता पार्टी के श्री जसवंत सिंह का कहना था कि राजनीतिक नेता अपने आप में स्वयं स्पष्ट नहीं हैं, अतः पिछले कई वर्षों से नीतियों का प्रतिपादन अपने आप में एक समस्या बन गया है। उनका कहना था कि राजनीतिज्ञों को अब अपने कार्यों एवं नीतियों की जिम्मेदारी स्वयं वहन करनी चाहिए और समस्या से निबटने के अपने तरीके को और अधिक मानवीय बनाना चाहिए।

प्रख्यात पत्रकार इन्दर मल्होत्रा का कहना था कि आतंकवादियों और देशद्रोही तत्वों तक यह बात स्पष्ट रूप से पहुंचनी चाहिए कि सरकार दृढ़ रूप से समस्या के समाधान के लिए कटिबद्ध है, केवल उसी के बाद किसी राजनीतिक वार्ता की पहल की जा सकती है। अपनी बात उन्होंने यह कहते हुए समाप्त की कि गर्भ निरोधक उपाय, गर्भपात से हमेशा बेहतर होते हैं, राजनीतिक आकाओं को शीघ्र ही इस बात को समझ लेना चाहिए।

डा० फारूख अब्दुल्ला का कहना था कि आजादी के इतने सालों में हमने बहुत कुछ उपलब्धियां हासिल की, मगर यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम ऐसे इन्सान पैदा नहीं कर पाए, जिनके दिल में देश के लिए मुहब्बत हो। उनका कहना था कि यदि हम में दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो हम आतंकवाद से निबट सकते हैं। आतंकवाद के निवारण के लिए हमें मिल कर काम करना होगा। आतंकवाद का मूल कारण उन्होंने जनता और सरकार के बीच पैदा हुए अविश्वास को माना। अतः उनका मानना था कि यदि हमें आतंकवाद को मिटाना है, तो पहले इस अविश्वास को खत्म कर, आपसी विश्वास, सहयोग एवं भाईचारे की परम्परा की शुरुआत करनी होगी।

कांग्रेस (इ) के नेता श्री बंसत साठे सबसे अन्त में बोले। उन्होंने जोर दे कर कहा कि आज राजनीतिज्ञ मूलभूत सवालों को उठाने तथा समस्या की जड़ में जाने से घबराने लगे हैं। उन्होंने सरकार से अपेक्षा की कि वह समस्या को जड़ से पकड़ेगी और कहा कि इसके लिए हर स्तर पर राजनीतिक कुशलता की आवश्यकता होगी।

के० रि० पु० बल के महानिदेशक डा० एस. सुबह्मण्यन ने इस समय देश में प्रमुख रूप से आतंकवाद से जूझ रहे प्रमुख बल के० रि० पु० बल के प्रमुख के रूप में अपनी बात श्रोताओं के सम्मुख रखी।

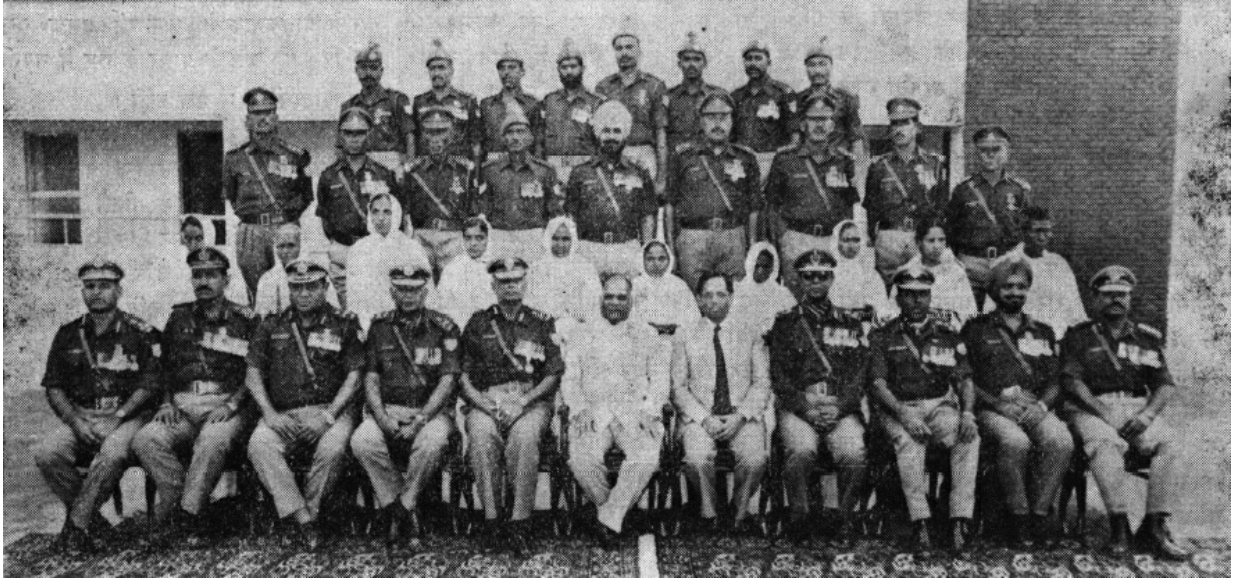
सभी वक्ता इस तथ्य पर सहमत थे कि यदि हमें आतंकवाद को समाप्त करना है, तो हमें अपने राजनीतिक हितों से उपर उठ कर स्वयं को राष्ट्र हित में समर्पित करना होगा और अपनी छवि को एक धर्मनिरपेक्ष, जाति निरपेक्ष छवि के रूप में स्थापित करना होगा। साथ ही एक दूसरे वर्ग के बीच पैदा हो गई अविश्वास की खाई को भरना भी अत्यावश्यक है, अपने अन्दर से आशंकाओं की संभावनाओं को समाप्त करना होगा तथा दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति से काम करना होगा।

संगोष्ठी में राजधानी के चुने हुए श्रोताओं के बीच सर्व श्री सुनील दत्त, आनंद शर्मा, सैफुद्दीन सोज एवं खुशवंत सिंह भी शामिल थे।



के०रि०पु० बल का 52वां वार्षिकोत्सव

गृह मंत्री ने ली परेड की सलामी



पदक विजेताओं के साथ गृह मंत्री एवं बल के वरिष्ठ अधिकारी

संवाददाता सम्मेलन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 52वीं वर्षगांठ के सिलसिले में महानिदेशक डा० एस० सुब्रह्मण्यन ने 29 नवम्बर को एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया। नई दिल्ली स्थिति 86 बटालियन स्थल पर आयोजित किए गए इस संवाददाता सम्मेलन में देश के लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रों एवं संवाद एजेंसियों के संवाददाता उपस्थित थे। महानिदेशक महोदय ने पत्रकारों को विगत, वर्तमान एवं भविष्य की योजनाओं के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार एक ऐसी फोर्स के गठन पर विचार कर रही हैं, जिसका उपयोग साम्प्रदायिक दंगों के समय पीड़ित मानवता को राहत पहुंचाने तथा दंगों को काबू में लाने के लिए किया जा सके। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि रेपिड एक्शन फोर्स के नाम से जानी जाने वाली इस फोर्स के सदस्यों को इस प्रकार की ट्रेनिंग दी जाएगी कि वे दंगों के समय तत्काल प्रभावी होकर दंगाग्रस्त क्षेत्रों में शांति का संचार कर सकें।

महानिदेशक महोदय ने पत्रकारों को बल के जवानों द्वारा पूरे वर्ष में किए गए कार्यकलापों की जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष आतंकवादियों के साथ हुई 1319 मुठभेड़ों में 2272 आतंकवादी गिरफ्तार किए गए, जबकि 602 मारे गए और 32 गम्भीर रूप से घायल हुए। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 1304 घातक हथियार तथा 30 हजार कारतूस बरामद किए। मगर इस सबके एवज में बल के 71 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि 394 गंभीर

रूप से घायल हुए।

महानिदेशक महोदय ने पत्रकारों को पंजाब, असम और जम्मू कश्मीर के अलग-अलग आंकड़े भी उपलब्ध कराये।

महानिदेशक महोदय के इस संवाददाता सम्मेलन की रिपोर्ट देश के लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रों, दूरदर्शन तथा रेडियो पर प्रसारित की गई। 29 तारीख की शाम को ही महानिदेशक महोदय ने दूरदर्शन पर अपने जवानों एवं देशवासियों के नाम एक सन्देश भी प्रसारित किया।

वार्षिक उत्सव

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस० वी० चव्हाण ने कहा है कि पिछले कई वर्षों से के० रि० पु० बल की भूमिका और जिम्मेदारियाँ और बढ़ गई हैं। आज यह एक बहुआयामी बल है, जो तत्काल और दक्षतापूर्वक अपनी भूमिकाएं बदलने में पूरी तरह समर्थ है। इस प्रकार यह देश के केन्द्रीय पुलिस संगठनों में एक जागरुक अंग बन गया है।



गृहमंत्री बेस अस्पताल में एक रोगी की बात सुनते हुए।

गृह मंत्री 30 नवम्बर, 1991 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 52 वीं वर्षगांठ के अवसर पर ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में आयोजित एक भव्य परेड को सम्बोधित करते हुए बोल रहे थे। गृह मंत्री ने बल की महिला बटालियन की एक टुकड़ी सहित बल के पांच सेक्टरों की 6 टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक परेड का निरीक्षण किया एवं

सलामी लो।

गृह मंत्री ने इस मौके पर आगे बोलते हुए कहा कि के० रि० पु० बल में सभी जातियों, मतों, सम्प्रदायों और धर्मों के पुरुष और महिलाओं का प्रतिनिधित्व है। बल का धर्म निरपेक्ष और राष्ट्रीय स्वरूप हम सभी के लिए बहुत ही संतोष और गर्व की बात है, उन्होंने कहा कि के. रि. पु. बल के लिए यह सबसे बड़ा सम्मान है कि आज देश के अलग-अलग भागों में इसकी तैनाती की लगातार माँग बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद अनेक अवसरों पर जब भी देश की एकता और अखण्डता को विघटनकारी ताकतों ने तोड़ने तथा देश की सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा पैदा करने की कोशिश की तो के० रि० पु० बल ने समय पर कार्यवाई करके प्रभावी ढंग से इन खतरों से मुकाबला किया। उन्होंने कहा कि सरकार उन मजबूरियों को अच्छी तरह जानती है, जिनमें के.रि.पु.बल के जवानों को कार्य करना पड़ता है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार की कोशिश जारी रहेगी।

अपने पाठकों की जानकारी के लिए हम यहां गृह मंत्री द्वारा दिए गए भाषण को अविकल रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं—

महानिदेशक, के.रि.पु.बल के अधिकारीगण और जवान, विशिष्ट अतिथि, भाइयों और बहनों।

के.रि.पु.बल की 52 वीं वार्षिकोत्सव परेड पर आज आपके बीच होने पर मुझे असीम प्रसन्नता है। आपकी चुस्त पोशाक और शानदार परेड के.रि.पु.बल की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है। अभी-अभी आपने जो सर्वोत्तम कार्य का प्रदर्शन किया है उसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।



परेड कमांडर श्री के० सी० शर्मा

के. रि. पु. बल की स्थापना 1939 में मात्र एक बटालियन से हुई थी। आज के. रि. पु. बल की नफरी 1.5 लाख से ऊपर है। पूरे एशिया में फोर्स के अन्दर प्रथम महिला बटालियन होने का श्रेय भी इसे प्राप्त है। स्वतन्त्रता के बाद अनेक अवसरों पर जब देश की एकता और अखण्डता को विघटनकारी ताकतों ने तोड़ने तथा देश की सुरक्षा को गम्भीर खतरा पैदा करने की कोशिश की तो के. रि. पु. बल ने समय पर कार्रवाई करके प्रभावी ढंग से इन खतरों का मुकाबला किया।

सेवा और बलिदान के क्षेत्र में भी के.रि.पु.बल सबसे अग्रणी रहा है। के.रि.पु. बल ही का जिसे 21 अक्टूबर, 1959 को हॉट स्पिंग में चीनियों के प्रथम क्रूर प्रहार को सहना पड़ा, जब उसके एक गश्ती दल पर घात लगाकर अनेक चीनियों ने हमला किया था। उक्त लड़ाई में के.रि.पु.बल के 10 जवानों को अपने जीवन का बलिदान करना पड़ा। इन बहादुर जवानों के बलिदान की गाथा भारतीय पुलिस इतिहास में

स्वर्ण अक्षरों में लिखी गई है।

चाहे पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश का नक्सलाइट आन्दोलन हो या उत्तर-पूर्व का विद्रोह, असम में विदेशियों के मामले का आन्दोलन, दार्जिलिंग में जी.एन.एल.एफ. का आन्दोलन हो या पंजाब और जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का मामला हो, के.रि.पु.बल ने हमें हर तरह से गौरवान्वित किया है। यहां तक कि देश से बाहर में भी इस फोर्स ने “भारतीय शांति सुरक्षा बल” को कारगर सहायता पहुंचायी थी। आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियों का भी के. रि. पु. बल ने अपनी व्यावसायिक क्षमता और दक्षता के साथ मुकाबला किया है।

हमारे राष्ट्रीय जीवन में बार-बार साम्प्रदायिक दंगे होना एक आम बात बन गई है। देश के अलग-अलग भागों में साम्प्रदायिकता की आग को ठंडा करने में के.रि.पु.बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साम्प्रदायिक दंगों को दबाने में इस फोर्स के निष्पक्ष और धर्म-निरपेक्ष स्वरूप की वजह से इसे जनता का विश्वास प्राप्त है और इसकी हमेशा मांग की जाती रही है।

कई वर्षों से बल की जिम्मेदारियां और बढ़ गई हैं। आज यह एक बहु-आयामी बल है जो तत्काल और दक्षता पूर्वक अपनी भूमिकाएं बदलने में पूरी तरह समर्थ है। इस प्रकार यह देश के केन्द्रीय पुलिस संगठनों में एक जागरुक अंग बन गया है।

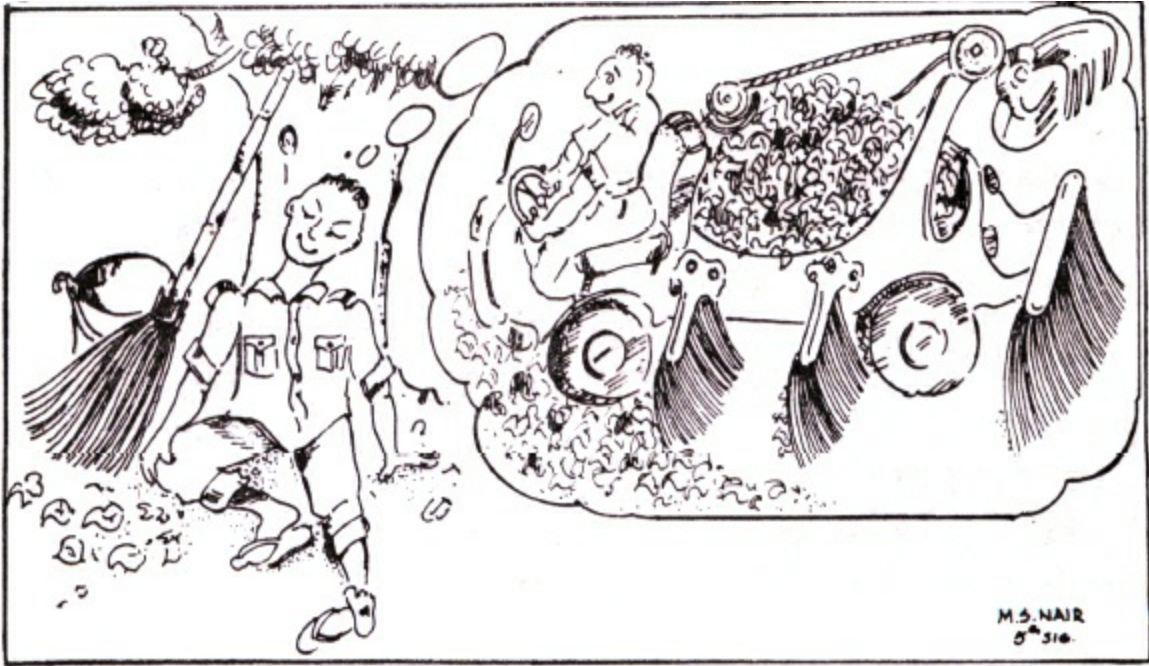
के. रि. पु. बल में सभी जातियों, मतों, सम्प्रदायों और धर्मों के पुरुष और महिलाओं का प्रतिनिधित्व है। बल का धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रीय स्वरूप ही हम सभी के लिए बहुत ही संतोष और गर्व की बात है।

अनेक परेशानियों के बावजूद भी के०रि०पु० बल ने आंतरिक सुरक्षा के लिए पैदा हुए खतरों का सफलता पूर्वक सामना किया है, और इस कार्रवाई में उन्हें अनेक बलिदान भी देने पड़े हैं। वर्ष 1991 में ही के०रि० पु० बल को कार्रवाई में अपने 77 बहादुर अधिकारियों और कार्मिकों को खोना पड़ा और साथ ही 408 गम्भीर रूप से जख्मी हुए। वर्ष 1991 में के० रि० पु० बल ने अपने पराक्रम व वीरता के लिए 31 शौर्य पदक अर्जित किए। के० रि० पु० बल के लिए यह सबसे बड़ा सम्मान है कि आज देश के अलग-अलग भागों से इसकी तैनाती की लगातार मांग बढ़ती जा रही है।

इस अवसर पर मैं बल के उन सभी सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा जिन्होंने कर्तव्य की वेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए। इस अवसर पर मैं संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ।

मुझे आपकी उन मजबूरियों की अच्छी तरह जानकारी है जिनमें आपको कार्य करना पड़ रहा है। लगातार बढ़ती हुई मांग के कारण बल पर इतना अधिक दबाव पड़ गया है कि बल के कार्मिकों को आराम करने, स्वास्थ्य लाभ व प्रशिक्षण के लिए समय भी नहीं मिल पाता है। बल के लगातार संचालन से तनाव व दबाव जैसी समस्याएं खड़ी हो गई हैं। आप में से ज्यादातर लोग बहुत समय तक अपने परिवारों से दूर रहते हैं। आवासीय सुविधाएं बहुत ही कम हैं, अतः ज्यादातर परिवारों को अलग रहना पड़ता है। इन समस्याओं को दूर करने में हमारी सरकार की कोशिश

रहेगी।



वास्तव में, आगे आने वाले दिन आपके लिए बहुत ही कठिन हैं और आपको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसमें आपके कौशल की परख होगी। मुझे विश्वास है कि आप “सेवा और भक्ति” से ओत प्रोत सच्ची भावना से इन चुनौतियों का सामना करने में सफल होंगे।

मैं के०रि०पु० बल के लिए सर्वोत्तम कामनाएं तथा दशकों तक इसी समर्पण भावना से राष्ट्र की सेवा करने की आप से अपेक्षा करता हूँ।

जय हिन्द।

इस मौके पर गृह मंत्री ने नौ कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक एवं 22 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए। 6 अधिकारियों को सराहनीय सेवा के पुलिस पदक भी प्रदान किए गए।

11 कार्मिकों को ये पदक मरणोपरांत दिए गए।

इस मौके पर पहली बार शुरू की गई ऑपरेशनल बटालियन ट्राफियां भी प्रदान की गईं। कश्मीर में कार्यरत 50 बटालियन को पहली व 77 बटालियन को दूसरे स्थान की ट्राफी के साथ-साथ पांच-पांच हजार रुपये का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इसी प्रकार पंजाब के लिए 66 बटालियन को पहले स्थान की तथा 73 बटालियन को दूसरे स्थान की ट्राफी के साथ-साथ पांच-पांच हजार रुपये का नकद पुरस्कार भी दिया गया।

गांधी नगर ग्रुप केन्द्र को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र तथा 86 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी दी गई।

बल के महानिदेशक डा० एस. सुब्रह्मण्यन ने मुख्य आंतोथे का स्वागत करते हुए बाद में उन्हें ग्रुप केन्द्र अस्पताल में भर्ती उन जवानों से भी मिलवाया, जोकि आतंकवादियों का सामना करते हुए घायल हुए थे। गृह मन्त्री ने इन जवानों को सांत्वना दी और उनकी बात सुनी।

परेड का नेतृत्व कमांडेंट के. सी. शर्मा ने किया।

1991 एक विहंगम दृष्टिपात

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का इतिहास, देश की एकता और अखंडता एवं देश में शांति व्यवस्था को बनाये रखने के लिए दिए गए बलिदानों, समर्पण एवं शौर्य की एक गाथा है। आज के० रि० पु० बल देश में एक जाना पहचाना नाम है। के० रि० पु० बल ने पूरे देश में अपनी उपस्थिति का अहसास शिद्धत के साथ दर्ज कराया है। चाहे बाहरी आक्रमण हों, राष्ट्रद्रोही गतिविधियां हों, साम्प्रदायिक दंगे हों या प्रकृतिक विभीषिकाओं से त्रस्त मानवता हो, हर जगह के० रि० पु० बल शांति दूत बन कर पहुंचा है।

वर्तमान

इस वर्ष 15 नवम्बर तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी 1319 मुठभेड़ों में हमारे जवानों ने 2272 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, जबकि इन मुठभेड़ों में 602 आतंकवादी मारे गए एवं 32 गंभीर रूप से घायल हुए। इन आतंकवादियों में कई आतंकवादी घोषित “ए” श्रेणी के दुर्दान्त आतंकवादी थे। बल के जवानों ने इन आतंकवादियों से 1340 घातक हथियार तथा 30 हजार से अधिक सजीव कारतूस भी बरामद किए। इन मुठभेड़ों में बल के 71 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए जबकि 394 गंभीर रूप से घायल हुए।

इस वर्ष हमारे नौ कार्मिकों को शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक एवं 22 को शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए, हमारे कार्य एवं योग्यता का यह सब से बड़ा प्रमाण है।

इस वर्ष की मुख्य उपलब्धि के. रि. पु. बल परिवार में 20 नई बटालियनों का जुड़ना रहा। इस के साथ ही बल के सदस्यों की संख्या डेढ़ लाख को पार कर गई। इस वर्ष की एक और उपलब्धि चार सेक्टरों तथा छः रेंजों का गठन रहा। इस प्रकार बल में अब 11 सेक्टर तथा 23 रेंजें हो गई हैं। इनमें परिचालन महानिरीक्षक तथा उप महानिरीक्षक भी शामिल हैं।

आधुनिकीकरण के. रि. पु. बल में सतत चलने वाली एक प्रक्रिया है। कम्प्यूटर पर आधारित स्वचालित मैसेज स्वीचिंग सिस्टम, जो कि आटोमैक्स के नाम से जाना जाता है, के. रि. पु. बल महानिदेशालय में कार्य कर रहा है। इससे संचार में होने वाली

मानव त्राटियों एवं विलंब आदि को रोका जा सका है।

भविष्य की योजनाएं

के.रि.पु. बल की भविष्य की योजनाओं में और अधिक सिगनल बटालियनों, महिला बटालियनों, ग्रुप केन्द्रों सहित एक रेपिड एक्शन फोर्स के गठन का प्रस्ताव भी शामिल है। इस के अतिरिक्त परिचालन बटालियनों को और अधिक आधुनिक बनाए जाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

माह नवंबर, 1991 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 17 मामलों में कुल 5,95,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रति मामला 10,000 रुपये की केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के पांच मामलों में कुल 75,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

के० रि० पु० बल के बारे में राष्ट्रीय नेताओं के विचार

“जहां कहीं भी सुरक्षा के लिए खतरा पैदा होता है, वहीं के.रि.पु.बल स्थायित्व का अहसास लेकर उदित होता है”

—सरदार वल्लभ भाई पटेल

“केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशिष्टता, इसका उच्च श्रेणी का अनुशासन, व्यावसायिक योग्यता तथा समाज के प्रति सेवा की उसकी परंपरा है।”

श्री नीलम संजीव रेड्डी

“केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भारत का अपनी तरह का सबसे पुराना सुरक्षा बल है, जिसका उपयोग हर तरह से हर जगह किया जा रहा है। मुख्यतः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जिम्मे इस समय तीन तरह के कार्य हैं—आतंकवाद तथा अलगाववादी शक्तियों से निबटना राज्यों में शांति और व व्यवस्था बनाये रखने में मदद करना। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में तीनों ही कार्य बड़ी जिम्मेदारी के साथ कर रहा है।”

—श्री आर वैकटरामन

भारत के राष्ट्रपति

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक ऐसी फोर्स की मूलभूत जरूरत को पूरा करती है, जिसमें कि विभिन्न धर्मों, विभिन्न राज्यों एवम् विभिन्न भाषाओं में बात करने वाले लोग एक साथ काम करते हों। हमने देखा है कि जहां कहीं भी सी. आर. पी. गई है, लोगों ने इसमें विश्वास व्यक्त किया है। इन्होंने भी अत्यधिक साहस और समर्पण के साथ काम किया है।

—स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी

“के० रि० पु० बल ने देश सेवा में देश के हर हिस्से में अपना रक्त बहाया है। के०

रि० पु० बल ने जिन चुनौतियों का सामना किया और जो बलिदान दिए, उन्होंने इसे एक पहचान दी है। आज के० रि० पु० बल हमारी एकता और अखंडता का प्रतीक बन गया है। के० रि० पु० बल ने एक बार नहीं बार-बार जनता का विश्वास जीता है। हमें विश्वास है कि के० रि० पु० बल समय की कसौटी पर खरा उतरेगा और देश की अखंडता, गरिमा और सम्मान की रक्षा के लिए सतत् प्रयत्नशील रहेगा।”

—श्री वी. पी. सिंह

“देश के० रि० पु० बल के शहीदों को उनके द्वारा देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए दिए गए बलिदानों के कारण हमेशा गर्व के साथ याद करेगा। देश का भविष्य केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के हाथों सुरक्षित है।”

—श्री चन्द्रशेखर

माह नवम्बर, 1991 में मृत बल के कार्मिक

माह नवम्बर, 1991 में के० रि० पु० बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई। सी० आर० पी० एफ० समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

फार्मैसिस्ट एस. एच. सिद्दीकी (गु.के. रामपुर), कां० रविंद्र सिंह (77 बटा०) कां० रामचंद्र (73 बटा०), है० कां० चाँद राम (116 बटा०), लां. ना०/डा० सी० एन० आर० पिल्लई (54 बटा०), कां० जिवन सैकिया (6 बटा.), कां० गिरीश चंद पंत (42 बटा०), है० कां० मिटू लाल (109 बटा०) कां० कमला सिंह यादव (9 बटा०), कां० करनैल सिंह (19 बटा०), कां० ए० सुब्बैया (19 बटा०), कां० रतियानामानी (19 बटा०), कां० आर० मोहनन नायर (19 बटा०), रंगरूट रंजीत मंडल (120 बटा.), नायक हरीकरन सिंह (10 बटा०), है० कां० पाल सिंह (81 बटा०), है० कां० प्रेम सिंह टोपोवाल (7 बटा०), लां० नायक सोनी ओरन (19 बटा०), इंस्पेक्टर प्रेमपाल सिंह (68 बटा.), नायक राम गरीब (68 बटा०), कमांडेंट एस० सी० अरोडा (उ० म० नि० कार्यालय गांधीनगर), लां० नायक श्री किशन (54 बटा.), है.कां. मुरली धर मंडल (8 बटा.), कां० सुभाष यादव (8 बटा०), लां० नायक सिलास कुजुर (8 बटा०), है. कां० रामरूप दूबे (14 बटा०), कां०/डा० अजैब सिंह (95 बटा०), रंगरूट निरंजन बिष्ट (124 बटा०), रंगरूट/कां० ब्रिजेश कुमार शर्मा (122 बटा.), नायक श्रवण सिंह (126 बटा.), लां. नायक मथुरा लाल (13 बटा.), कां. मोची गणेश प्रसाद (88 बटा.), उ.नि.रे.आ. एम. एस. रावत (2 सिग.), कां. मनोज कुमार सिंह (80 बटा.), कां. रामदेव झा (गु.के. भुवनेश्वर), लां. नायक गुलाम मुहम्मद (108 बटा.), इंस्पेक्टर संतोख सिंह (13 बटा.), नायक आनंद सिंह (67 बटा.), तथा ला. नायक कृष्ण कुमार (12 बटा.)।

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह सितम्बर, 1991 में कां. सूबेदार सिंह की भी मृत्यु हुई।

हम पहरेदार अमन के

पैगाम प्रेम का देते—
गीता, अजान गुरुबानी,
अपनी पूजा ही मानवता,
हम हैं बस हिन्दुस्तानी,

गुलशन है वतन हमारा—
हम पहरेदार अमन के ।
गिरिजाघर, मंदिर, मस्जिद,
सब पावन, माटी चंदन,

अब कोई मांग न उजड़े—
हम सावधान हैं हर क्षण,

फिर अर्थी उठे न कोई—
लिपटे जीवन न कफन से ।

गुलशन है वतन हमारा—
हम पहरेदार अमन के ।

मन में निश्चय फौलादी—
अपनी गति है तूफानी,

नफरता का मिटे अँधेरा—
हम देंगे हर कुरबानी,

सद्भाव-स्नेह का सूरज—
घर घर को रोशन कर दे।

गुलशन है वतन हमारा—
हम पहरेदार अमन के ।

इस गीत की रचना प्रस्तावित रॉपेड एक्शन फोर्स के शीर्षक गीत के रूप में बल के वितीय सलाहकार श्री गोपाल चतुर्वेदी ने की है।

नव वर्ष अभिवादन

नव वर्ष उतावला आने को
अपना संदर्भ बनाने को
जन-जन का मन हर्षाने को
अपना साम्राज्य बनाने को ।

अस्ताचल पर चढ़ गया सूर्य
शान्त पड़ गया तेज शौर्य
मिट्टी की काया छोड़ यहीं
लौटेगा फिर वो कभी नहीं ।

नव वर्ष हमारा पाहुन है
खुशहाली का नव आंगन है
गंगा यमुना सा पावन है
मन मोहक नन्दन कानन है ।

आओ, सब मिल गुण गान करें
प्रेमाश्रुओं, दया का दान करें
स्वागत का नव आयाम करें
कोई अपूर्व सम्मान करें ।

वर्षों की लम्बी आयु में
हर रोज बीते खुशहाली में
जन-जन के मन में द्वीप जलें
हर मौके पर खुशियां बरसे ।

ना फूल कभी वो मुझाये
जो केवल काँटों पर सोये
कोमल कलियां ना शर्मियें
चाहे भौंरे ही ललचायें ।

हे नव वर्ष तुम्हें प्रणाम
रखना गरिमा का तुम प्रमाण

हम सब तेरे ही साये में
शीतल विश्राम बनाएंगे ।
भाई-भाई में प्यार रहे
माता की गरिमा अमर रहे
कलह द्वेष का लेश नहीं
ऐसे गृह का निर्माण करें ।
सब जाति धर्म का आदर हो
कोई ऊँचा न नीचा हो
भारत की सीमा शान्त रहे
बस यही हमारी आशा है
एक यही अभिलाषा है ।

—उ०नि० (एम०) के० पी० सिंह
ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर



14 नवम्बर, 1991 को बालदिवस के अवसर पर आकर्षक नृत्य प्रस्तुत करते के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल के बच्चे।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा । सम्पादक : अनिल गुप्ता । वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना । मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक
के० रि० पु० बल, ब्लॉक I, सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, सोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा ।
मुद्रक : सी० आर० पी० एफ० प्रेस, झड़ोदा कलाँ, नई दिल्ली-110072 ।